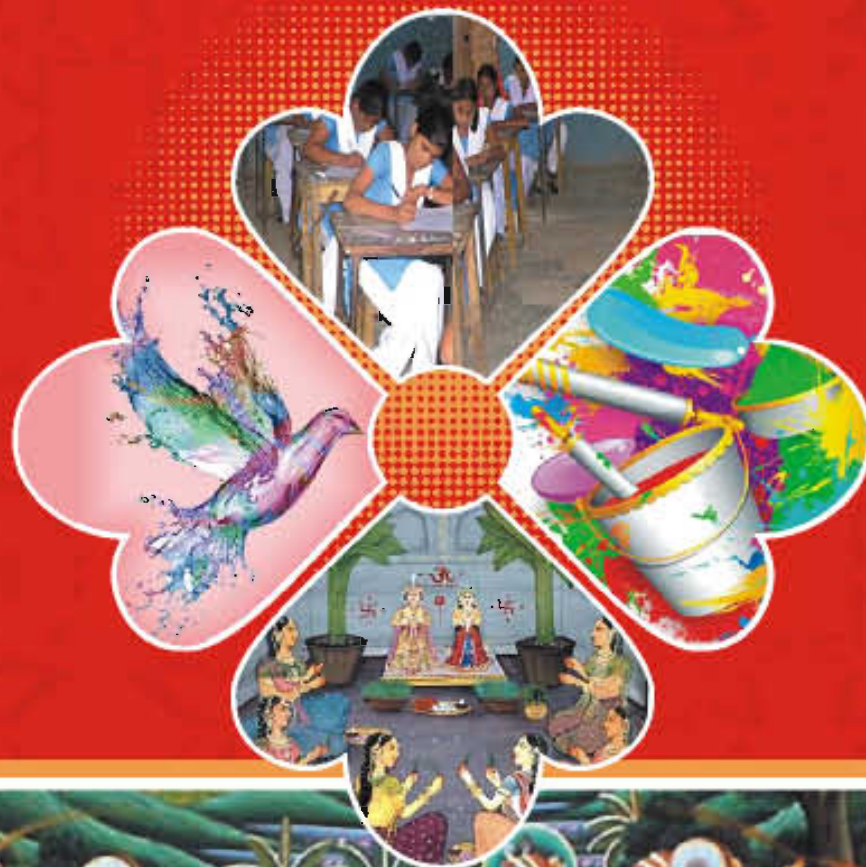




शिवाविरा

मासिक
पत्रिका

वर्ष : 54 | अंक : 9 | मार्च, 2014 | मूल्य : ₹10



शिविरा, मार्च-2014 चित्र समाचार

जयपुर



पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान, जयपुर की ओर से प्रकाशित पुस्तिका 'सीनियर सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा तैयारी : टिप्स फॉर टॉप मार्क्स' का विमोचन (बाएं) माननीय शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण सराफ ने किया। दाएं- एक बालिका को पुस्तिका भेंट करते माननीय शिक्षा मंत्री महोदय।

जयपुर



पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान, जयपुर के तत्वावधान में प्रकाशित 'सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा तैयारी : टिप्स फॉर टॉप मार्क्स' पुस्तिका का विमोचन शिक्षा निदेशक श्री विकास एस. भाले ने किया। विमोचन के उपरान्त बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए निदेशक महोदय।

टोंक



राजकीय माध्यमिक विद्यालय, हाड़ीकलां में केरियर-डे के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विचार व्यक्त करती एक बालिका।

मिरोही



राजकीय उ.मा. विद्यालय, शिवगंज में आयोजित रासेयो विशेष शिविर के अवसर पर चेतनारैली निकालते रासेयो स्वयंसेवक।



शिविरा पत्रिका

मासिक

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते - श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 54

अंक : 9

फाल्गुन-चैत्र २०७०

मार्च, 2014

इस अंक में

प्रधान सम्पादक
विकास एस. भाले



वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत



सहायक
सांग सिंह
मुकेश व्यास
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय है।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
-वरिष्ठ संपादक

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- व्यक्तित्व का आभूषण होती है शिक्षा 5
- आलेख 6
- भाषा शिक्षण की दूसरी परम्परा डॉ. राम निवास 6
- सृजनात्मकता एवं अभिभावक डॉ. जमनालाल बायती 9
- उन्नति की आधारशिला-चरित्र निर्माण जितेन्द्र सनाढ्य 11
- राष्ट्रीय शिक्षा के बारे में अनुचिन्तन कैप्टन सत्यनारायण पंवार 12
- महिला जागृति एवं वास्तविक स्थिति सुभाष चन्द्र कस्यौ 13
- कैसे करें समय-प्रबंधन मदन लाल पुरोहित 14
- महिलाओं की जागरूकता ही आज की अनिवार्यता : जितेन्द्र कुमार जैन 16
- व्यक्तित्व व क्षमताओं की धनी भारतीय महिलाएँ : रामगोपाल 'राही' 17
- इतिहास लेखन के शिखर डॉ. एस.एल. नागौरी डॉ. दिनेश विजयवर्गीय 19
- 'घरती घोंरां री' के रचयिता की जीवनाधारित सृजन यात्रा : डॉ. उषा किरण सोनी 20
- महिला शिक्षा की आवश्यकता रामचन्द्र स्वामी 23
- मुझे खुश रखोगे तो तुम खुश रहोगे उज्ज्वल पाटनी 30
- अहम् है शारीरिक शिक्षक होना यासीन खां चौहान 31
- संघर्ष से उत्कर्ष की राह पर बढ़ते नारी कदम सम्पत लाल शर्मा 'सागर' 32
- नैतिक शिक्षा : आज की आवश्यकता किशनलाल प्रजापत 34
- बच्चों में प्यार एवं सुधार का दृष्टिकोण वृद्धिचन्द गोठवाल 35
- जीवन को समरस बनाए वह शिक्षा गायत्री शर्मा 36
- कहीं खो न जाएं बचपन डॉ. नमामी शंकर आचार्य 37

- नवीन चेतना के स्रोत : शिक्षा के सरोकार जगदीश चन्द्र शर्मा 38
- जल अनमोल है-जल ही जीवन है शिवनाम सिंह 43
- प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम से अपेक्षाएँ ओमप्रकाश सिंगाठिया 44
- हम्परी सांस्कृतिक धरोहर 40
- कला एवं वीरता का प्रतीक चूरू जिला डॉ. राधाकिशन सोनी 40
- स्तम्भ 24
- जज्बे को सलाम 25
- आदेश-परिपत्र 29
- शिविरा पंचांग 45
- शाला प्रांगण से 48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 15
- इस माह का गीत 46-47
- घरती घोंरां री कन्हैया लाल सेठिया 46-47
- पुस्तक समीक्षा 46-47
- भूत : भरत ओला समीक्षक : चेतन स्वामी
- सैणां हंदी सीख : संग्राम सिंह सोढा समीक्षक : पृथ्वी राज रतनू
- नूँवो परभात : असद अली असद समीक्षक : देवकिशन राजपुरोहित
- नौलि एवं उडिडयान : सूरज करण जिन्दल समीक्षक : विनोद जोशी
- विविध 8
- यों आए छात्र लाइन पर गुरुजीत सिंह बरार 16
- एक बड़े भाई की पाती रूपनारायण काबरा 22
- सुनहरे कल की कहानी लिखें नौजवान स्वामी विवेकानन्द 34
- कार्टून 42
- जय-जय राजस्थान 50
- प्रतिध्वनि 50
- जय-जय राजस्थान 50

आवरण :

अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185



पाठकों की बात

- शिविरा पत्रिका का फरवरी 2014 का अंक मिला। अद्योपान्त पढ़ा। बहुत अच्छा लगा। ऐसा कोई भी महत्वपूर्ण विषय छूटा नहीं जो सामयिक है। शिविरा सम्पादक मंडल की यह साधना प्रशंसनीय है। नये निदेशक श्री विकास एस. भाले जी हमारे लिए नये नहीं हैं। उनकी सरलता एवं शिक्षकों के प्रति सम्मान भाव दिशाकल्प में बोलता है। 'मैं जो कुछ भी आज हूँ अपने गुरुजन की कृपा से हूँ' यह लिखकर श्रीमान् निदेशक महोदय ने हम शिक्षकों का मान बढ़ाया है। शिक्षकों को कड़ी मेहनत कर इसका प्रत्युत्तर देना चाहिए।

—नानूसिंह सांखला, प्रदेशाध्यक्ष
राजस्थान शारीरिक शिक्षक संघ, बीकानेर

- 'शिविरा' पत्रिका का हर अंक आपके सम्पादकत्व में दिन-ब-दिन निखरा-उजला रूप लिए होता है, प्रत्येक पृष्ठ अपने आप में परिपूर्ण प्रतीत होता है। हर एक रुचि के पाठक के लिए अथाह ज्ञान भण्डार स्वयं में समेटे होता है जो अपने उच्च मानसिक स्तर के लिए प्रशंसनीय तो है ही साथ ही पढ़ने वालों को स्वस्थ सोच एवं कर्मठ, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व की ओर प्रेरित करता है। मैं जब भी 'शिविरा' पढ़ती हूँ मुस्कराहट के साथ असीम सन्तोष का अनुभव होता है।

—कीर्ति शर्मा, नोहर (हनुमानगढ़)

- 'शिविरा' पत्रिका का नया अंक फरवरी 2014 प्राप्त हुआ। अपनी परम्परा के अनुकूल वह सब इस अंक में उपलब्ध है जो सामयिक है तथा जिसके होने की अपेक्षा सुधि पाठक रखते हैं। हमारे नये निदेशक श्री विकास भाले जी ने तो दिशाकल्प में जैसे अमृत घोल दिया है। उनका यह कथन कि 'मैं जो कुछ आज हूँ गुरुजन की कृपा से हूँ' हम शिक्षकों के लिए प्रेरणादायक है। दिशाकल्प में व्यक्त ऐसे उद्गार निसंदेह हृदय को छू लेते हैं। शिविरा शिक्षा (शि) विभाग (वि) राजस्थान (रा) की शान है।

—पवन कुमार स्वामी, शिक्षक
बाबा रामदेव रोड, गंगाशहर (बीकानेर)

- शिविरा पत्रिका फरवरी 2014 का प्रेषण प्रकाशक द्वारा बिना मोड़े भेजना एक अच्छा नवाचार लगा। पत्रिका में 'सितारों के लिए

बनी हूँ मैं' में विश्वनाथ भाटी का लिखा लेख महत्वपूर्ण जानकारीयों से ओतप्रोत था, स्तरीय लगा। ज्ञान की वीणा, प्रेम की वेणु, प्रकाश पंडया की लेखनशैली व ज्ञानवर्द्धक आलेख उत्कृष्ट लेखन का परिचय देता है। 'माँ जीजाबाई ने बनाया शिवा को शिवाजी' लेखिका साधना गर्ग का संक्षिप्त आलेख भी एक राष्ट्रभक्त माँ का देश की पराधीनता की पीड़ा को, से मुक्ति करवाने का संदेश देता भी स्तरीय था। सुंदर संग्रह व स्तरीय प्रकाशन हेतु सहयोग देने वाले समस्त लेखकों व संपादक की पैनी चयन दृष्टि को प्रणाम व धन्यवाद।

—सरदारसिंह चारण

व्याख्याता, डाइट, जालोर

- मैं शिविरा पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका के विगत माहों में प्रकाशित अंक विशेषांक की तरह लगते हैं। सभी आलेख एवं अन्य सामग्री पठनीय एवं मननीय होती है। शिविरा इसी प्रकार आगे बढ़ती रहे, यही प्रार्थना है। शिविरा के ताजा अंक जनवरी 2014 में बसन्त पंचमी, गागी, महर्षि दयानन्द के बारे में दिए आलेख पठनीय एवं संग्रहनीय है। आदेश-परिपत्र में भी उपयोगी सामग्री दी गई है। सम्पादक मंडल को हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

—महेश रतन मुंजाल, क.लि.

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर

- शिविरा का फरवरी 2014 का अंक मिला। आकर्षक पृष्ठ सज्जा के साथ सभी लेख अत्यन्त प्रेरणादायी व ज्ञानवर्द्धक हैं। विज्ञान दिवस पर श्री हरिकृष्णजी के उद्गार 'पहुँचाना होगा विज्ञान को जन-जन तक' सोचने पर विवश करते हैं कि कभी विश्व गुरु कहलाने वाले देश में और आधुनिक विज्ञान के युग में भी हम कैसे अंधविश्वासों में जी रहे हैं। श्री मोहम्मद फारुक जी ने भी इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए झूठे चमत्कारों से पर्दा हटाया है। श्री सुरेश चन्द्र जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचार प्रस्तुत कर स्वामीजी के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन और मनन की ओर प्रेरित किया है। विद्यालयों में प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रमों को मात्र एक औपचारिकता नहीं समझना चाहिए। बालकों के विकास में प्रार्थना की ताकत श्रीमती चेतना के प्रार्थना चिन्तन से पता लगती है।

—आर्य जयसिंह मन्नालाल, अध्यापक
रा.मा.वि. धर्मास, श्रीद्वारगाढ़ (बीकानेर)

▼ चिन्तन

सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है, जो वाणी से नहीं अपितु अपने आचरण द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

—पं. श्री राम शर्मा 'आचार्य'



विकास एस. भाले
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

“ शिक्षा जीवन में प्रकाश फैलाने का कार्य करती है। वह जड़ता को तोड़ कर सहजता से कार्य करने का मार्ग प्रशस्त करती है। वह मुक्तिदायनी होती है। कहा भी गया है- ‘सा विद्या या विमुक्तये।’ शिक्षा व्यक्तित्व का सबसे बड़ा आभूषण होती है। शिक्षक एवं विद्यालय शिक्षा व्यवसाय के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग हैं। शिक्षक तो शिक्षा के स्तम्भ हैं। शिक्षकों के समर्पण पूर्ण अवदान में ही राष्ट्र एवं समाज का हित निहित है। ”

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

व्यक्तित्व का आभूषण होती है शिक्षा

शिक्षा जीवन में प्रकाश फैलाने का कार्य करती है। वह जड़ता को तोड़ कर सहजता से कार्य करने का मार्ग प्रशस्त करती है। वह मुक्तिदायनी होती है। कहा भी गया है- ‘सा विद्या या विमुक्तये।’ शिक्षा व्यक्तित्व का सबसे बड़ा आभूषण होती है। शिक्षक एवं विद्यालय शिक्षा व्यवसाय के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग हैं। शिक्षक तो शिक्षा के स्तम्भ हैं। शिक्षकों के समर्पण पूर्ण अवदान में ही राष्ट्र एवं समाज का हित निहित है। शिक्षकों के सम्बन्ध में नई शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है, “किसी भी राष्ट्र का स्तर उसके शिक्षकों के स्तर से ऊँचा नहीं हो सकता।” अतः उन्हें अपनी विशिष्ट हैसियत को समझ कर कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाएं प्रारम्भ हो चुकी हैं। वर्ष भर के अध्ययन-अध्यापन की कसौटी होती है ‘परीक्षा’। शिक्षकों का अध्यापन प्रभावी तथा अर्थपूर्ण होने तथा छात्र-छात्राओं के अध्ययन की गहराई के प्रतीक परीक्षा परिणाम होते हैं। अतः शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं को पूरी तन्मयता के साथ परीक्षा कार्य में अपनी भूमिका अदा करनी चाहिए। शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं के साथ ही अभिभावकों की भी परीक्षा कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा और समाज का चोलीदामन का साथ है। शिक्षा के उन्नयन से समाज का विकास होता है तथा समाज की सक्रियता से शिक्षा गुणमयी होती है। अतः परीक्षाओं के सफलता पूर्वक संचालन में अभिभावकों को भी सार्थक भूमिका निभानी चाहिए। मैं चाहूँगा कि-

- विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में तल्लीन होकर दोहराने का कार्य करें। वे अपनी तैयारी में विश्वास रखकर पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परीक्षा में सम्मिलित होंगे।
- विद्यार्थी परीक्षा की पवित्रता सुनिश्चित करें। नकल एवं अन्य गैर कानूनी हथकण्डे कतई न अपनाएं।
- संस्था प्रधान एवं केन्द्राधीक्षकों को चाहिए कि वे विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम सदुपयोग करते हुए परीक्षाओं का सहज संचालन करें।
- शिक्षक परीक्षा संचालन की धुरी हैं। बोर्ड द्वारा जारी अनुदेशों के अनुसार परीक्षाओं का आयोजन करवाना उनका नैतिक कर्तव्य ही नहीं अपितु पदगत उत्तरदायित्व भी है। अतः इन कर्तव्यों का ईमानदारी के साथ पालन करना शिक्षकों का धर्म है।
- अभिभावकों का यह कर्तव्य है कि वे परीक्षा के दिनों में अपने परीक्षार्थी बालक-बालिकाओं को सहज वातावरण प्रदान करें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि गत वर्षों की भांति इस बार भी परीक्षाओं का प्रभावी व सफल आयोजन करवाकर शिक्षक व संस्था प्रधान अपनी निष्ठा एवं प्रतिभा को प्रमाणित करेंगे। इसी माह में रंगों का त्यौहार होली भी है। होली प्रेम, भाईचारे और मेलजोल का महान पर्व है। होली हम सबके जीवन में सप्तरंगी उल्लास की वृद्धि करें, मेरी यही कामना है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस आठ मार्च के दिन है। मातृ शक्ति की वंदना का दिन है महिला दिवस। हमें महिला सशक्तिकरण की दिशा में हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।

राजस्थान दिवस भी इस माह में है। हमारा प्यारा प्रदेश राजस्थान देश में विशिष्ट पहचान रखता है। वीरों की भूमि है राजस्थान। अद्भुत कला व संस्कृति का प्रदेश है राजस्थान। इसके विकास हेतु सतत प्रयत्न करना हमारा उत्तरदायित्व है। आइये, प्रदेश की शिक्षा एवं संस्कृति के उत्थान की दिशा में हम सब मिलकर कार्य करें।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

(विकास एस. भाले)



भाषा शिक्षण

भाषा शिक्षण की दूसरी परम्परा

□ डॉ. राम निवास

भाषा शिक्षण में वर्णों से शब्दों की रचना होती है। शब्दों के परस्पर संबंध से वाक्य और वाक्यों से अनुच्छेद बनते हैं। इसलिए भाषा शिक्षण में शब्दों का अर्थ जान लेना ही भाषा ज्ञान नहीं कहा जा सकता। कोई शब्द अथवा शब्दों का समूह वाक्य में क्या काम कर रहा है इसके लिए भाषा के विविध पक्षों और उनके अंतर्संबंधों को समझना आवश्यक है। कोई भी भाषा हो वह बनती तो आखिर शब्दों से ही है परंतु वह शब्दों पर ही खत्म नहीं हो जाती। भाषा किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है वह तो मनुष्य समाज की सामूहिक उपज है। इसलिए शब्दों में व्यक्त विचारों और भावों तक पहुँचने की आवश्यकता होती है। भाषा और साहित्य शिक्षण का उद्देश्य ज्ञान और आनंद की प्राप्ति है। भाषा शिक्षण में स्नेह और संघर्ष दोनों एक साथ चलते हैं।

1. भाषा शिक्षण में दूसरी परंपरा की खोज : परम्परागत ढंग से किए जा रहे हिंदी शिक्षण में आज दूसरी शिक्षण परम्परा की खोज की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। साहित्य, शिक्षण नैतिकता से उपदेश की ओर जाता हुआ भी दिखाई देता है। भाषा शिक्षक की दक्षता योग्यता के साथ-साथ उसकी दृष्टि क्या है। इस पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। कक्षा शिक्षण में अध्यापक भाषा के संबंध में सावधान हो तो शिक्षण में नयापन और खुलापन आएगा। स्वतंत्र और मुक्त चिंतक भाषा शिक्षक से ही कुछ अपेक्षा और आशा की जा सकती है। भाषा की अपनी स्वायत्ता होती है। भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है, अच्छी भाषा सीखना। यदि हाई स्कूल पास करने पर भी बच्चा अच्छी भाषा बोल पढ़ और लिख नहीं सके तो सारी पढ़ाई पर ही प्रश्न चिह्न लग जाता है। शिक्षक शब्दों पर ध्यान कम ही देते हैं इसलिए भाषा शिक्षण में कमी रह जाती है दूसरी भाषा के शिक्षकों से भी शब्दों पर चर्चा और आदान-अनुदान किया जाना अपेक्षित है। भाषा शिक्षकों में विचारधारा

को लेकर कट्टरता नहीं होनी चाहिए बल्कि उनमें भाषिक आदर्श होने आवश्यक हैं। भाषा सभी के लिए होती है इसलिए उसका शिक्षण भी विद्यालयी स्तर पर ही बहुआयामी और पूरे जीवन को प्रस्तुत करने वाला हो।

2. शिक्षक कक्षा में भय उत्पन्न नहीं करें : बच्चों को भाषा शिक्षण डरावना मालूम नहीं हो और कक्षा में शिक्षक नया भय उत्पन्न नहीं करे। विद्यार्थियों को भाषा से प्यार रस और उसमें रुचि उत्पन्न हो वे बोर नहीं हों। उन्हें भाषिक संस्कार दिए जाएँ। ज्ञान जितना भारी होता है वह विद्यार्थियों को उतना ही दबोचता है इसलिए भाषा शिक्षण में रस और रुचि उत्पन्न की जाए क्योंकि विद्यालयी स्तर पर पढ़ने वाले बालक बालिकाओं का शरीर छंद की तरह होता है जो स्वभावतः झूमकर नाचता और गाता भी है।

3. भाषा और साहित्य की रूढ़ियाँ शिक्षण की अड़चनें : भाषा और साहित्य में कुछ रूढ़ियाँ भी हैं, जिनसे शिक्षण का एक बंधा बंधाया कार्य व्यापार चलता है। रीतिकाल और भक्तिकाल के अध्ययन से इनका पता लगता है। ये रूढ़ियाँ ज्ञान के नव निर्माण में अड़चन पैदा करती हैं। यहाँ शिक्षक को सचेत रहकर अपना कार्य करना है क्योंकि रूढ़ियाँ प्राचीन समय और परिस्थितियों की सापेक्षता को सूचित करती हैं। आज समय और संस्कारों में परिवर्तन आ गया है युगबोध और मान्यताएँ बदल गई हैं अतः यह आवश्यक है कि बदला हुआ जीवन बोध बालक बालिकाओं को स्पष्ट किया जाए। एक उदाहरण लीजिए— मुंशी प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी “दो बैलों की कथा” वस्तुतः पशु प्रेम को प्रस्तुत करती हुई उनके प्रति संवेदना जगाती है। परंतु आज प्रेमचंद के समय के गाँव नहीं रहे उनमें स्वतंत्रता के बाद व्यापक परिवर्तन आ गया है। लकड़ी के हल अब प्रचलन में अत्यंत ही कम हैं क्योंकि ट्रैक्टर से खेत जोते जा रहे हैं जिनसे छोटे बड़े किसानों को वर्ष भर बैलों को चारा खिलावे

से मुक्ति मिल जाती है। कृषि में मशीनों के उपयोग से बैलों की खेती बाड़ी में उपयोगिता समाप्ति की ओर है। बैलों को कृषि हेतु पालना आज घाटे का सौदा साबित हो रहा है अतः अब बैलों के प्रति पहले वाला आदर एवं उपयोगिता वाला भाव प्रायः कम ही है। मशीनीकरण के प्रभाव से अब बैल किसान के स्थान पर ट्रैक्टर खड़े दिखाई देते हैं। पहले जमाने में बिना बैलों के किसान को किसान ही नहीं माना जाता था। आज विज्ञान के प्रभाव से इस परम्परागत रूढ़ि में बदलाव हो गया है। आज बिना बैलों वाले छोटे बड़े किसान देश के प्रत्येक गाँवों और कस्बों में आसानी से मिल जाते हैं। जो पशु कृषि कार्य में उपयोगी हुए उनके प्रति प्रेम भाव स्वतः ही था। जैसे-जैसे उपयोगिता घटेगी तो प्रेम भाव में भी उदासीनता आएगी ही। वर्तमान में “दो बैलों की कथा” पाठ के उद्देश्य संदेश में परिवर्तन आएगा ही जिसे स्पष्ट करना आवश्यक है।

4. भाषा शिक्षण में नई तकनीक का प्रयोग : हिंदी भाषा के शिक्षण और प्रशिक्षण में भी हमें नई-नई तकनीक प्रयोग करनी चाहिए जैसे कि अंग्रेजी भाषा के शिक्षण प्रशिक्षण में की जाती है। अच्छी भाषा के संप्रेषण के लिए उच्चारण वर्तनी में शिक्षक प्रशिक्षित होने चाहिए। शिक्षक की वर्तनी और उच्चारण के अनुशासन का प्रभाव सीधे बच्चों पर पड़ता है। शिक्षक में यदि अपने विषय का अनुशासन और शिक्षण कला का प्रभाव सीधे बच्चों पर पड़ता है। शिक्षक में यदि अपने विषय का अनुशासन और शिक्षण कला का अभाव है तो कक्षा में उसका अध्यापन सरस और जीवंत कैसे बनेगा आज बाजार में सभी विषयों की सहायक पुस्तकें आसानी से उपलब्ध हैं जैसे ही अध्यापक कक्षा में पाठ पढ़ाना प्रारंभ करता है तो कुछ बच्चे सहायक पुस्तकें खोलकर बैठ जाते हैं। यदि शिक्षक के पास कुछ नया है बच्चों को देने के लिए तो वे शिक्षण में रुचि लेते हैं और सहायक पुस्तक बंद कर देते हैं। यदि कुछ नया नहीं है तो

फिर कक्षा में अध्यापक का पढ़ाना एक समस्या बन जाता है वे शिक्षण में रुचि नहीं लेते। इसलिए शिक्षक के दिए गए उदाहरण आधुनिक विषयों पर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से होने चाहिए। उदाहरण तर्क संगत और पाठ पर आधारित होने आवश्यक हैं उनमें प्रयोजनानुसार पर्यावरण, जल, विज्ञान, कला, संगीत, सिनेमा, बाजार और घर परिवार की झलक होनी चाहिए। विद्यार्थियों के जीवन और कक्षा शिक्षण के बीच संबंध होना चाहिए यह संबंध सिर्फ भाषा शिक्षण में ही नहीं अपितु अन्य विषयों के शिक्षण में भी होना आवश्यक है।

5. शिक्षक ओढ़ी हुई गंभीरता से मुक्त हो : हिंदी के शिक्षण संस्कार में कुछ ओढ़ी हुई गंभीरता भी यदा कदा शिक्षकों में दिखाई देती है। जिसका परिणाम यह होता है कि बालक बालिकाएँ शिक्षक के साथ अपने को सहज और तनावमुक्त अनुभव नहीं करते। आज हिंदी शिक्षक यह भी विचार करें कि बच्चे हिंदी क्यों पढ़ते हैं और हम उन्हें हिंदी क्यों पढ़ाते हैं ? शिक्षण में परम्परा से मिली विचार की परतंत्रता से मुक्त होना ही चाहिए। परतंत्रता भी शिक्षक के लिए एक प्रकार की गिरफ्तारी के समान ही होती है।

6. शिक्षक धर्मोपदेशक नहीं : भक्तिकाल के अंतर्गत कृष्ण भक्तिशाखा का अध्ययन आज भी स्वतंत्र चेतना के प्रति उदासीन ही है। कृष्ण भक्ति कविताएं पढ़ते समय शिक्षक परंपरा से मिली साहित्यिक धार्मिक रूढ़ियों की जड़ता में गिरफ्तार है। बाल सुलभ चेष्टाओं और शरारत को लीला या चमत्कार बताना और पढ़ाना वर्तमान में किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। इससे बच्चों का विवेक और चिंतन मनन का दायरा संकुचित हो जाता है। **क्योंकि** व्यवहार में बच्चे की शरारतें कुछ और हैं और पाठ्य पुस्तकों में उन्हें बिल्कुल कल्पनात्मक ढंग से महिमा मंडित कर उनका गुणगान किया जाता है। **यहाँ हिंदी भाषा के शिक्षकों को चाहिए कि वह स्वयं कृष्ण की हो या एक साधारण बच्चे की।** ऐसे ही शरारत के संबंध में माता के जवाब भी ऐसे ही होंगे जैसे कि साधारण माता की प्रतिक्रिया होगी अपने शरारती बच्चे के प्रति। माता यशोदा की भी ऐसी ही प्रतिक्रिया रही होगी।” हमें शिक्षण में रूढ़ियों की दासता से बचते हुए स्वतंत्र निष्पक्ष और

प्रगतिशील विचारों की आवश्यकता है। शिक्षक कक्षा शिक्षण में न तो रूढ़ियों का दास है और न ही वह धर्म आध्यात्म का उपदेशक अथवा प्रचारक है। वह किसी मत या वाद से बंधा हुआ नहीं है। लोकतंत्र में शिक्षा के उद्देश्य भी समाज ने ही तय किए हैं। जो समाज भ्रमित ढंग से सोचता है वह समाज विकास नहीं कर सकता। क्योंकि उस समाज पर झूठ और लफ्फाजी हावी हो जाती है। इन सबसे अपने को बचाकर शिक्षक का दायित्व है कि वह सदैव आदर्श भाषा शिक्षण की ओर बढ़े।

7. आहत भावनाओं का मुद्दा : भाषा साहित्य शिक्षण में आज आहत भावनाओं का मुद्दा भी है। वह यह है कि किसी भी रचना गद्य हो या पद्य उसका मूल पाठ न बदला जाए। उदाहरण के लिए जैसे “प्रेमचंद के उपन्यास रंगभूमि में एक था सूरदास वह था चमार... इत्यादि।” शिक्षक अपनी टिप्पणी में कक्षा शिक्षण में वहीं पर स्पष्ट कर दें कि यह शब्द अब प्रयोग नहीं किया जाता इस पर संविधानिक पाबंदी है। लेखक ने जब रंगभूमि उपन्यास लिखा उस समय कोई अन्य समानार्थी शब्द प्रचलित नहीं है इसलिए उन्हें ‘चमार’ शब्द लिखना पड़ा। आज नया समानार्थी शब्द ‘दलित’ प्रचलन में है उसे लिखा और प्रयोग किया जाता है। साहित्य का स्वभाव ‘इंटरएक्टिव’ माना गया है।

8. बालकों की प्रतिक्रियाओं में भिन्नता : विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर जब बच्चा घर जाये तो वहाँ पर उसे छापों के वणों और शब्दों से लिखा वातावरण मिलना चाहिए। परंतु यह खर्चीला है और श्रमिक वर्ग जो दैनिक मजदूरी कर जीवन यापन करते हैं यह वातावरण देना उसके लिए अपने बच्चों को संभव ही नहीं है। यदि कक्षा में शिक्षक ने ‘बिल्लेसुर बकरीहा’ पढ़ाया है, और विभिन्न परिवार समाज की पृष्ठभूमि के छात्र-छात्राएँ कक्षा में हैं तो इस रचना पर उनकी प्रतिक्रिया एक कदापि नहीं हो सकती क्योंकि विद्यार्थियों की आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न होने के कारण उनकी उत्तर संवेदनाएँ भी भिन्न भिन्न व्यक्त होनी चाहिए एक ही नहीं। यदि सभी बालक-बालिकाओं का संवेदना उत्तर एक ही आता है तो समझा जाना चाहिए कि यह रचना पढ़ाने

वाला शिक्षक अपने शिक्षण के प्रति ईमानदार नहीं है। शिक्षण में झूठ और नकलीपन से हर संभव बचना शिक्षक का दायित्व है क्योंकि यह झूठ और नकलीपन परीक्षाओं में नुकसान ही पहुँचाता है। संदर्भ के प्रति संवेदनशीलता सिखाना आवश्यक है।

9. भाषा शिक्षण सहखोज है : विद्यालयी स्तर पर भाषा शिक्षण महत्वपूर्ण है। इसका प्रभाव विद्यार्थियों पर पूरे जीवन छाया रहता है। लिखने बोलने की अभिव्यक्ति का संपूर्ण विकास विद्यालयी स्तर पर ही भाषा की शिक्षा द्वारा होता है। लेकिन जो छात्र-छात्रा उच्च कक्षा में एक असमर्थ भाषा लिख और बोल रहा है तो वहाँ उच्च कक्षा का भाषा शिक्षक कुछ करने की स्थिति में प्रायः नहीं होता क्योंकि जहाँ जिस स्तर पर अर्थात् विद्यालयी स्तर पर कुछ किया जाना था वहाँ पर आपने कुछ किया नहीं। परंतु फिर भी उच्च कक्षाओं में भी यथा अवसर कुछ किया जा सकता है। संसार विकल्पहीन नहीं है। शिक्षक से समाज एवं राष्ट्र को अपेक्षाएँ हैं। हिंदी आज तीन रूपों में दिखाई देती है भाषा, साहित्य और शिक्षण का माध्यम। हमें ध्यान रखना चाहिए कि आज बाजार का प्रभाव, शैक्षणिक दबाव और राजनीति के कारण संपूर्ण परिदृश्य बहुलता लिए हुए है। भाषा और साहित्य में भी क्षेत्रीय और सामुदायिक विमर्श काम कर रहे हैं। इन सभी के मध्य छात्र-छात्राओं का भी अपना जीवन संसार होता है। साहित्य हो अथवा भाषा शिक्षण कक्षा में शिक्षक तानाशाह की तरह अध्यापन न करे। भाषा एवं साहित्य का शिक्षण, एक सहखोज ही है। जिसमें कल्पनाशीलता और विचारशीलता जरूरी है। हिंदी शिक्षण में भाषायी शिक्षण के साथ-साथ गतिशीलता और समावेशिता होनी चाहिए। यदि यह नहीं है तो वह वर्चस्ववादी विचार है। परंपरागत शिक्षण विधियों से अलग हटकर हम वास्तव में कक्षा शिक्षण में सार्थक और उद्देश्यपरक परिवर्तन चाहते हैं या अपनी ही कन्न में करवट बदलना चाहते हैं।

10. जीवन में शब्द लेने भी सिखाएँ : शिक्षक के सोचने अपनी बात कहने, चिंतन के साथ-साथ बोलने और लिखने में सफाई एवं स्पष्टता हो। आप ठीक नहीं बोलें जो बोलना चाहते हैं उसी ढंग से बात बालक बालिकाओं

तक पहुँचा सके। कानून की भाषा में शब्द एक आशयी होते हैं परंतु साहित्य शिक्षण में यह नियम लागू नहीं होता। अलंकार रस छंद पढ़ाने में एक आशयी शब्द साथ नहीं देते। यथा: 'कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय'। शब्द शिक्षण में जहाँ हम शब्द 'शब्दकोश' से लेते हैं तो जीवन से शब्द लेने भी सिखाए जाएँ। प्रासंगिक और अप्रासंगिक में भेद करते हुए दोनों को अलग करना भी आना चाहिए। भाषा और साहित्य को अलग करके देखना भी शिक्षक के लिए आवश्यक है। जहाँ तक संभव हो सके शब्दार्थ को जीवनार्थ से जोड़ा जाए। पुरानी सूक्तियाँ अब बदलते परिवेश में अपाहिज होती जा रही हैं। विभिन्न क्षेत्रों में जीवन अनुभव से नई कहावतें प्रचलित हो गई हैं उनसे परिचय कराया जाना आवश्यक है यथा- "पहले घी से सब्जी बनती थी, अब सब्जी से घी बनता है।" वनस्पति घी के प्रयोग के कारण यह कहावत प्रचलित हुई है। बदलते हुए जीवन मूल्य स्पष्ट किए जाएँ। इस बदलते वस्तु जगत की पहचान भाषा स्मृति में ही सुरक्षित रहती है। भाषा का एक काम स्मृति है।

11. एक पाठ पढ़ने के कई रास्ते हैं : भाषा शिक्षण में पाठ जीवन अनुभव से जोड़ा जाए इससे बच्चों में संवेदनशीलता जागेगी। एक रचना को पढ़ाने के कई रास्ते होते हैं। प्रत्येक पाठ एक ढंग से पढ़ाया जाना ठीक नहीं है। अनेक ढंग से पाठ पढ़ाए जाएँ। शिक्षण विधियों के बारे में जब विचार किया जाता है तो पाठ की विषय वस्तु पर स्पष्ट पकड़ के बिना विधियाँ कारगर सिद्ध नहीं होती हैं। साहित्य कहीं अलग से उत्पन्न नहीं हुआ बल्कि वह भाषा का ही वैभव है। शिक्षक बच्चों के साथ व्यवहार करने में उसे बच्चे जैसा बनकर ही करना पड़ेगा। भाषा साहित्य शिक्षण में सौंदर्य दृष्टि से तात्पर्य यह है कि सौंदर्य को अनुपातिकता में देखना।

12. ग्लोबल भाषा सैकड़ों भाषाएँ मारकर बनती है : अंग्रेजी ग्लोबल की भाषा बनी आज उसका वर्चस्व है और जनसाधारण विशेषकर हिंदी भाषी राज्यों सहित भारतीय भाषा भाषियों में इसका एक प्रकार का भाषायी आतंक है। यह ग्लोबल भाषा सैकड़ों भाषाओं को मारकर बनी है। भारत में भले ही केन्द्रीय और राज्य सरकारें कक्षा एक से अंग्रेजी की पढ़ाई

अनिवार्य कर दें और अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोल दें, परंतु यूनेस्को की रिपोर्ट से पता लगता है कि हिंदी भाषा मरेगी नहीं बल्कि अन्य विश्व भाषाओं की तरह जीवित रहेगी।

13. चीजों को यथावत नहीं मानना : सामाजिक दुरावस्था का प्रभाव हमारी शिक्षा व्यवस्था पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अतः चीजों को यथावत नहीं मानना भी विद्यार्थियों को सिखाया जाए। एक उदाहरण देखिए- "फटे कपड़ों में बच्चों से नारा लगवाया जा रहा था कि हम महान हैं। यह प्यारा भारत देश हमारा है।" ऐसी दुरावस्था से संतप्त पीढ़ी के बच्चे क्या नव निर्माण करेंगे ? अखबार मीडिया के प्रचार से विद्यार्थियों को सचेत किया जाए कि यह कभी-कभी झूठी खबरें भी छाप देते हैं। फिल्म जगत की चकाचौंध असली है परन्तु वहाँ निर्धनता का चित्रण और पात्र नाटकीय हैं। संप्रेषण के साधनों से प्रसारित होने वाले विज्ञापनों पर आँखें बंद कर विश्वास नहीं करना चाहिए वहाँ भाषा सामान्य संचार और संप्रेषण के माध्यम के रूप में है। अनुभव के साथ संबंध जोड़ना शिक्षण में आवश्यक है, रागात्मक संबंध कायम होने पर ही भाषा (शब्द) साथ देते हैं वे अपने आप चले आते हैं। इसलिए भाषा से पहले आदमी को ठीक करिए। साहित्य शिक्षण में स्मृतियाँ जीवित करना जरूरी है। वहाँ हमारे भावबोध को भी विस्तार मिलना चाहिए। भाव को तरल और विचार को अपेक्षाकृत शुष्क या नीरस कहा गया है। नीरस विचार प्रधान व्याकरण गद्य इत्यादि को तरल अर्थात् सरस बनाकर पढ़ाना कुशल शिक्षक की शिक्षण कला पर ही निर्भर है। अमूर्त वस्तु एवं पदार्थों में प्राण फूँक देना अध्यापन कला की कसौटी ही कही जाएगी।

14. टेस्ट कल्चर का युग और हिंदी : आज 'टेस्ट कल्चर' का जमाना है। मीडिया की हिंदी के साथ-साथ इधर क्रियात्मक हिंदी भी आकार ले चुकी है यह हिंदी के लिए शुभ संकेत है। बैंक, रेलवे अस्पताल, मनिआर्डर फार्म इत्यादि भरना सिखाना प्राथमिक, उच्च प्राथमिक स्तर पर आवश्यक हो गया है। इन प्रपत्रों के नमूने कक्षा में बालक बालिकाओं को दिखाए जाएँ और उन्हें भरने के लिए अभ्यास कराया जाए। सड़क पर चलने के नियम का चार्ट और संकेतों से भी बच्चों को परिचित कराया जाए। इनसे वे

प्रेरक प्रसंग

यों आए छात्र लाइन पर

□ गुरजीत सिंह बरार

बा त तब की है जब जाकिर हुसैन साहब जामिया मिलिया इस्लामिया में थे और विश्वविद्यालय की हालत सुधारने का प्रयास कर रहे थे वे चाहते थे कि सभी छात्र अनुशासन में रहें, स्वच्छता का ध्यान रखें तथा स्वयं को आदर्श विद्यार्थी सिद्ध करें। मगर विद्यार्थी अपनी शरारतों से बाज नहीं आ रहे थे। प्रशासन ने ऐसे आदेश निकाले जो असर नहीं दिखा सके। अध्यापकों की समझाइश भी कोई रंग नहीं दिखा सकी। उन्होंने सुझाव दिया कि अब सख्ती की जानी चाहिए। जाकिर हुसैन सख्ती के सर्वथा खिलाफ थे। उन्होंने अपनी योजना मन ही मन गढ़ ली।

एक दिन सुबह-सुबह छात्रों ने देखा कि विश्वविद्यालय के आगे एक व्यक्ति बैठा जूता पालिश कर रहा है। छात्रों ने पालिश करवाई तो उसने पैसे भी नहीं लिए। बोले कि यह सब विश्वविद्यालय की ओर से कराया जा रहा है। अब तो भीड़ लग गई। तभी एक विद्यार्थी ने ध्यान से पालिश करने वाले के चेहरे की तरफ देखा। उसके होश उड़ गये। वे तो जाकिर हुसैन साहब थे।

विश्वविद्यालय में यह बात जंगल में आग की तरह फैल गई। वरिष्ठ छात्र, जो वातावरण खराब करने में अग्रणी रहते थे, आगे आए और उनसे क्षमा मांगी तथा भविष्य में शरारत नहीं करने का प्रण लिया। जाकिर हुसैन साहब ने उन्हें समझाया। अनुशासन का पाठ पढ़ाया। अब तो विश्वविद्यालय का माहौल एकदम से बदल गया था। छात्र लाइन पर जो आ गए थे। -प्रधानाचार्य

राउमावि, तामकोट (श्रीगंगानगर)

मो. 9414432317

दुर्घटनाओं से बचने की जानकारी प्राप्त कर लेंगे और ट्रेफिक के नियमों का पालन करना सीख जाएंगे। कामकाजी हिंदी की आज देश में आवश्यकता है, कार्यालयों में उपर्युक्त वर्णित कामकाजी हिंदी ही चाहिए। भाषा शिक्षक इस तथ्य की ओर से उदासीन न रहें। नए पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों में भाषा शिक्षकों से यह अपेक्षा की गई है। इससे पठन पाठन में ताजगी तो आती ही है भाषा शिक्षा के उद्देश्य भी पूरे होते हैं।

-एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर-305004

मो. 9549737800



सृजन

सृजनात्मकता एवं अभिभावक

□ डॉ. जमनालाल बायती

संगीता चार साढ़े चार वर्ष की बालिका, को दादाजी बाल मन्दिर छोड़ने जा रहे थे। तभी संगीता की नजर सड़क के किनारे बैठे एक वृद्ध यात्री पर पड़ी। यह वृद्ध यात्री अपनी बैत को स्टूल बनाकर उस पर बैठा था। संगीता की नजर पड़ते ही उसने हंसना शुरू कर दिया। दादाजी बोले-बेटे, ये वृद्ध आदमी हैं, बस की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बैत की रचना ही ऐसी है कि इसका स्टूल बन सकता है। फिर कितनी देर तक प्रतीक्षा करनी पड़े-वृद्ध है तो स्टूल बना कर बैठ गया। अच्छा बताओ बेटे, बैत का और क्या-क्या उपयोग हो सकता है ? संगीता सहमते हुए बोली- इससे कुत्ते को मार सकते हैं। दादा जी बोले और कोई उपयोग बताओ। संगीता बोली- अभी तो याद नहीं आ रहा है और सोचूंगी, बाल मन्दिर से आकर शाम को आपसे बात करूंगी।

व्यवहार में आपने देखा होगा कि कई

बार महिलायें थाली उलटी रख कर उस पर रोटी बेल लेती हैं। कई रसोइया भी साफ सुथरे फर्श पर ही रोटी बेल लेता है। इस प्रकार वे थाली तथा फर्श का जरूरत के समय भिन्न-भिन्न प्रकार से उपयोग कर लेते हैं।

कई बार नई नवेली बहु टेढ़ी मेढ़ी रोटी बनाकर परिवारजनों में उपहास का पात्र बन जाती हैं। वहीं बहु अगली बार टेढ़ी मेढ़ी बेली रोटी को बड़े कटोरे को उल्टा रखकर सुन्दर सी गोल रोटी तैयार कर उन्हीं सगे सम्बन्धियों से प्रशंसा प्राप्त कर लेती है।

पिछले सातवें दशक में लेखक के सामने एक बार एक अभियन्ता अपने 10-11 वर्षीय पुत्र को लाये तथा उसकी बुद्धिलब्धि जानना चाहा। परिचय स्थापित होने पर लेखक ने बच्चे से पूछा कि बेटे इस कमरे को, कमरे की चीजों को ठीक से देख लो, क्या क्या चीजें कहाँ-कहाँ रखी हैं, ठीक से याद रखना है, फिर आपको

बिना रुके प्रश्नों का उत्तर देना होगा रुकना नहीं है, चीजों के नाम बोले जाना है। (पांच मिनट बाद) तैयार.. अब सवाल पूछें। बच्चे के हाँ कहने पर लेखक ने रोज की तरह सधा हुआ प्रश्न पूछा-इस कमरे में जो जो चीजें आप देख रहे हैं, उनके नाम बोलो, रुकना नहीं है। बालक ने कहना शुरू किया-कुर्सी, टेबल, स्टूल, पंखा, दवात, कलम, पेन, फोन, फाइल, कलेण्डर, जूते पंखा (दूसरी बार) सिगड़ी, कोयला, अखबार, बल्ब, मटकी, किवाड़, आलमारी, दरी, कागज, स्वीच, पायदान.. टीकड़ा, पूछड़ा.. लेखक ने बालक को टोंका-पूछा-अरे, आप क्या कर रहे हो ? ढीकड़ा पूछड़ा कहा है? क्या है? ये चीजें बताओ, मैं तो इन्हें जानता भी नहीं.. बालक खामोश पर लगता है ढीकड़ा-पूछड़ा शब्दों के कोई समान शक्ति सूरत बालक के मस्तिष्क में नहीं है।

प्र कृतिदत्त एक महत्वपूर्ण गुण सृजनात्मकता पर आज राष्ट्रीय सम्पत्ति या धरोहर के रूप में विचार किया जाता है। यह सोचने विचारने की एक ऐसी विधि या तकनीक है जो विभिन्न रूपों में बालक (या व्यक्ति) द्वारा प्रकट होती है। यहाँ यह भी ध्यान रखा जाना चाहिये कि यह भिन्न दिशाओं में सोचना समाज में स्वीकार्य भी हो, समाज को हानि पहुँचाने वाला नहीं। सृजनात्मकता किसी व्यक्ति की या बालक समूह की बपौती नहीं है। अभियन्ता या प्राध्यापक का पुत्र सृजनशील हो सकता है तो रसोईघर में भी गृहिणी रोटी बेलने में सृजनात्मक व्यवहार बता सकती है तथा इसी भांति सड़क के किनारे ठेला लगाकर चाय बेचने या परांठा खिलाने वाले की कार्य विधि में भी सृजनात्मकता दिख सकती है, बालकों को कई हरकतें या उनकी गतिविधियाँ वयस्कों को मूर्खतापूर्ण लग सकती हैं पर ध्यान से देखा जाय तो तो इन गतिविधियों में सृजनात्मकता के अंकुर

छिपे हुए होते हैं। बालकों में सदैव ही खोजी प्रवृत्ति होती है, वे कुछ नया बनानेको आतुर रहते हैं। लेखक के पड़ौसी के 8वीं कक्षा के पुत्र ने अपना टी.वी.खोल दिया, वह जानना चाहता था कि यह कैसे कार्य करता है ? उसे फिर कार्य करने की स्थिति में लाने के लिये उस बालक को उस अस्त व्यस्त टी.वी. को दक्ष मेकेनिक के पास ले जाना पड़ा। जब बालक कोई नया काम कर लेते हैं तो उन्हें प्रसन्नता होती है, उन्हें सन्तोष मिलता है। माता-पिता बालक की सृजनात्मकता की मात्रा तथा रूप या प्रकृति जानकर बालक में उसका विकास कर सकते हैं। बालक को सृजनात्मक कृति पर उसकी पीठ थपथपा कर बालक का हित साधन कर सकते हैं।

सृजनात्मकता प्रायः सभी बालकों में विद्यमान होती है। हाँ, उसकी मात्रा भिन्न-भिन्न बालकों में समान नहीं होती है। यह मुख्यतः माता-पिता का दायित्व है कि सृजनात्मकता के विकास के लिये बालकों को समुचित अवसर

प्रदान करें। इस संबंध में शिक्षकों की भूमिका को भी कम महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। शिक्षा की जब बात आती है तो इसके विकास में शिक्षकों का स्थान और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। व्यवहार में आपने कई बार देखा होगा कि बालक माता-पिता की अपेक्षा शिक्षक का अधिक विश्वास करते हैं।

बालक कई बार उपहासजनक उत्तर दे सकते हैं, उनके उत्तरों में विनोद दिख सकता है- ऐसे उत्तरों को भी स्वीकार करने के लिए माता-पिता को (तथा शिक्षकों को भी) तैयार रहना चाहिए। बच्चों के उत्तरों पर हंसकर उन्हें टालना नहीं चाहिए। प्रयत्न यह होना चाहिए कि बच्चों की सृजनात्मकता को हर सम्भव प्रश्रय मिले जिससे वे अपनी सृजनात्मकता का उच्चतम स्तर तक विकास कर सकें।

बालकों में सृजनात्मकता के विकास के लिये मात-पिता अग्रलिखित दिशाओं में प्रयत्न कर सकते हैं-

1. वस्तुओं का नाम पूछना-

बालक के सामने कोई एक शब्द बोला जाय तथा उससे जुड़े अन्य भिन्न-भिन्न शब्द पूछिये। बालक को न रूकने की भी कहिए।

(अ) परिवार- परिवार-माता, पिता, दादा, दादी, चाचा, भाई, बहिन, नौकरानी, चपरासी, मामा, मकान, खेत, गली, कमरे, सीढ़ियाँ, छत, खिड़की, छत, शीशा, नल, पानी, मटका आदि।

(ब) नदी- पानी, मछली, मगर, किनारे, खेत, नहर, अनाज, रेत, पेड़, बन्दर, बाग, वर्षा, बिजली, लहरें, नाव आदि।

(स) बस स्टैण्ड- मोटर, प्याऊ, सूचना पट्ट, शौचालय, कण्डक्टर, पत्रिकाओं की दुकान, पुलिस थाना, सिपाही, टिकिट, खिड़की, नाश्ते की दुकान, होटल, गाय, खिलौनों की दुकान, कार, मोटर, सूचना प्रसारण यंत्र, आदि।

2. उपयोग बताइये-

दैनिक उपयोग की वस्तुओं के, जिन्हें बच्चे जानते हैं, उपयोग पूछे जा सकते हैं। कई बार बच्चे अर्थहीन, अनर्गल तथा उपहास सूचक उत्तर देंगे। उन्हें स्वीकार कीजिये, किसी भी सूरत में बालक को निरुत्साहित नहीं करना है-

(अ) टेबल- लिखने के काम आना, इसके सिवाय और उपयोग आप बताइये।

(ब) सीमेण्ट- दिवाल बनाने के काम आता है, इसके सिवाय और उपयोग आप बताइये।

(स) जूते- पहनने के काम आते हैं इसके सिवाय अन्य उपयोग बताइये।

(द) थैला- पुस्तक रख कर स्कूल ले जाते हैं-आप इसका अन्य और कोई उपयोग बताइये।

(य) पानी- सामान्यतया पानी पीने के काम आता है-पर बालक जो उपयोग बतायें उन्हें स्वीकार कीजिये।

(र) मिठाई- उत्सव के अवसर पर अतिथितियों को परोसी जाती हैं। आप अन्य और अधिकाधिक उपयोग बताइये।

माता-पिता तथा शिक्षकों को बालकों को प्रोत्साहित करना है कि वे अधिकाधिक विकल्प बतायें। कई विकल्प हास्यास्पद या

विनोदपूर्ण हो सकते हैं-आप उन्हें स्वीकार कीजिये। बालक हतोत्साह हो जाये- इस स्थिति से सदैव बचना है।

3. कहानी लेखन-

सृजनात्मकता के विकास में कहानी लेखन बहुत मदद कर सकती है। इस विधा के कई रूप हो सकते हैं-

(अ) कहानी आधी सुनाओ, अधूरी कहानी कहकर, आगे का हिस्सा बताने को कहिए।

(ब) शीर्षक बता कर कहानी लिखवाइये।

(स) कहानी को आगे बढ़ाओ।

(द) पूरी कहानी कहिए फिर इसी कहानी का अंत अन्य रूप में करवाइये।

(य) परम्परागत कहानी सुना कर पूछिये कि आज की स्थितियों में यह कहानी क्या रूप लेगी?

(र) कहानी के पात्रों को बदल दे तो कहानी का क्या रूप होगा?

(ल) मगर और बन्दर की कहानी-बन्दर की जगह अन्य कोई बोलने वाला पात्र हो तो कहानी का रूप कैसा होगा?

इस प्रकार कहानी विद्या तकनीक बच्चों में सृजनात्मकता के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

4. यदि ऐसा हो जाय तो :

बालक जो वस्तुएं अपने आस पास देखते हैं या जिन वस्तुओं को वे प्रयोग में लाते हैं, उनके बारे में उनके काल्पनिक विचार जानिये उनके विचारों की उड़ान जानिये-

(अ) यदि विद्यालय में घण्टी न हो,

(ब) यदि रोटी छूते ही सोने की हो जाय,

(स) यदि सूर्य कभी न निकले,

(द) यदि विद्यालय में छात्रों का कक्षावार विभाजन न हो,

(य) यदि पूरे विश्व में पानी भर जाय,

(र) यदि रोटी बोलने लगे,

(ल) यदि शेर बोलने लगे,

(व) यदि पहिये लगे मकान बनने लगे,

(श) यदि कभी भूख न लगे,

(ष) यदि कागज बनना बंद हो जाय,

(स) यदि अनपढ़ पत्नी/पति हों,

(ह) यदि धरती पर किसी भी प्राणी की मृत्यु न हो।

छात्र कल्पना तथा अनुभव के आधार पर उत्तर देने का प्रयत्न करेंगे, उनके उत्तर विनोदपूर्ण हो सकते हैं उन्हें स्वीकार कीजिये, जैसा कि ऊपर कहा गया है, विनोद पूर्ण उत्तर पर बच्चों को मजाक का पात्र कभी न बनाइये। रोटी बोलने लगे तो वह तब पर सिकने से मना कर सकती है क्योंकि तब पर उसे ताप या गर्मी लगेगी, रोटी अपना स्वाद भी बता सकती है। इसी प्रकार बच्चों के अन्य उत्तर भी सामने आयेंगे।

5. क्या होगा :

(अ) किसान खेती करना बंद कर दें।

(ब) आप कानून की शिक्षा प्राप्त हो,

(स) आप उच्च शिक्षित होते हुए भी तांगा या रिक्शा चलायें,

(द) आप अफीम तस्करी में पकड़े गये,

(य) आपको सम्पूर्ण शिक्षा प्रसार का कार्य सौंपा हो,

(र) आपको तुलसी/सुभाष की भूमिका निभानी हो,

(ल) आकाश में तारे न हो,

(व) मुर्गी अण्डा देना बन्द कर दे,

(श) शेर बोलने लगे- आदि आदि।

6. क्या व क्यों हो रहा है ?

पुरानी पत्रिकाओं में से विभिन्न गतिविधियां दर्शाने वाले चित्र संग्रह कीजिये। यदि चित्रकला के शिक्षक बना सके तो उन की सहायता से चित्र तैयार भी करवाये जा सकते हैं। ऐसे चित्रों की कल्पना भी करवाई जा सकती है। उदाहरण देखिये-

(अ) टी.वी. टेबल पर रखा है। गृहिणी रसोईघर में जा रही है, गृह स्वामी दरवाजे से बाहर निकल रहा है। बच्चा खाट पर सोया है, पास ही स्टूल पर दवाइयाँ रखी हैं।

(ब) सन्ध्या समय में खेल समाप्त होने पर छात्रों का घर लौटना....

(स) उदास, गुमशुम बालक, दोनो हथेलियाँ गालों पर लगाये हुए, पास ही पुस्तकें बिखरी पड़ी हैं, खाने की थाली लगी हुई है, रोटी-दाल-चटनी थाली में है, एक खाली कटोरी भी थाली में है।

(द) नदी में पानी बह रहा है। किनारा छूती हुई नाव तथा कुछ दूरी पर राहगीर....

उदास बालक वाला चित्र बता कर आप

पूछ सकते हैं- बालक क्या कर रहा है? उदास क्यों है? किताबें कहाँ रखी हैं? थाली में क्या है? इन प्रश्नों के भिन्न-भिन्न उत्तर आर्येण-आश्चर्यजनक तथा अकल्पनीय भी, आप उन्हें स्वीकार कीजिये। महत्वपूर्ण यह है कि कितने अधिक सम्भावित उत्तर हो सकते हैं?

- (1) कम अंक आना,
- (2) परीक्षा में फेल होना,
- (3) किताबों से रुचि न होना,
- (4) भूख न होना,
- (5) फेल होने से भोजन में रुचि न लेना,
- (6) भोजन अभी परोसा ही है,
- (7) खाने की इच्छा न होने से सब्जी के लिये मना कर दिया है,
- (8) छात्र भागने की तैयारी कर रहा है,
- (9) थप्पड़ लगने का डर लग रहा है,
- (10) चटनी में रुचि नहीं है, आदि आदि।

विभिन्न प्रश्न पूछने के लिये चित्र आपकी मदद करते हैं, काम को आगे बढ़ाते हैं। पूरक या भिन्न प्रश्न पूछ कर छात्रों को और अधिक उत्तर देने के लिये प्रेरित किया जा सकता है।

ऊपर के विवेचन के प्रकाश में कहा जा सकता है कि माता-पिता (और शिक्षकों) की भूमिका बालकों की सृजनात्मकता के विकास में अति महत्वपूर्ण है। वे एकाधिक तरीकों से एकाधिक अवसरों पर बालकों की सृजनात्मकता को, समाज से स्वीकृत गतिविधियों से, सतत् प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ा सकते हैं। आरम्भ में बच्चे संकुचा सकते हैं, पहल करने में भी हिचक सकते हैं, ऐसे समय में माता-पिता की भूमिका महत्वपूर्ण बन जाती है। बच्चे पहल करें, अभिव्यक्ति के लिए तत्पर बने, इसके लिये माता-पिता को अवसर देने होंगे, वे बच्चों की प्रशंसा करे उनके अधूरे उत्तरों को पूरा करें, तभी बच्चों का साहस बढ़ेगा, उनके उत्तरों को ध्यानपूर्वक सुना जाय, असंगत उत्तर पर भी मजाक न उड़ाया जाय, बच्चे प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करें तो उसकी मुक्त हृदय से प्रशंसा की जाय। इन्हें छोटे मोटे प्रयत्नों से उनकी सृजनात्मकता को निखरने का अवसर मिलेगा।

-बी-186, डॉ. राधाकृष्णन नगर,
भीलवाड़ा (राज.) 311001
मो. 9928108669

नैतिक शिक्षा

उन्नति की आधारशिला-चरित्र निर्माण

□ जितेन्द्र सनाढ्य

ए क महल की दृढ़ता तथा मजबूती उसकी नींव पर ही निर्भर करती है। अगर महल की नींव मजबूत होगी तो वह भवन भी चिरस्थायी रहेगा। चीन में एक कहावत है कि “हर एक छोटा कदम बड़ी मंजिल की ओर ले आता है।” बस होना चाहिए मन में मजबूत इरादा और बुलन्द हौसला, इसीलिए कहा गया है कि “गर हौसला हो बुलन्द तो आंधियों में भी चिराग जलते हैं।” कहा जाता है कि वही सबसे अधिक जीता है जो सबसे अधिक सोचता है, सुन्दरम भावनाएं रखता है तथा सर्वोत्तम रीति से काम करता है।

बर्टन में लिखा है- “चरित्र एक ऐसा हीरा है जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है” इसका तात्पर्य यह है कि चरित्र केवल शक्ति ही नहीं, संसार की सब शक्तियों पर छा जाने वाली महाशक्ति है, अर्थात् जिसके पास चरित्र रूपी धन है, उसके सामने संसार भर की विभूतियां, सम्पत्तियां और सुख सुविधाएँ घुटने टेक देती हैं।

महाराणा प्रताप के चरित्र पर भामाशाह का धन भी समर्पित हो गया था, सुभाषचन्द्र बोस के चरित्र को देखकर अनगिनत युवक-युवतियों ने उनके इस वाक्य-“तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा” पर अपना पूरा जीवन न्यौछावर कर दिया था। एक धोती से अपने शरीर को लपेटने वाले महात्मा गांधी पर विश्व की कौनसी शक्ति कुर्बान नहीं थी?

चरित्र का अर्थ व्यक्ति के उस आचरण से है, जो वस्तुतः उसके समग्र शील स्वभाव को समाहित करता है। चरित्र के अन्तर्गत व्यक्ति के मन, वचन एवं वाणी से सम्बन्धित समस्त प्रक्रिया एवं कार्यकलाप आ जाते हैं। इतना ही नहीं, उसका चेतना विकास भी उसके चरित्र का अंग बनता है।

श्री कृष्ण ने गीता में अर्जुन को शुद्ध चेतन स्वरूप में स्थिर हो जाने का परामर्श दिया था, जिससे वह गतिशीलता को प्राप्त कर विजयी हो, उनके उपदेश का आशय यही था कि मानव स्वयं में चरित्र का निर्माण करें, जिसके बल पर ही वह अपनी निश्चयात्मक बुद्धि से चेतना को शुद्ध बनाए रखेगा और फिर निरन्तर उन्नति करता हुआ अपने जीवन को सार्थक कर सकेगा।

चरित्रवान की पहचान क्या है ?

आजकल हमारे देश में ‘चरित्र’ पर उपदेश देने वालों की संख्या कम नहीं है। गली-गली में उपदेश घूम रहे हैं। कुछ नाम वाले तो कुछ बेनाम, किन्तु इनमें से एक ऐसा उपदेशक मिलना कठिन है

जिसकी कथनी और करनी में अन्तर न हो अर्थात् जिसका चरित्र लोगों ने चरित्र के निर्माण का विधिवत अध्ययन किया है उनका कहना है कि-Sow a tendency reap a habit, Sow a habit reap a character, Sow a character reap a destiny. अर्थात् एक प्रवृत्ति मनुष्य की प्रकृति या स्वभाव निर्माण करती है, स्वभाव के द्वारा चरित्र का निर्माण होता है और चरित्र द्वारा भाग्य का निर्माण होता है। अतएव चरित्रवान की निम्न विशेषताएँ होती हैं-

1. वह सत्य का सामना करने से नहीं डरता, क्योंकि उसके रोम-रोम में ईमानदारी भरी है, और सादगी उसकी प्रिय वस्तु है।
2. वह निश्चयात्मक बुद्धि से निर्णय बनाता है, ‘संशयात्मक बुद्धि से नहीं।
3. धनोपार्जन करना उसका मुख्य उद्देश्य नहीं है, अतः वह स्वयं को पैसे के लिए नहीं बेचता।
4. वह कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठावान है और एकाग्रचित होकर कार्य करता है।
5. कठिन कार्य को देखकर वह पीछे नहीं हटता। असम्भव को ‘सम्भव’ करने में गहरी रुचि लेता है।
6. वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता।
7. वह अहंकार से दूर रहता है और झूठी प्रशंसा कभी नहीं चाहता।
8. वह दुःखों से नहीं घबराता और सुखों में फूलता नहीं।
9. वह अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का अहित कभी नहीं सोचता।
10. चरित्रवान अध्यात्म को जीवन का अंग मानता है अतः प्रकृति के नियमों का उल्लंघन कभी नहीं करता।
11. वह शिष्टाचार और कुशल व्यवहार को सम्मान देता है।
12. वह अपनी गलतियों को सार्वजनिक कर उनमें सुधार लाता है।
13. वह समय का पाबन्द है और दैनिक-चर्या में संयम बरतता है।

**सोच को बदलो, सितारे बदल जाएंगे
नजर को बदलो, नजारे बदल जाएंगे
कशियाँ बदलने की जरूरत नहीं,
दिशा को बदलो किनारे अपने आप बदल जाएंगे।**

-अध्यापक, रा.उ.मा.वि., सालोर
तह.-नाथद्वारा, जिला-राजसमन्द
मो. 9828395004

बि टिश शासन के समय लार्ड मैकाले ने 1835 ई. में भारतवासियों को शिक्षित करने के लिए अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली सारे देश में लागू की, जिसका उद्देश्य था कि भारतवासियों को इस प्रकार शिक्षित करना चाहिए जिससे उनकी आदतें अंग्रेजों के समान बनें तथा वे अंग्रेजी सरकार चलाने के लिए सिर्फ बाबू बनें। वह शिक्षा प्रणाली आज भी अंग्रेजी माध्यम वाली प्राइवेट स्कूलों में विद्यमान है। प्रसन्नता की बात यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले इन अंग्रेजी शिक्षा के विद्यालयों के खिलाफ एक जन अभियान चल पड़ा था।

बाल गंगाधर तिलक अंग्रेजों द्वारा थोपी गई शिक्षा प्रणाली के सख्त विरोधी थे। वे कहते थे, “इस अंग्रेजी सरकारी शिक्षा ने ही हमारा बंटोधाव किया है। वर्षों तक स्कूल-कॉलेजों में ढेर सारी किताबों को पढ़ करके भी हमारे युवक जहाँ के तहाँ ही हैं। देश की विपन्नावस्था की ओर उनका कोई ध्यान नहीं। इस शिक्षा के द्वारा अंग्रेजी सरकार ने हमारे देश की चेतना को संवेदनहीन बना दिया है। यदि मन हराभरा हो तो शरीर में प्राण फूँके जा सकते हैं लेकिन इस शिक्षा प्रणाली से मन ही मर गया हो तो इसका एक ही उपाय है— इस अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को जड़ समेत उखाड़कर उसकी जगह युवापीढ़ी को राष्ट्रीय शिक्षा दी जानी चाहिए।”

आखिरकार राष्ट्रीय शिक्षा की संकल्पना की कवायद शुरू हुई। सारे देश में अंग्रेजी शिक्षा के विद्यालयों के खिलाफ एक जन अभियान चल पड़ा। विकल्प के रूप में जो विद्यालय सामने आए उसमें रवीन्द्रनाथ टैगोर का ‘शान्तिनिकेतन’ था जो अंग्रेजी शिक्षा के तामझाम से बिल्कुल अलग शुद्ध भारतीय तपोवनी परम्परा का एक आश्रम है। महात्मा गांधी ने कहा— “स्वतंत्र भारत के उद्भव के लिए यह विद्यालय एक सांस्कृतिक अभियान था।” टैगोर सभी प्रकार की अनर्गलाओं के विरुद्ध थे। यहाँ तक कि माँ-बाप की लाठी हुई वर्जनाएँ भी उन्हें अप्रिय लगती थीं। उनका कहना था— “ओ माँ, खोल दे दरवाजे। बच्चे को जाने दे, उसे धूप में तपने दे, मिट्टी में लौटने दे और कीचड़ में खेलने दे।” शान्तिनिकेतन में बचपन की स्वतंत्रता से लेकर भारत की स्वतंत्रता की कहानी कहीं न कहीं अवश्य जुड़ी है।

दूसरा ‘फिनिक्स विद्यालय’ था जो महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया। महात्मा गांधी के विचार थे कि अंग्रेजी तालीम ने एक अभिजात वर्ग खड़ा कर दिया है जो शारीरिक श्रम से नफरत करता था। हमारे बच्चों में देश के प्रति प्रेम न जगाकर अंग्रेजी भाषा, जीवन पद्धति और विदेशी वस्त्र विन्यास के प्रति आकर्षण पैदा कर रहा था। उन्होंने फिनिक्स विद्यालय के छात्रों को जन्मघुट्टी में ही शारीरिक

शिक्षाविदों के विचार

राष्ट्रीय शिक्षा के बारे में अनुचिन्तन

□ कैप्टन सत्यनारायण पंवार

श्रम, स्वावलम्बन, संयमित आचरण, नैतिक उन्नयन, मातृभाषा, प्रेम, सेवाभावना और हाथ से काम करने के हुनर आदि के संस्कार दिए।

तीसरे सुप्रसिद्ध शिक्षाविद काका कालेलकर गुजरात विद्यापीठ के संचालक थे। उनके विचार पठनीय और मननीय हैं— “शिक्षा कहती है कि मैं सत्ता की दासी नहीं, कानून की किंकरि नहीं, विज्ञान की सखी नहीं, कला की प्रतिहारी नहीं, अर्थशास्त्र की बांदी नहीं। मैं तो धर्म का पुनरागमन हूँ। मानव के हृदय, बुद्धि एवं इंद्रियों की स्वामिनी हूँ। मनोविज्ञान और समाज शास्त्र मेरे दो पैर हैं। कला और हुनर मेरे दो हाथ हैं विज्ञान मेरा मस्तिष्क है। धर्म मेरा दिल है, निरीक्षण और तर्क मेरी दो आँखें हैं। इतिहास मेरे कान हैं और स्वतंत्रता मेरी सांस है। उत्साह और उद्योग मेरे फेफड़े हैं। धैर्य मेरा व्रत है। विश्वास चेतना है। ऐसी जगदम्बा हूँ। उसकी सारी आशाएँ और आकांक्षाएँ मेरे द्वारा तृप्त हो सकती हैं।” ऐसी शिक्षा चेतना की नसों में फौलाद भरने का काम करती है।

स्वतंत्रता सेनानी चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने स्वतंत्रता को एक ऐसी अवधारणा माना जो जीवनपर्यन्त साथ चलती है। विचारों की स्वतंत्रता उनका प्रमुख आधार था। उन्होंने एक जगह विद्यालयों के लिए कहा— “जब आप किसी विद्यालय में जायें तो सबसे पहले वहाँ पढ़ने वाले छात्रों के चेहरों को देखो। अगर आपको बच्चों के चेहरों पर उल्लास दिखे तो उस स्कूल को चलने दें वरना बन्द कर दें।” मुक्त वातावरण एवं आनन्ददायी शिक्षण की इससे अधिक सटीक व्याख्या और क्या हो सकती है।

शिक्षाविद डॉ. एस. राधाकृष्णन् आत्मा की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। इसके लिए वे शिक्षा को सबल माध्यम मानते थे। उनका कहना था— “हर प्रकार की आजादी उन सब चीजों के खिलाफ एक धर्मयुद्ध है जो अवरोध, बुराई, अपूर्णता या सड़ांध लाती है।” इस धर्मयुद्ध के द्वारा शिक्षा के माध्यम से एक सबल पुष्ट एवं दृढ़निश्चयी स्वतंत्र राष्ट्र की स्थापना की जा सकती है।

शिक्षाविद एवं बाल मन के पारखी विशन बालक को भगवान मानते हैं। वे कहते हैं “शिक्षा

शास्त्री के लिए बालक एक अद्वितीय और जीवन्त ग्रंथ हैं।” गिजुभाई द्वारा स्थापित किया गया ‘बालमंदिर’ स्वतंत्रता अवधारणा की एक प्रयोगशाला है। वहाँ बालकों की रुचियों की अनेक प्रक्रियाएँ चलती थीं ताकि उनकी अभिव्यक्ति निखरे, वे अनुशासित बनें, आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनें। बाल मंदिर में खेलकूद, रुचि के काम, संगीत, कहानी कला से शिक्षण, शारीरिक श्रम आदि पर जोर दिया जाता था।

प्रो. यशपाल ने सन् 1996 में आयोजित विश्व पुस्तक मेले’ के अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा था— “अध्यापक अपनी कक्षाओं के कोर्स को पूरा कराने की चेष्टा करते हैं। वे कक्षा में विषय पर विचार विमर्श की अनुमति नहीं देते। अगर कोई बच्चा विषय पर प्रश्न पूछता है तो अध्यापक उसे बुरा मानते हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष बच्चों के पुस्तक का पूरा उपयोग भी नहीं करने देते। उनके विचार हैं कि शिक्षा प्रणाली को बदला जाए। कुछ बच्चों को रटने की आदत होती है या अध्यापक उतावलेपन में कह देंगे। “अभी तो इसे रट लो बाद में समझा देंगे।” ऐसी आदत नहीं डालनी चाहिए। उनका मत है कि अनुभव अपने आप में बहुत बड़ी शिक्षा है इसलिए शिक्षक स्वयं छात्र को अनुभव प्रदान कराएँ।

उपरोक्त शिक्षाविदों के शिक्षा के बारे में चिन्तन के अलावा अनेक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। इनमें संत विनोबा भावे, योगीराज अरविंद, के.एम. मुन्शी, ताराबाई मोडक, श्रीमन्नारायण, जे. कृष्णामूर्ति, श्री प्रकाश, हीरालाल शास्त्री, हरिभाऊ उपाध्याय एवं जमनालाल बजाज आदि मुख्य थे। कुल मिलाकर हमें अनिवार्यतः समर्पित भाव से अभिभावक एवं शिक्षक को उन्मुक्त एवं समृद्ध बनाना है ताकि आज के इस कम्प्यूटर युग में बालक अपने को सुसंस्कारित महसूस कर सके।

स्कूलों और कॉलेजों के शिक्षकों के अतिरिक्त भारत में विवेकानन्द, राष्ट्रपिता गाँधी, महर्षि अरविन्द आदि ऐसे महान अनुचिन्तक हुए जिन्होंने भारत की भूली भटकी जनता को गुलामी और अंधविश्वासों की शृंखलाओं को तोड़ने के लिए प्रेरित किया और एक नई रोशनी प्रदान की।

—68, गोल्फ कोर्स स्कीम,
जोधपुर-342011

ने पोलियन बोनापार्ट ने कहा था

"Give me good mothers and I shall give you a good nation (आप मुझे अच्छी माताएं दो, मैं आपको अच्छा राष्ट्र दूंगा) नेपोलियन का यह कहना आकस्मिक नहीं था। यह उनका महिलाओं में अन्तर्निहित शक्ति की परख एवं सामाजिक जागरूकता के अध्ययन आधारित वाक्य था। महिला के समाज एवं जीवन से जुड़े अनुभव अलग होते हैं। यदि उसके अनुभव को तरजीह मिलती है तो इसमें कोई शक नहीं कि हम एक ऐसे समाज में जीएंगे जो भावना, संभावना, संवेदना से संचालित होगा। इस प्रकार के समाज में आपसी समझ को प्राथमिकता मिलेगी जिसमें सामाजिक विद्रूपताएं न्यून होंगी। आठ मार्च को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस तभी अंधकार की स्थिति से उबर पाएगा।

शिक्षा के प्रसार का राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक बदलाव ने महिलाओं की पूर्ववर्ती स्थिति को काफी प्रभावित किया है। महिला शिक्षा ने महिलाओं में एक क्रांतिकारी जागृति ला दी है। उन्हें अपनी क्षमता का बोध हो गया है। अपनी शक्ति को वे विभिन्न माध्यमों से प्रकट करने लगी हैं फलस्वरूप उन्हें विधि सम्मत अधिकार भी प्राप्त हुए हैं। हर क्षेत्र में उन्होंने अपना स्थान भी बनाया है। पर इन स्थानों पर केवल 'महिला' है, महिलाएं नहीं। कहने का अर्थ यह है कि उनकी संख्या बहुत कम है। दूसरी बात इस संदर्भ में यह भी है कि इन जगहों पर आम महिला नहीं है अपितु किसी स्थापित या पहुंच वाले परिवार की महिला ही बनी हुई है। यह आश्चर्य की बात है कि आबादी का आधा हिस्सा महिलाओं का ही हैं जिन्हें समानता की दृष्टि से अनदेखा डगर-डगर पर किया जा रहा है। उन्हें भी वे अधिकार व सुविधाएं मिलनी चाहिए जो पुरुष वर्ग को प्राप्त है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की बात यहां बताने लायक है। इसमें कहा गया है कि महिलाएं विश्व की पचास प्रतिशत वयस्क आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक विश्व के मजदूर वर्ग का करीब एक तिहाई भाग महिलाओं का है, लेकिन कार्य घंटों के कुल घंटों का दो तिहाई हिस्सा वे पूरा करती हैं। विश्व की आय के कुल भाग में से उन्हें सिर्फ दसवां हिस्सा ही मिलता है। महज एक फीसदी सम्पत्ति पर ही

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

महिला जागृति एवं वास्तविक स्थिति

□ सुभाष चन्द्र कर्खा

उनका अधिकार है।

महिला शिक्षा एवं जागृति से उसके रहन-सहन एवं व्यक्तित्व में बदलाव साफतौर पर झलकता है। यह बदलाव और किन सीमाओं को तोड़ेगा यह अभी स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता। लेकिन इस बदलाव से स्त्री-पुरुष संबंध अवश्य प्रभावित होंगे जो हमारी संस्कृति का एक मजबूत मेहराब 'परिवार' एक नयी शक्ति के रूप में उभर कर आएगा। इससे हमारे सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्य भी इस प्रभाव से बच नहीं पाएंगे। इस ओर सरकार व समाजशास्त्रियों को बचाव हेतु नए उपाय तलाशने होंगे। महिला ने घर की दहलीज से दफ्तर तक का लम्बा सफर तय किया है। इससे उसकी घर-परिवार की जिम्मेदारी में बढ़ोतरी अवश्य हुई है। दोनों जगहों पर काम एक साथ करने से उसकी समस्याओं में ईजाफा हुआ है। प्रायः यह कहा जाता है कि स्त्री के शिक्षित होने से उसकी शोषण की संभावनाएं क्षीण होने लगती हैं पर इस बात को नैना साहिनी, मधुमती शुक्ला व निर्भया ने झुठला दिया है। दिल्ली में जो कुछ निर्भया के साथ हुआ वह दिल दहलाने वाला वाक्या होने के साथ-साथ महिला सुरक्षा के लिए अभी तक बने कुल 48 कानूनों को भी संशय के घेरे में लाकर खड़ा कर एक नए विवाद में पहुंचा दिया है। दिल्ली में जंतर-मंतर व देश के अन्य भागों में विरोध स्वरूप उठी आवाज व सशक्त कानून बनाने का दबाव भी कुछ समय तक ही अपना प्रभाव बना पाया। उसके बाद भी काफी सामूहिक दुष्कर्म की घटनाएं विभिन्न जगहों पर महिलाओं के साथ हुई हैं। इससे जाहिर होता है महिला सुरक्षा कानून अभी तक कारगर हथियार के रूप में साबित नहीं हुआ है। एक और नया कानून बनाने से स्थिति सुधरने वाली नहीं। यह बात आज कानून अपने मुख से निकाल रहे हैं।

संसद एवं विधानसभाओं में महिलाओं के तैतीस प्रतिशत आरक्षण का मामला भी कभी-कभार ही मुखर होता है। शायद यह एक

प्रकार से पुरुष वर्चस्व को चुनौती लग रही है। तैतीस प्रतिशत आरक्षण (महिला) एवं अन्य आरक्षणों को जोड़ने के पश्चात् उसके पास पचास प्रतिशत स्थान ही बचते हैं जिससे उसे अपनी सदस्यता खोने का भय बराबर सता रहा है। ऐसी स्थिति में तो अपना आरक्षण लेने के लिए महिलाओं को ही आगे आना होगा।

महिलाएं आज जिस प्रकार की परिस्थितियों में अपने आपको स्थापित कर रही हैं वह एक ऐसी ऊंची चढ़ाई है जिस पर कदम-कदम पर लुढ़कने का भय बना हुआ है। कुछ हद तक तो महिला स्वयं भी इस लुढ़काव के लिए उत्तरदायी हैं। स्त्री की छवि को लेकर जो चलचित्र, धारावाहिक व उत्पाद विज्ञापन स्त्री देह को आगे रखकर अपनी कामयाबी का डंका बजाना चाहते हैं उनसे वे परहेज करें। यह महिला शोषण के नए हथकंडे हैं जो दिन-प्रतिदिन द्रोपदी के चौर की तरह बढ़ते नजर आ रहे हैं। बाजार आज अपने ग्राहकों व उपभोक्ताओं की नब्ज को पहचानने में माहिर हो जाने से इस प्रकार की मंशा महिला को लेकर वह जाहिर कर रहा है।

आजकल सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर दहेज प्रतिषेध अधिकारी की नियुक्ति जिला स्तर पर कर दी गई है। यह कार्य जिला समाज कल्याण अधीक्षक, दहेज प्रतिषेध अधिकारी की भूमिका में जिला समाज कल्याण अधिकारी और दो सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हैं। इनकी सक्रिय भूमिका से भी पीड़ित महिलाओं को तत्काल राहत मिलेगी।

महिलाओं के विरुद्ध बर्बरता केवल कानून एवं पुलिस बल का ही विषय नहीं बल्कि समाज के उदासनी रवैये से जुड़ा भी एक बड़ा प्रश्न है। यदि पुरुष का रवैया महिला के प्रति विधायी भावों से ओतप्रोत रहेगा तब हमें महिला सुरक्षा कानून में एक नए कानून को जोड़ने की कसरत नहीं करनी पड़ेगी। -अध्यापक (अंग्रेजी)

ग्रा.पो.हेतमसर, वाया-नूआ (झुन्धुनू)-333041
मो. 9460841575



सफलता का मंत्र

कैसे करें समय-प्रबंधन

□ मदन लाल पुरोहित

आज के आर्थिक एवं आधुनिक युग में सबसे बड़ी समस्या यदि कोई है, तो वह है समय का अभाव। वर्तमान में हमसे यदि हमारी सबसे बहुमूल्य कोई चीज खो गई है तो वह है-समय। हमारे पास समय नहीं है, शेष सब कुछ है, परंतु जो कुछ है, उसके होने न होने का अर्थ तो समय के साथ ही है। जब जिसकी जरूरत है तो उसे होना या मिलना चाहिए और उसी क्षण उसका मूल्य है, समय के पहले या बाद में कोई अर्थ नहीं होता है। परीक्षार्थी नियत समय में अपना परचा लिखता है, वक्ता अपना वक्तव्य तय समय सीमा में प्रस्तुत करता है। प्रस्तुतीकरण की कला एवं शैली की बात तो बाद की है, सबसे पहले निर्धारित समय में वह कार्य किया जाए, यही समहत्वपूर्ण होता है। यही समय का प्रबंधन है।

चीजों का मूल्य एवं महत्व तो होता है, परंतु उपयुक्त समय में यह और बढ़ जाता है समय का महत्व जानने-समझने वाले अपने समय को कभी भी बरबाद नहीं जाने देते। सफलता का एकमात्र यही राज और रहस्य है कि तय समय-सीमा के अंतर्गत निर्धारित कार्य को पूर्ण कर लिया जाए और यह तभी संभव है, जब हम अपने समय के प्रति पूर्ण रूप से सजग, सतर्क एवं सक्रिय होंगे। समय के साथ चलने वाला ही सफल होता है। सफलता समय के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। वर्तमान व्यवसाय की लंबी छलाँग समय के पंखों के संग लगाई जाती है। व्यवसाय ही नहीं, जीवन के सभी महत्वपूर्ण मोड़ समय के साथ मुड़ते हैं।

वक्त ही है, जो इन्सान को अनेक रंगों की रंग पट्टी दिखाता है। इसे देख कोई मुस्कराता है तो कोई रोता है। रौना और हँसना, दोनों ही बदलते वक्त का परिणाम है। वक्त हँसाता है, वक्त रुलाता है। समय के मर्मज्ञ बताते हैं कि समय ही बलवान होता है। उपलब्ध समय का जो उचित रीति-नीति के साथ सदुपयोग करना जानता है, वह सफल होता है। समय का सही नियोजन सफलता का मूल मंत्र है। यदि

समय का नियोजन ठीक ढंग से न हो सका तो संसाधन के अंबार में भी कुछ सार्थक हाथ नहीं लगेगा, परंतु नियोजन एवं प्रबंधन ठीक से बन सका तो संसाधन के अभाव में भी असंभव समझे जाने वाले महत्वपूर्ण कार्य किए जा सकते हैं। वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति यही कहता मिलेगा, अरे यार सब कुछ है किन्तु समय नहीं है। किसी विद्यार्थी से पूछ लो, किसी शिक्षक से पूछो, कार्यालय में काम करने वाले क्लर्क को पूछो, किसी अधिकारी से पूछो प्रत्येक व्यक्ति एक ही बात कहता मिलेगा समय नहीं है। यदि समय होता तो मैं शायद यह कर लेता, वह कर लेता, किन्तु ऐसा है कुछ नहीं। इस संसार में वही विजयी हुए हैं जिन्होंने वक्त को संभाला है, आज सबसे बड़ी समस्या वक्त को संभालने की है। हमसे वक्त नहीं संभलता, हम अस्त-व्यस्त रहते हैं। जो व्यस्त भी रहें, व्यवस्थित भी रहें वही समय का सदुपयोग करते हैं।

मुझे एक घटना याद आ गयी जो मैंने कही पढ़ी थी, “गांधी जी उन दिनों स्वतंत्रता आंदोलन में अति व्यस्त रहा करते थे। अनेक कार्यों के दबाव के बावजूद उन्होंने एक नियत समय तय कर रखा था, जिसमें कि वे प्रतिदिन गीता के एक श्लोक को याद करेंगे एवं उसका चिंतन करेंगे। आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह समय उनका दातुन घिसने का समय था। वे ब्रश नहीं करते थे, दातुन से अपने दाँत माँजते थे। जब तक वे मंजन करते थे, प्रतिदिन एक श्लोक याद कर लेते थे। यह क्रम उनका तक तक चलता रहा, जब तक कि गीता को उन्होंने पूरी तरह से कंठस्थ नहीं कर लिया। वे समय के बड़े निष्णात प्रबंधक थे। गांधी जी की यह घटना बताती है कि नियत समय में निरंतर किसी कार्य को करते रहने पर सफलता अवश्यभावी है।

समय का प्रबंधन एक प्रोफेशनल (व्यावसायिक) कार्य है। यदि समय का प्रबंधन है तो आप प्रोफेशनल हो सकते हैं। प्रोफेशनल होने का अर्थ है नियत समय पर किसी कार्य को उसके मूल्य के अनुसार श्रेष्ठता के साथ संपन्न

करना। वर्तमान समय की यही माँग है कि कम समय में कुशलता के साथ किसी कार्य को कर लिया जाए। यदि कार्य समय के साथ पूरा नहीं हुआ तो व्यावसायिक जगत में आप पिछड़ जाएँगे। इसके अलावा उस समय में ही कार्य की गुणवत्ता का भी ध्यान रखा जाता है। दोनों ही बातें व्यावसायिक जगत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यदि यह न हो तो कड़ी प्रतिस्पर्द्धा में टिक पाना सहज नहीं है। सफलता का मानदंड इन्हीं बातों पर निर्भर करता है। यदि आपको इस क्षेत्र में सफल होना है तो समय के संग चलना ही पड़ेगा, अन्यथा समय अपनी चाल के साथ आपको पीछे छोड़ते हुए बहुत आगे बढ़ जाएगा।

समय व्यावसायिक हित से ही नहीं जुड़ा है, बल्कि यह सभी के साथ अविच्छिन्न रूप से संबंधित है। जो समय की महत्ता समझते हैं और समय की माँग के अनुरूप स्वयं को ढाल लेते हैं, वे ही सफल और समझदार हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम अनैतिकता के प्रवाह के संग ढल जाएँ। ऐसा नहीं है। नैतिकता-अनैतिकता का प्रश्न तो स्वयं की विवेक दृष्टि पर आधारित है। जो नैतिक मूल्यों को अपनाकर समय के अनुसार उसका निर्वाह करता है, बात उसकी है। अनैतिक कार्य करने वाले अपने समय का मूल्य नहीं, अवमूल्यन करते हैं। बात तो मूल्यों एवं मानदंडों की है, जो सुनियोजित एवं कालक्रम के संग किए जाते हैं। समझदार व्यक्ति इस तथ्य को समझता है और समय रहते अपनी योजना को क्रियान्वित करके निश्चित हो जाता है। आलसी और प्रमादी समय की घोर बरबादी करते हैं। आलसी कर्म से और प्रमादी मन से घोर लापरवाह होता है। दोनों ही समय का दुरुपयोग करते हैं।

समय के संग चलना बुद्धिमत्ता है, परंतु एक ही समय में ऐसे अनेक कार्य आ जाते हैं और हरेक कार्य का अपना ही महत्व होता है। ऐसे में हम असमंजस में रहते हैं कि किस कार्य को पहले किया जाए और किसे बाद में। किसी को पहले तो करना ही पड़ेगा। एक साथ अनेक

कार्यों को क्रियान्वित नहीं किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य को वरीयता प्रदान करनी चाहिए। फिर उसके बाद वाले कार्य को करना चाहिए। अंग्रेजी में कहावत है “फर्स्ट थिंग फर्स्ट” अर्थात् प्रमुख कार्य सर्वप्रथम किया जाना चाहिए।

समय की पहचान बड़ी बात है। पहचान न होने के कारण ही तो समय की घोर बरबादी होती है, उसका अवमूल्यन होता है। यदि समय की पहचान हो जाए और उपयुक्त समय पर क्रियान्वयन किया जाए तो सफलता असंदिग्ध है, पर पहचान तभी होती है, जब अंतर में विवेक दृष्टि पैदा होती है। जो समय को पहचान जाता है, वही सच्चा बुद्धिमान है, यही तो सबसे बड़ी बात है।

घड़ी की सुई के साथ टिक-टिक करता वक्त, हर वक्त खिसकता ही रहता है, जो गुजर जाता है, उसकी पुनरावृत्ति नहीं होती है। वर्तमान में जो कुछ भी है, वह कभी भी ठहर नहीं सकता है, चाहे वह सुख के क्षण हों या फिर दुःख के, गुजरना तो दोनों को ही है। वक्त थमता नहीं है और न इसे थामा जा सकता है। इसको थामने का प्रयास करने वाले कहाँ गए, कोई उनको जानता तक नहीं हैं। अहंकारी वक्त को थाम लेने का दंभ भरता है, परंतु जगजाहिर है कि रावण, जरासंध जैसे शक्तिशाली राक्षस भी उसे थाम नहीं पाए, काल चक्र के घुमते पहिए में पिस गए। वक्त किसी का नहीं होता, पर अहंकारी कहता है कि वक्त मेरा है। हाँ, यह हो सकता है कि किसी कालखंड में उदित पुण्य के प्रभाव से सब कुछ अनुकूल हो रहा है।

समय का नियोजन जीवन के लिए अत्यावश्यक एवं अपरिहार्य है, इसलिए कहा जाता है कि जो समय के मूल्य को जानता एवं समझता है, वही जीवन को सही अर्थों में पहचान पाता है। जीवन का तात्पर्य ही है समय की पहचान एवं उसका सुनियोजन।

समय का मूल्य एवं महत्व इसके प्रबंधन से समझ में आता है। प्रबंधन का प्रारंभ कैसे किया जाए, यह बात बड़ी महत्वपूर्ण है। जीवनचर्या में यदि समय को समुचित ढंग से नियोजित किया जा सके एवं उसकी निरंतरता को बनाए रखा जा सके तो आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होते हैं।

इसका नियोजन रात्रि विश्राम के समय से प्रारंभ करना चाहिए। शाम को भोजन जल्दी लेकर जल्दी सोया जाए तो चार से छह घंटे की नींद के बाद प्रातःकाल उठकर सबसे पहले दिनभर की दिनचर्या का आकलन करना चाहिए। आकलन करते समय सबसे पहले उस कार्य को वरीयता देनी चाहिए, जिसको न करने से संकट खड़ा हो सकता है।

कार्य समयबद्ध तरीके से सबको निर्धारित तय सीमा के अंतर्गत सुचारु रूप से करना चाहिए। दिनचर्या को संतुलित एवं सुव्यवस्थित रखा जाए तो समय-प्रबंधन संभव है।

समय अत्यंत मूल्यवान वस्तु है। यह व्यर्थ ही न खोने पाए अतः अति सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक इसका उपयोग करना चाहिए। समय का समुचित ढंग से सदुपयोग करने वाले समझदार होते हैं और वे ही जीवन में उन्नति एवं प्रगति कर पाते हैं। अतः हमें समय का ध्यान रखना चाहिए और इसके एक-एक पल का उपयोग करना सीखना चाहिए। इसी से जीवन का अर्थ एवं मर्म निखरता है।

—प्रधानाध्यापक

रा.मा.वि., फतेहपुर, तह-संगरिया (हनुमानगढ़)

मो. 9460688160

इस माह का गीत

धरती धोरां री....

□ कन्हैया लाल सेठिया

धरती धोरां री-ओ ओ धरती धोरां री

आ तो सुरगां ने सरमावै
इण पर देव रमण ने आवै
इणरो जस नर-नारी गावै
धरती धोरां री।

सूरज कण-कण नै चमकावै
चंदो इमरत रस बरसावै
तारा निछरावळ कर जावै
धरती धोरां री।

काळा बादळिया घहरावै
बिरखा घुघरिया घमकावै
बिजली धरती ओला खावै
धरती धोरां री।

पंछी मधरा-मधरा बोहै
मिसरी मीठे सुर स्थूं घोळै
झीणो बायरियो पम्पोळै
धरती धोरां री।

इण रो चितौड़ी गद लुंठो
ओ तो रणवीरां रो खूंटो
इण रो जोधाणो नौ कूंटो
धरती धोरां री।

ईण रो बीकाणो गरबील्लो
ईण रो अलवर जबर हठील्लो
ईण रो अजयमेर भङ्कील्लो
धरती धोरां री।

जैपर नगर्यां री पटराणी
कौटा, बूंदी कद अणजाणी
चम्बल कैवै इणरी कांणी
धरती धोरां री।



महिला सशक्तिकरण

महिलाओं की जागरूकता ही आज की अनिवार्यता

□ जिनेन्द्र कुमार जैन

‘महिलाओं की जागरूकता ही आज की अनिवार्यता है।’ यह कथन अपने आप में युक्ति संगत है। जागरूक महिला एक अच्छे, सुसमृद्ध और सुसज्जित समाज की नींव का पत्थर है। यदि महिलाएं जागृत होगी तो उनकी संतान निश्चित रूप से जागृत होंगी और उनसे बनने वाला परिवार व समाज एक अच्छा समाज होगा। इसलिए अनादिकाल से ही भारतीय संस्कृति में महिलाओं का मुख्य स्थान है। इनको पुरुषों से भी ज्यादा सम्मान दिया है। इनको अधिक सम्मान देने के उद्देश्य से ही पुरुषों के नाम से पहले स्त्रियों का नाम जोड़ा जाता है जैसे—सीताराम, राधाकृष्ण आदि—आदि।

सिर्फ यह ही नहीं शास्त्रों में भी “यंत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः” की बात कही गई है। प्राचीनकाल की गागी और मैत्रयी का नाम भी आज उनकी जागरूकता के कारण ही जाना जाता है। जनश्रुतियों, दंत कथाओं और प्राचीन इतिहास से ज्ञात होता है कि महाकवि कालिदास अपनी पत्नी विद्योत्तमा की शिक्षा से ही विद्वता को प्राप्त हुए थे। इस प्रकार सृष्टि के प्रारम्भ से ही हमेशा नारी ने कभी माँ बनकर तो कभी बहन बनकर, कभी पत्नी बनकर तो कभी भाभी बनकर, कभी दासी बनकर तो कभी गुरु बनकर पुरुष को हर मुश्किल से बाहर निकाला है।

परन्तु बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि मुगलकाल से ही नारियों की स्थिति बड़ी दयनीय होती गई। महिलाओं को घर की चारदिवारी में कैद करके रखा गया, उन्हें मात्र भोग और मनोरंजन की वस्तु समझा गया। पुरुष ने नारी से देह व्यापार करवाकर धन कमाना अपना अधिकार समझ लिया। वहीं कुछ नारियों ने चंद चाँदी के टुकड़ों की खातिर अपना सब कुछ दांव पर लगाकर सम्पूर्ण नारी समाज को ही कलंकित कर दिया। कलंकित कर दिया अपने उस मातृत्व भाव को जिसके लिए कई इतिहास लिखे गये। द्रौपदी ने जहां अपने अहम् की तुष्टि के लिए महाभारत करवा दिया वहीं विपासा बसु एवं मल्लिका जैसी महिलाओं के अश्लील

नृत्य, वस्त्र व गानों ने समाज को हजारों फीट गहरे गर्त में धकेल दिया। परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी समाज वर्तमान परिस्थितियां बदली है। इसका मुख्य कारण महिलाओं की जागरूकता है और इसकी बहुत आवश्यकता भी है।

महानुभावों महिला और पुरुष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं जब दोनों पहिये तैयार होंगे दोनों पहिये सक्रिय भागीदारी निभायेंगे तभी यह गाड़ी जीवन की सड़क पर चल सकेगी। महिलाओं की जागरूकता इसलिए भी आवश्यक है कि बच्चों की पहली शिक्षिका स्वयं उसकी माँ है। उसका लालन-पालन और प्राथमिकता शिक्षा उसी के सानिध्य में होना है जब नारी शिक्षित होगी तभी वह अपने परिवार और समाज का उत्थान कर सकेगी।

इसके अतिरिक्त आज प्रत्येक पुरुष की घृणित दृष्टि, शोषण की मानसिकता और उसके अत्याचार से बचने के लिये महिलाओं की जागरूकता अति आवश्यक हो गई है। गलघोटू प्रतियोगिता के इस युग में जारी को विभिन्न दोहों, कहावतों, मुहावरों के द्वारा अपने गरिमामयी पद से नीचे गिराने वाले लोगों से एवं ऐसी विषय परिस्थितियों से निजात पाने के लिए आज की नारी से चेतना अनिवार्य है।

एक समय था जब जननी और जन्मभूमि को स्वर्ग के समाज महान समझा गया था। आज भी नारी का स्थान उतना ही आदरणीय और पूजनीय हो सकता है बस आवश्यकता है अंगारे के ऊपर जमी हुई राख को हटाने की, आवश्यकता है अपनी सुसुप्त अवस्था को त्यागकर सक्रियता दिखाने की, आवश्यकता है अपने आप को नींद से झकझोरने की। यदि महिलाओं ने यह सब किया तो वह दिन दूर नहीं जब एक बार फिर महिलाएं अपने गौरवमयी इतिहास को प्राप्त कर सकेंगी और समाज को नई दिशा दे सकेंगी क्योंकि जागरूक नारी ही जागरूक और जिन्दा समाज की रचना कर सकती है।

—अध्यापक, रा.बा.उ.मा.वि., फूलियाकलां (भीलवाड़ा)
मो. 9982832730

एक बड़े भाई की पाती

प्रिय शिक्षक बन्धुओं

सादर सस्नेह वन्दे।

मैं शिविरा से लगभग

48 वर्षों से जुड़ा हुआ हूँ और इसको पढ़ता रहा हूँ और इसके लिये लिखता भी रहा हूँ। दूरदृष्टा निदेशक स्वर्गीय श्री अनिल बोर्दिया के स्वप्न को साकार



किया वरिष्ठ शिक्षाविद भाई श्री शिवरतन थानवी ने और शिविरा का कारवां चल पड़ा, उन्नत होता रहा और कुछ ही समय में ‘नया शिक्षक’ (Teacher Today) जैसी विशिष्ट द्विभाषी पत्रिका भी शिक्षा जगत को समर्पित हुई। शिविरा की सरिता शैक्षिक जागरूकता का संदेश लिये स्कूलों और शिक्षकों तक पहुंचती रही। शिक्षक इससे जुड़े भी पाठक और लेखक दोनों ही रूपों में कुछ उतार-चढ़ाव के बाद गत वर्षों से शिविरा रूप एवं गुणवत्ता में उत्तरोत्तर प्रशंसनीय होती जा रही है और हम सभी गर्व कर सकते हैं कि राजस्थान शिक्षा विभाग की यह पत्रिका देश की सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक पत्रिका है।

शिक्षण एवं शिक्षा, परीक्षा, पाठ्यक्रम संबंधित लेखों के अतिरिक्त आज की शिविरा समग्र परिवेश, समाज एवं विशिष्ट विभूतियों से सेतु का कार्य कर रही है। विभिन्न दिवसों व पर्वों का आयोजन—प्रयोजन, विशिष्ट स्मरणीय महापुरुषों की जयन्ती पर उनको जीवन चर्चा तथा विशिष्ट प्रतिभाओं की उपलब्धियों को भी उजागर करती है।

शिविरा का ही एक और आयाम है शिक्षक दिवस पर प्रकाशित होने वाली विभिन्न विधाओं एवं विषयवस्तु से जुड़ी पुस्तकें गत लगभग 47 वर्ष से निरन्तर प्रकाशित हो रही हैं। इनमें शिक्षकों की रचनायें ही छपती हैं। यह भी राष्ट्र में एक मात्र राजस्थान शिक्षा विभाग का ही प्रयास है। शिविरा शिक्षकों के लिये एक आदर्श गाइड है, पढ़ने-पढ़ाने के लिये और आपकी कलम से निःसृत विचारों को प्रसार देने के लिये शिविरा उत्सुक है, कटिबद्ध है, आप आमंत्रित हैं।

अन्त में मेरा यही निवेदन है कि केवल अत्यल्प वार्षिक शुल्क की शिविरा और ‘नया शिक्षक’ पत्रिकाओं के ग्राहक सभी शिक्षक क्यों नहीं बनते ? सबको ग्राहक बनाने का उद्देश्य आर्थिक न होकर केवल यही है कि आपके पास शिविरा पहुंचेगी तो आप अपनी शिविरा को अवश्य पढ़ेंगे। शिविरा ने मुझे बहुत कुछ दिया है, राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के अतिरिक्त भी और इसी अनुभव के आधार पर मुझ बड़े भाई की विनम्र सलाह है कि आप शिविरा के नियमित पाठक बनें, ग्राहक बनें और बनायें। शिविरा आपकी है, आपके लिये है इसे अपनायें, इससे लाभान्वित हों, बस, इन्हीं शब्दों के साथ।

—रूपनारायण काबरा

ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर, जयपुर

महिमा-ए-महिला

व्यक्तित्व व क्षमताओं की धनी भारतीय महिलाएँ

□ रामगोपाल 'राही'

महिला सशक्तिकरण की प्रतिध्वनि व महिला आरक्षण की गूँज के साथ बात अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की जिसकी शुरुआत संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा 8 मार्च, 1975 को हुई। मगर हम बात करेंगे, इससे भी पूर्व व्यक्तित्व की धनी रही विश्व प्रसिद्ध भारतीय महिलाओं की, जिन्होंने अपने उत्कर्ष व व्यक्तित्व की छाप-देश व दुनियां में छोड़ी। दुनिया भर में प्रसिद्ध इन भारतीय महिलाओं के उत्कर्ष व व्यक्तित्व की गाथा, वस्तुतः भारत को गौरव गाया है। इसी के साथ-साथ-हम वर्तमान में भी अपनी दक्षता योग्यता, प्रतिभा से हर क्षेत्र में आगे बढ़ती, अपने उत्कर्ष से व्यक्तित्व की छाप छोड़ती क्षमताओं की धनी इतिहास रचती महिलाओं की बात करेंगे चर्चा करेंगे।

उल्लेखनीय अंग्रेजों के आगमन से आधुनिक युग माना जाता है बात तभी से, उसी काल से बात व्यक्तित्व की धनी सरोजनी नायडू (1879-1949) की। हैदराबाद में जन्मी सरोजनी नायडू को भारत कोकिला कहा जाता था। उल्लेखनीय यह अंग्रेजी में लिखने वाली भारतीय महिला साहित्यकार भी (राजनीति में प्रखर व्यक्तित्व की धनी सरोजनी नायडू ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया-यह अखिल भारतीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष थी। स्वतंत्रता उपरान्त-यह उत्तर प्रदेश की प्रथम महिला गवर्नर थी। बात एक और प्रखर व्यक्तित्व की धनी (1900-90) विजय लक्ष्मी पण्डित की जानी-मानी महिला हस्ती विजय लक्ष्मी पण्डित ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था। यह पंडित जवाहर लाल की बहिन थीं। विजय लक्ष्मी पण्डित भारत में पहली महिला मंत्री थी, जो 1936 में उत्तर प्रदेश में मंत्री बनीं। यह भारत की प्रथम महिला हाई कमीशनर भी रहीं (यू के 1956-62) में तथा इससे पूर्व 1949 से अमरीका में भारत की राजदूत रहीं। इतना ही नहीं व्यक्तित्व की धनी विजय लक्ष्मी पण्डित संयुक्त राष्ट्र महासभा की प्रथम महिला अध्यक्ष भी रहीं। बाद में महाराष्ट्र

की राज्यपाल तथा संसद सदस्य भी रहीं।

बात 1889 में कंपूरथला शाही परिवार में जन्मी राजकुमारी अमृत कौर की यह स्व. प्रधानमंत्री जवाहर लाल जी की प्रथम सरकार में कैबिनेट मंत्री रही थी। अब बात प्रखर व तीखे व्यक्तित्व की धनी 1908 में अंबाला हरियाणा में जन्मी सुचेता कृपलानी की। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रखर सेनानी थीं। उल्लेखनीय देश में-प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनने का ऐतिहासिक रिकार्ड सुचेता कृपलानी के नाम ही है। यह 1962 में कानपुर (उ.प्र.) से विधान सभा का चुनाव जीती थी और मुख्यमंत्री बनी थी। आजादी से पूर्व सुचेता कृपलानी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवक्ता थी। उल्लेखनीय यह जाने माने हस्ताक्षर आचार्य-कृपलानी की पत्नी थी। चलो अब बात करते हैं व्यक्तित्व की धनी अरूणा आसफअली की (1909-96) यह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रखर सेनानी थी। उल्लेखनीय 1958 में यह दिल्ली की मेयर चुनी गई थी। बाद में यह दो-तीन दशकों तक समाज सेवा में रही। सामाजिक विचार धारा के अन्तर्गत प्रख्यात समाज सेविका समझी जाती थी। बात कला संस्कृति के क्षेत्र में कमला देवी चटोपाध्याय (1903-1988) की यह भारतीय संस्कृत-कला-रंगमंच और साहित्य के क्षेत्र में प्रमुख हस्ताक्षर व राजनीति और समाज सेवा में भी अधिक सक्रिय रही थी। उल्लेखनीय यह मेगसेसे पुरस्कार क्लासिकल गायिका सुब्बालक्ष्मी एम.एस. (1919-2005) की इस संगीत की महान हस्ती को 1974 में मेगसेसे पुरस्कार मिला और भारत रत्न भी मिला था। इसी समयावधि में साहित्य क्षेत्र में व्यक्तित्व की धनी अमृत प्रीतम की यह प्रसिद्ध भारतीय पंजाबी कवियत्री रही, इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था।

अब बात देश व दुनिया में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध-लोक प्रिय पददलित मानव की पक्षधर-दूरदर्शी-राजनीतिज्ञ इन्दिरा गाँधी की। 19 नवम्बर 1917 को इलाहाबाद में जन्मी इंदिरा जी

भारत की पहली प्रधानमंत्री बनी। इंदिरा जी ने अपनी कार्य क्षमता का वह परिचय दिया कि इतिहास बन गया। दृढ़ संकल्प शक्ति, गहन आत्म, विश्वास, लक्ष्य के प्रति अटूट निष्ठा सतत क्रियाशीलता के बल पर अपनी हार को भी जीत में बदल देनी वाली थी। 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध ने दृढ़ता का परिचय दिया और जीता। युद्ध में शानदार विजय के साथ बांग्ला देश का उदय हुआ। अपने में इस्पात जैसी क्षमताओं से इन्दिरा जी पूरे भारत के दिल की साम्राज्ञी बन गईं। देश के उत्तरी भाग में इन्हें 'माँ' दक्षिण में अम्मा कह कर लोग अपनी आत्मीयता प्रकट करते थे। ग्रामीण महिलाएं इन्दिरा को शक्ति का अवतार समझने लगी थी। सरोजनी नायडू ने कहा था इन्दिरा नए भारत की आत्मा है। यह 24 जनवरी, 1966 को सात सौ वर्ष बाद (भारत में महिला शासक रजिया सुल्ताना के बाद 1966 से 1977 तक तीन बार और 1980 से चौथी बार देश की प्रधानमंत्री बनी थी। इनकी सफलताओं में उत्थान पतन का नाटकीय मोड़ आता रहा। अमरीका में हुए एक सर्वेक्षण के अनुसार वह विश्व की सर्वाधिक लोक प्रिय महिला थी। इन्दिरा जी के शासन में ही भारत परमाणु विस्फोट क्षमता रखने वाला विश्व में छठा देश बना था। इनके शासनकाल में कई ऐतिहासिक फैसले हुए देश की प्रगति हुई थी। इसके जादुई व्यक्तित्व के करिश्में से देख कर तो एक बार समस्त विश्व दंग रह गया, परमाणु विस्फोट, क्षमता व शक्ति देख संसार चौंक गया था। राजनैतिक सूझ-बूझ, संगठन कौशल, दूर दर्शिता, अदम्य उत्साह-साहस, अडिग आत्मविश्वास और गहन मानव प्रेम आदि गुणों के कारण श्रीमती इन्दिरा गाँधी को 1972 में देश के सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' से विभूषित किया गया था। इतिहास रचने वाली महिलाओं का सिलसिला जारी रखते हुए बात श्रीमती प्रतिभा पाटिल की-यह जुलाई 2007 में भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनी। राष्ट्रपति बनने से पूर्व यह राजस्थान की राज्यपाल रही,

इससे भी पूर्व महाराष्ट्र की सरकार में कैबिनेट मंत्री रही। इनकी राजनैतिक केरियर की शुरुआत 1962 से मानी जाती है। प्रतिभा पाटिल सामाजिक कार्यकर्ता व अधिवक्ता भी रही।

बात वर्तमान में इतिहास रचती महिलाओं की हो चुकी, इसी के चलते वर्तमान में सर्वाधिक प्रसिद्ध, विश्व भर में जानी-जाने वाली, भारतीय नागरिकता ले भारत में बसी श्रीमती सोनिया गाँधी की। सोनिया गाँधी जब से भारत आयी भारत की हो कर रही। यह स्व. प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की हत्या के कई दिनों बाद राजनीति में आयी। सत्ता सुख का त्याग कोई सोनिया गाँधी से सीखे। अपने दल की निर्विवाद अध्यक्ष, घटक दलों की चेयर पर्सन, संसदीय दल की अध्यक्ष, सोनिया गाँधी ने घटक दलों की सर्व सम्मत राय के बावजूद प्रधानमंत्री पद का त्याग कर दिया। यह देश की राजनीति में महत्वपूर्ण महिला नेता समझी जाती है। अपने राजनैतिक केरियर से यह दुनिया भर में जानी जाती है। महिला उत्कर्ष के सिलसिले में बात शीला दीक्षित की यह तीन बार दिल्ली की मुख्यमंत्री नहीं।

वर्तमान में और कुछ राजनीति में इतिहास रचने वाली महिलाओं में बात जय ललिता की। यह तमिलनाडु की दूसरी बार मुख्य मंत्री बनी। यह फिल्मों से राजनीति में आयी अपने व्यक्तित्व से मुख्यमंत्री बनी। इसी के साथ बात मायावती की। यह सर्वविदित है और निर्विवाद भी अपनी पार्टी की प्रमुख सुश्री मायावती ने दलित राजनीति में अच्छा खासा मुकाम हासिल किया है। यह उ.प्र. की मुख्य मंत्री रहती आयी हैं। 2007-08 के दौरान सब से ज्यादा कर भुगतान करने वाली राजनेता रही है। बात सुश्री ममता बनर्जी की संघर्ष व उत्कर्ष के बलबूते पर राजनीति में प्रखर व्यक्तित्व के साथ वक्त की फिजा बदल सुश्री ममता बनर्जी बंगाल की मुख्यमंत्री बनी।

महिलाओं में श्रीमती सुषमा स्वराज दिल्ली की मुख्यमंत्री रही। यह वाजपेयी जी की सरकार में कैबिनेट मंत्री भी रही। यह संसद सदस्य, कुशल वक्ता तथा विपक्ष की नेता है।

बात वसुन्धरा राजे की, अपने व्यक्तित्व के दबदबे से प्रदेश अध्यक्ष रहीं राजे। डगर-डगर, नगर-नगर पहुँच ऐतिहासिक जीत हासिल

कर राजस्थान की दूसरी बार मुख्यमंत्री बनी है। यह भी पहले केन्द्र में कैबिनेट मंत्री रही थी। वसुंधरा राजे नाम नारी शक्ति व साहस का परिचायक है। आप कुशल प्रशासक, नीति निर्माता एवं क्रियान्विति में कुशल है। उनके नेतृत्व में प्रदेश के सुनियोजित विकास का पथ निश्चय ही प्रशस्त होगा। इसी कड़ी में एक नाम सुश्री ऊँमा भारती का। यह म.प्र. की मुख्य मंत्री रही, तथा केन्द्र में कैबिनेट मंत्री भी रही। इन सभी के साथ व्यक्तित्व धनी विश्व प्रसिद्ध भारतीय महिलाओं में जिन्होंने राजनीति के चलते, विशेष खास मुकाम बना इतिहास रचा। बात मीरा कुमार की, मीरा कुमार 1985 में भारतीय विदेशी सेवा छोड़ राजनीति में आयी। संसद सदस्य व कैबिनेट मंत्री रही मीरा कुमार इतिहास रच प्रथम महिला, लोकसभा अध्यक्ष बनी। इसी कड़ी में याद हो राज्य सभा में नजमा हेपतुल्ला जनवरी 1985 से जनवरी 1986 तक तथा पुनः 1988 से जुलाई 2004 तक राज्य सभा की उपाध्यक्ष रही है। इस पद पर पहुँचने वाली यह पहली महिला है। उल्लेखनीय राजनीति में आई इन सभी महिलाओं ने औरत की प्रतिभा और उसके होने की जरूरत को देश व दुनिया को दिखा दिया, सफल हुई और इतिहास रचा।

इससे अलग देखे राजनीति से परे कुछ और सफल महिला की चर्चा में बात इलाभट्ट की महिलाओं की स्वरोजगार योजना में इलाभट्ट का अत्यधिक सहयोग रहा। निर्धन महिलाओं की ट्रेड भूमियन में, यह मील का पत्थर समझी जाती है। यह 1977 में मैगसे से पुरस्कार से सम्मानित हुई।

भारतीय समाज में जाना पहिचाना नाम है किरण बेदी का, यह भारत में प्रथम आई.पी.एस. अधिकारी रही तथा एशियाई महिला टेनिस की पूर्व चैम्पियन भी रही। मेगसेसे पुरस्कार से सम्मानित हुई। मेघा पाटेकर प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, पर्यावरणविद् नर्बदा बचाओ आंदोलन की नेता है। देश व दुनिया में पहचान रखने वाली मेघा पाटेकर 1991 में राइट लाइबली हुड पुरस्कार से सम्मानित हुई। बात मानव कम्प्यूटर तथा गणित की जादूगरनी शकुन्तला देवी की। शकुन्तला देवी को अल्प समय में लम्बी गणना करने में दक्षता से गिनीज

बुक में स्थान दिया है। सुन्दरता में देश की महिलाएँ पीछे नहीं, सौन्दर्य की धनी सुष्मिता सेन प्रथम भारतीय महिला सुन्दरी मिस यूनीवर्स बनी, इसी क्रम में ऐश्वर्या राय मिस वर्ल्ड बनने वाली दूसरी भारतीय सुन्दरी रही। दोनों ही हालीवुड अभिनेत्री बनी। आवाज की दुनिया में स्वर कोकिला लता मंगेशकर, गायिका आशा भोंसले का नाम आज भी देश व दुनिया में मुखर है और रहेगा। भारतीय महिला धावक पी.टी. उषा उड़न परी के नाम से जानी जाती है। यह निर्विवाद रूप से एशिया की तेज धावक मानी गई है। 1984 में ओलंपिक से सेकिंड के सोवें हिस्से से पदक पाने से वंचित रही थी।

भारतीय महिलाओं की क्षमताओं में कभी नहीं भारत में अमरीका से भी अधिक महिला डॉक्टर, सर्जन, वैज्ञानिक और प्रोफेसर है, वस्तुतः भारत में दुनिया में सबसे अधिक प्रोफेशनल तौर पर महिलाएँ हैं। अधिक न सही पर कई प्रशासनिक अधिकारी है व न्यायाधीश भी हैं। कई क्षेत्र है जिनमें महिलाओं की अपनी छवि है। समझा जा सकता है, भारतीय बालाओं, महिलाओं को अवसर मिले वह बहुत कुछ करके दिखा सकती है। वे प्रेमलता, संतोष यादव, बछेन्द्री पाल की तरह एवरेस्ट छू सकती है। मैरी काम की तरह मैडल जीत सकती है। वे शोभना भरतिया, नीता अम्बानी, किरणशां मजूमदार, प्रिया सिंह, चंदा कोचर की तरह बिजनेस के आकाश में छा सकती है। सरकारी-गैर सरकारी विभाग व संस्थानों में शीर्ष पद पा सकती है।

व्यक्तित्व की धनी भारतीय महिलाओं में अब बात थोड़ी हट के। बात करे भारतीय मूल की महिला कल्पना चावला की। याद रहे-कल्पना चावला स्पेश में जाने वाली भारतीय मूल की प्रथम महिला है। जिसके जज्बे से भारत गौरवान्वित हुआ, समझा जा सकता है। अब जो बात होगी, वह हट के नहीं एक तरह से भारत की ही समझना होगा।

बात करेंगे विदेशी मूल की होते हुए भी नागरिकता ले भारत में आ बसी और भारत की ही हो के रही। भारत को ही समर्पित हो के रही। ऐसी भारतीय महिलाएँ अधिक नहीं बहुत कम है। बात करे ऐनिबेसेंट की ऐनीबेसेंट वह भारती महिला है जिसने यहाँ विशिष्ट कार्य किए समाज सेवा की। यह महिला भारत को पूरी तरह

प्रेरणा स्रोत

इतिहास लेखन के शिखर डॉ. एस.एल. नागोरी

□ डॉ. दिनेश विजयवर्गीय

समर्पित रही। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की समर्थक तथा प्रखर स्वतंत्रता सेनानी थी, शिक्षा विद, सामाजिक कार्यकर्ता तथा समाज सुधारक थी। होमरूल लोग को स्थापित एनीबेसेंट ने ही किया। यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष भी 1917 में रही। एनीबेसेंट ने ही स्काउट एसोशियेशन और मिमोसो फिल सोसायटी ऑफ इण्डिया की भी स्थापना की। इसी के चलते बात मदर टेरेसा की सात समुद्र तेरह नदियों को पारकर अल्बानिया से भारत आयी। नागरिकता ले सेवा में तन्मय यही की होके रह गयी। करून और सेवा की मूर्ति बनकर मदर टेरेसा ने दुनियाँ में देश का गौरव बढ़ाया।

मानव सेवा को समर्पित मदर टेरेसा दुनियाँ में भारत की पहचान बनी। कलकत्ता में इस समय कई नवजात शिशु सत्यकामों को जन्मते ही कूड़े के ढेर में फेंक दिया जाता था। आधुनिक अप्सराओं की कोख से अनेक शिशु शकुन्तलाएँ जिन्हें अवैध सन्तानें कहकर फुट पाथों, चौराहों, पुलों के नीचे डाल दिया जाता था। मदर ने उनको ममता का आश्रय दिया। मदर ने कोढ़ियों की भी सेवा और भी रोगियों को आश्रय दे सेवा की। मदर टेरेसा के ममता मय आंचल का प्रसार भारत वर्ष तक ही सीमित नहीं देश विदेश में भी उनका नाम व काम रहा। मदर ने विश्व को दिखा दिया मानवता जाति, धर्म देश की सीमाओं में बँधी नहीं रहती।

मदर को देश विदेश से कई पुरस्कार उपाधियाँ मिली। विविध पुरस्कारों से प्राप्त धनराशि मदर निर्लिप्त भाव से सेवा कर्म में लगाती थी। कई चिकित्सालय कमर्शियल स्कूल, तकनीकी विद्यालय मदर ने स्थापित किए। इनके सेवा कर्म यज्ञ में कितना धन खर्च होता था अनुमान कठिन है। दरिद्र नारायण की सेवा में समर्पित ममता की मूर्ति मदर टेरेसा को 1979 में नोबल शांति पुरस्कार मिला। इस पर मदर ने कहा 'यह तो ईश्वर की कृपा का दान है मैं इसे इसलिए स्वीकार करती हूँ कि मुझे दरिद्रों व असहायों की सेवा की सेवा करनी है। 1980 में भारत सरकार ने मदर को अपने सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न से सम्मानित किया।

व्यक्तित्व की धनी विश्व प्रसिद्ध भारतीय महिलाओं की गौरव गाथाओं का इतिहास है। देश इन्हें हमेशा याद रखेगा।

—मौहल्ला गणेशपुरा, वार्ड 4/5, लाखेरी-323615 (बूंदी)
मो. 08239604477

घ डी के पेण्डुलम पर पल-पल फिसलते समय को भला कौन रोक पाया है। लेकिन हाथ से छूटते समय को जिसने पहिचान कर कुछ कर गुजरने का विचार किया है, वह लाभान्वित होने की चाह में सदा ही आगे बढ़ा है। व्यक्ति जब समय का सम्मान करता है तो समय भी उसके लिये मंगल गीत गाता है। समय का स्वस्थ उपयोग ही व्यक्ति के जीवन को मूल्यवान एवं लोकप्रिय बना देता है।

समय की इस चुप-चुप गति को अन्तर मन से पहचाना है बूंदी के इतिहासविद् डॉ. एस.एल. नागोरी ने। उन्होंने वर्ष 2010 तक इतिहास की 121 पुस्तकें लिख, लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स में स्थान पाया। उन्हें अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट नार्थ कैरोलिना के अध्यक्ष द्वारा दिसम्बर, 03 में विश्व के 125 इतिहासकारों की सूची में सम्मिलित किया गया। वे इण्डिया बुक ऑफ रिकार्ड से भी सम्मानित हो चुके हैं।

बूंदी के राजकीय कन्या महाविद्यालय से सेवा निवृत्त हुए इतिहास व्याख्याता डॉ. नागोरी अपनी लेखन क्षमता का उपयोग करते हुए इतिहास विषय की 142 पुस्तकें लिखकर शिखर पर हैं।

इतिहास पर इतिहास रचने वाले डॉ. एस.एल. नागोरी का विद्यार्थी जीवन संघर्ष करते बीता। उनका जन्म 4 जुलाई, 49 को चित्तौड़ जिले के गाँव डूंगला में एक गरीब जैन परिवार में हुआ। अभावों से घिरी परचूनी की दुकान संचालित कर परिवार का गुजारा करने वाले पिता का साया भी जल्द ही उठ गया। ऐसे में माँ ने ही परिवार का उत्तरदायित्व संभाला।

गांव में मिडिल स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर हायर सैकण्डरी तक की शिक्षा चित्तौड़गढ़ में प्राप्त की। आगे की शिक्षा के लिये उदयपुर के रात्रिकालीन संचालित श्रमजीवी महाविद्यालय में अध्ययन प्रारंभ किया। दिन के समय अपना शिक्षण खर्च निकालने के लिए नागोरी ने एक रेडीमेड की दुकान पर तथा एक बीमा कम्पनी में

कार्य किया। रात को देर तक लगन से पढ़ाई कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते रहे। अलसाये पन की सुविधा भरी दस्तक को उन्होंने कभी नहीं सुना और उदयपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. इतिहास विषय में करने पर स्वर्ण पदक से नवाजा गया।

उदयपुर कलक्टर कार्यालय में बाबू की नौकरी भी मिली। इससे उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कुछ अच्छी सुविधा मिली। श्रमजीवी कॉलेज के अपने एक शिक्षक की प्रेरणा से बाबू की नौकरी छोड़ विश्वविद्यालय में शोधार्थी के रूप में वह अध्यापन से जुड़ गये। “अलवर राज्य का इतिहास” विषय पर पीएचडी की। सन् 1976 से 2009 तक राज्य के विभिन्न कॉलेजों में इतिहास के व्याख्याता के रूप में अध्यापन कराया।

डॉ. एस.एल. नागोरी की सन् 1976 में पहली पुस्तक “विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास” प्रकाशित हुई। इसके बाद छात्र-छात्रा उपयोगी ऐसी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनकी मदद से विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले प्रतियोगियों को मदद मिलने लगी। डॉ. नागोरी की विशेष पुस्तकें रहीं— भारतीय इतिहास कोश, भारत के मुस्लिम स्वतंत्रता सेनानी, एनीबेसेंट एवं भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगनाएं, 1857 के क्रान्तिकारी तथा भारतीय धर्म और दर्शन।

डॉ. नागोरी अब भी लेखन के प्रति समर्पित भाव से जुड़े हुए हैं। डॉ. नागोरी का मानना है कि यदि लक्ष्य के प्रति लगन व समर्पण भाव हो तो गरीबी कभी आगे बढ़ने में आड़े नहीं आती, अपितु इन्द्रधनुषीय रंगों वाला सुनहरा भविष्य हमारा स्वागत करने हेतु हमारी प्रतीक्षा करता रहता है। इसका राज केवल और केवल हमारी मेहनत और कार्य के प्रति निष्ठा और मंगल भावना में निहित है और इस राज को शिक्षक से बेहतर और कोई नहीं समझ सकता।

—215, मार्ग-4, रजत कालोनी,
बूंदी-323001 (राज.)

राजस्थान दिवस विशेष

‘धरती धोरां री’ के रचयिता की जीवनाधारित सृजन यात्रा

□ डॉ. उषा किरण सोनी

कविता हमारे अवचेतन संस्कारों की भूमि पर रची जाती है। अवचेतन संस्कारों का समूह ही संस्कृति है जो जीवन की गति के साथ इतिहास की दृष्टि भी निर्धारित करता है। इस प्रकार कविता संस्कृति की अद्यभूमि से उदित होती है और इसी को अभिव्यक्त करती है। इसे इस प्रकार समझें—

‘गर फिरदौस बररूए ज़मीं अस्त,
हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त’

यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है—पहली बार कश्मीर के बेपनाह सौंदर्य को देख बरबस ही बादशाह जहाँगीर के मुँह से ये पंक्तियाँ निकल पड़ी थीं। जहाँ एक बादशाह को कश्मीर की वादियों में स्वर्ग दिखा वहीं कवि सेठिया की दृष्टि को मरुधरा के धोरों का सौंदर्य स्वर्ग से भी मोहक लगा और वे कह उठे—

‘धरती धोरां री
आ तो सुरगां नै सरमावै
ई पर देव रमण नै आवे
ई रो जस नर—नारी गावै
धरती धोरां री।’

मरुधरा की सोनलिया रेत के धोरों की धरती के मोहक सौंदर्य के समक्ष स्वर्ग का सौंदर्य भी लज्जित होता है। जिस पर मोहित हो देवता भी इसी धरती पर रमण करने आते हैं और नर—नारी इस रंगीली धरती का यशगान करते नहीं अघाते। जिस प्रकार एकमात्र ‘वंदे मातरम्’ गीत बंकिमचंद्र को, ‘जन गण मन’ रवींद्रनाथ टैगोर को तथा ‘सारे जहाँ से अच्छा’ अल्लामा इकबाल को अमर करने के लिए पर्याप्त है उसी प्रकार एकमात्र ‘धरती धोरां री’ गीत महाकवि को अमरत्व प्रदान करता है। संभवतः इसीलिए बालकवि बैरागी ने कहा है—‘यदि राजस्थान प्रांत न होकर राष्ट्र होता तो सेठिया जी का यह गीत वहाँ का राष्ट्रगीत होता और सेठिया जी होते उस राष्ट्र के राष्ट्रकवि।’ लेखनी के धनी कन्हैयालाल सेठिया की मातृभूमि के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा

को दर्शाती निम्नांकित पंक्तियाँ प्रत्येक मरुवासी को गौरव और रोमांच से भर देती हैं—

‘सुरसत मैं पूजी नहीं, नह लक्ष्मी स्थूँ हेत
मैं माथे ऊँच्याँ फिर्यो, जलमभौम री रेत।’

मात्र आठ वर्ष की आयु से प्रारंभ कर महाकवि सेठिया, 75 वर्षों से भी अधिक समय तक, अवरिल साहित्य सृजन करते रहे। इस काल में उनका रचना कर्म सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के साथ-साथ समकालीन साहित्यकारों व युग चेतना से प्रभावित हुआ। जीवन व रचनाकर्म के प्रारंभिक काल में आप कुछ पूर्ववर्ती रचनाकारों से प्रभावित थे पर धीरे-धीरे चिंतन की प्रगाढ़ता के साथ कवि की लेखनी स्वयं के मानस मंथन से निकले नवनीत को शब्दबद्ध करती गई।

आयु और सृजन की यात्रा में, चिंतन की गहनता के कारण, आपका भाव संवेदन सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता गया और लेखनी से दर्शन का अमृत निःसृत होने लगा इसीलिए क्षर से अक्षर तक की यात्रा करते आपके काव्य का मूल स्तर दार्शनिक है जो भगवान महावीर के प्रति श्रद्धा और विश्वास से सिकत है और जीवन मूल्यों को उकेरता पाठकों को दिशा देता है। जैन परिवार में जन्म लेने के कारण जैन जीवनशैली का प्रभाव स्वाभाविक था इसलिए आपने अपनी रचनाओं द्वारा सर्वकालीन व सर्वहितकारी पंच महाव्रतों के मानवतावादी शाश्वत मूल्यों को आत्मसात करते हुए सम्यक् आचरण का संदेश भी दिया, जो पाठक के चिंतन को ऊर्ध्वप्रेरित करता हुआ उसे मुक्ति हेतु जीवनशैली अपनाने का दिशा निर्देश देता है। जन्म से जैन होते हुए भी आप धार्मिक मान्यताओं से ऊपर उठकर सभी धर्मों का न केवल आदर करते थे वरन् उन्हें समान दृष्टि से देखते भी थे। ‘त्रयी’ में आपके शब्दरत्नों की चमक द्रष्टव्य है—

‘मंदिर, मस्जिद, मठ, गिरजाघर, उसका
कहीं विराम नहीं है

तीर्थकर, पैगंबर, ईश्वर, उस अनाम का नाम

नहीं है

आगम, वेद, कुरान, पिटिक सब, एकोऽहम
की स्वीकृतियाँ हैं,

जितनी है आकृतियाँ वे सब, निराकार की
विकृतियाँ हैं।’

लोकसेवक कवि सेठिया का अपने पुत्र के विवाह में हरिजनों को समान आदर के साथ ले जाना, उनके लिए विद्यालय खोलना, हल्दीघाटी के भीलों के पुनर्वास का सफल प्रयास तथा महावीर इंटरनेशनल द्वारा असहायों की सहायता जैसे कार्य आपकी सेवा भावना के सुदृढ़ प्रमाण हैं; यही नहीं, अनेक महाविद्यालयों तथा कोटा व बीकानेर विश्व विद्यालयों को खोलने-खुलवाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। मानव से महामानव तक की यात्रा सम्पन्न करने वाले महाकवि सेठिया ने मायड़ भासा राजस्थानी को मान्यता दिलाने के लिए संघर्ष का न केवल बीजारोपण किया वरन् वे आजीवन संघर्षरत भी रहे जो आपके देहावसान के बाद अब भी जारी है।

छंदबद्ध से छंदमुक्त और गीत व लंबी कविता से चलकर चार शब्दों में गद्दी मंत्र कविता में रचना करती सरस्वती के प्रिय पुत्र की लेखनी ने सैदव शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति रखते हुए रूढ़ियों पर प्रहार एवं विसंगतियों का विरोध किया। आपके काव्य में दर्शन के साथ-साथ राष्ट्रीयता, राजस्थान की प्राकृतिक सुषमा व लोक जीवन का वर्णन भी प्रचुर मात्रा में है पर रूमानीयत का उल्लेख नहीं के बराबर है और यदि पारिवारिकता व गार्हस्थ्य जैसे जीवन मूल्यों के चित्रण में हुआ भी है तो वहाँ पवित्रता को भी पवित्र करती हुई अभिजात्य की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति हुई है। हिंदी, राजस्थानी, उर्दू एवं संस्कृत चार-चार भाषाओं में ढेरों (35) कालजयी पुस्तकों के रचयिता का यह कहना कि ‘हाल मांडणों कोनी आयो’ प्रज्ञा पुरुष के संतत्त्व का परिचायक है। कविर्मनीषी की रचना यात्रा पर दृष्टिपात के पूर्व लीलटांस में ग्रंथित उनकी ‘सबद अमरित’ का

उल्लेख अनिवार्य है-

‘लिखारा/मती बणा/कलम नै

भोगी रसियै री बंसरी/निलजै चितैरै री कूंची
आ तो है/सुरसत माँ री/संजीवनी जड़ी
परगासे आत्मा री जोत/मेटै जिंदगानी से दुंद
ओलख ई री खिमता/ससती रागल्यांर भूल
बिंबां में

मती गया/ई री नोक स्यूं झरतो/सबद रो
अमरित’

संत कवि सेठिया की यह रचना प्रत्येक रचनाकार के लिए दिग्दर्शक दस्तावेज है। इसी परिप्रेक्ष्य में आइए जीवंत मिथक, प्रज्ञा पुरुष, शब्द आलोक के निर्झर, संत कवि कन्हैयालाल सेठिया के जीवन व रचनाओं की अन्योन्याश्रिता को निहारते हुए लेखन-यात्रा करें-

जब ‘वनफुल’ से कोमल, किशोरवय के कवि कन्हैयालाल सेठिया के हाथ में माँ सरस्वती ने अपने शब्द भंडार की चाबी और लेखनी थमाई, उस समय भारत परतंत्र तो चाही रूढ़ियों और अंधविश्वासों से भी ग्रस्त था अतः शारदा के प्रिय पुत्र ने पहले नीतिकाव्य ‘रमणियां रा सोरठा’ रचा फिर हाथ में ‘अग्निवीणा’ ले झनझना कर बजाई और जन जागरण हेतु ‘दीपकिरण’ का प्रकाश फैलाया। आपने तत्कालीन परतंत्रता के युग को ‘मेरा युग’ कह, पूरे राष्ट्र का स्वतंत्रता संग्राम हेतु आह्वान किया। जनता के प्रयास रंग लाए, देश स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त आनंदित युवा कवि की आनंदित लेखनी ने अब यौवन की उष्मा व मिलन-विरह की छूपछाँही रचनाओं के साथ राजस्थान के प्राकृतिक सौंदर्य व सांस्कृतिक ‘मीझर’ की सुवास भी फैलायी। शनैःशनैः आपका चिंतन सूक्ष्म होता गया जिसे आपने ‘गलगचिया’ कह गद्यकाव्य के रूप में शब्दबद्ध किया। जब माँ भारती के नैसर्गिक सौंदर्य पर चीन व पाकिस्तान ने कृदृष्टि डाली तो देश के इस सपूत ने एक बार पुनः देश को आवाज दी ‘आज हिमालय बोला है’ उठो देशवासियों और कर्तव्य का निर्वाह करो। आपकी ‘रक्त दो’ नामक प्रभावशाली कविता ने जनमानस को जगाया और शत्रु को मुँह की खानी पड़ी।

शांति के साप्राज्य में अब परिपक्व मन के सर्जक-चिंतक कवि के चित्त में ‘खुली खिड़कियाँ चौड़े रास्ते’ से प्रशस्त वायु ने प्रवेश

किया जिससे आत्मबोध की ओर अग्रसर कवि को आत्मा में परमात्मा का ‘प्रतिबिम्ब’ परिलक्षित होने लगा। उन्होंने लेखनी के हाथों उस नियंता को ‘प्रणाम’ किया और सत्यान्वेषण करते ‘कूँ कूँ’ में कह उठे-‘माथे पर राखै पाळो, जद बाज्या दगड़ हिमाळो’ जिससे प्रगढ़ चिंतन में लगी उनकी चेतना हिमालय सी विशालता अर्थात् मनीषित्व के शृंग पर चढ़ने लगी। अब वे ऊँची-नीच, धर्म-संप्रदाय और रूढ़ियों की शृंखलाओं को तोड़ परम शक्ति के ‘मर्म’ को समझ कर चिंतन में डूब ‘मिट्टी नीख, मिट्टी कलख, मिट्टी गतभव, मिट्टी चिरनव’ जैसी बीजमंत्र स्वरूप कविताओं की रचना करने लगे। ‘लीलटांस’ की भाँति जीवात्मा धारी कवि की लेखनी से अमृत झरने लगा और ‘अकूरड़ी, फुल नै नरग, बीज नै सुरग’ का रहस्य उघाड़ते दार्शनिक कवि नामवर होते हुए भी ‘अनाम’ की ऊँचाई पर प्रतिष्ठित हो गए।

‘मनन प्रबुद्ध हुआ, गौतम बुद्ध हुआ’ समझाने वाले कवि सेठिया की चित्त की सभी ग्रंथियाँ अब खुलने लगीं और वे ‘निर्गन्ध’ भगवान महावीर के प्रति श्रद्धाधानत होकर कह उठे-

‘केवल नमन उनको जो अरिहंत/जो संत
भले ही उनका/कोई धर्म/कोई पंथ।’

मनीषित्व से ऋषित्व की ओर बढ़ रहे संत कवि ने जीवन के विविध पक्षों पर विचार करते हुए ‘धर कूँचा धर मजळां’ की गति से अपनी यात्रा जारी रखी और अध्यात्म के साथ-साथ जब ‘मायड़ रो हेलो’ सुण्यो तो मातृभाषा राजस्थानी को मान्यता दिलवाने के लिए अपने प्रयास तीव्र कर दिए। इस सम्बन्ध में आपने केंद्र के कई मंत्रियों को पत्र भी लिखे। अनासक्ति व अपरिग्रह की ओर गतिमान कवि की, चिंतन की प्रगाढ़ता से ओत-प्रोत, लेखनी पुनः दर्शन व आत्मबोध कराने हेतु ‘सबद’ सुनाने लगी। अब ‘स्वगत’ मंथन करते कवि को आत्मबोध हुआ-‘विधवा नहीं स्वयं ही रचता अपना मनुष्य विधान।’ कर्म को अतीत, वर्तमान और भविष्य का निर्धारक मानती कवि की परिपक्व हो रही लेखनी ने अब संसार को पंच महाव्रतों की महता बताती ‘सतवाणी’ की थाती सौंपी।

जीवन यात्रा के इस पड़ाव पर राजस्थान में अनावृष्टि के कारण पड़े अकाल से उत्पन्न

परिस्थितियाँ देख संत कवि का संवेदनशील हृदय काँप उठा। आपने ‘अघोरी काल’ की इन पंक्तियों-‘कोनी बरस्यो मेंह, फाटग्यो धरती से हियो’ से अकाल का जीवंत वर्णन कर सरकार का ध्यान आकर्षित किया और अकाल पीड़ितों को राहत दिलवाई। हर ओर शांति देख कवि सेठिया की ‘दीठ’ सनातन से वर्तमान तक के सत्य को समझते हुए पुनः दर्शन के समुद्र में रत्नों का संधान करने में लग पाई, इससे उनके प्रज्ञाचक्षु खुल गए और उनके लिए ‘देह-विदेह’ में अंतर न रहा। आकार-निराकार के इस संबंध को संत सेठिया ने ‘कक्को कोड रो’ के इन शब्दों में समझाया-

कोनी ल्याणे सकै लपट नै हथेळी में/ल्याणों
पड़सी ठूँठियो सागे

कोनी अणभूत कर सकै निराकार नै/राखणों
पड़सी आकार मुँडे आगे’

चिंतन की गहराई को देख, ऋषि, प्रज्ञावान, निस्पृह कवि की लेखनी की नोक पर ‘आकाशगंगा’ के समस्त नक्षत्र का विराजे और लेखनी से निःसृत अमृत बिंदुओं ने समस्त मानव जाति को संदेश दिया-

‘स्खलन क्षण का/अनंत भ्रमण/स्फुरण
आत्मदर्शन’

विश्वात्मा से एकात्म का अनुभव करते कवि का दैहिक ‘वामन विराट’ महामानवों की श्रेणी में विराजमान हो गया। उनका अहंभाव पूर्णतया तिरोहित हो गया और वे कह उठे ‘सर्वज्ञ, मैं, से, अनभिज्ञ’। युगसत्य व चिंतन से सिक्त अनासक्त कवि की लेखनी ने शब्दों की ‘लीक लकोकिया’ अर्थात् आड़ी-तिरछी पर गांभीर्य से पूर्ण रेखाएँ खींचीं जिसमें संसार को कुछ इस प्रकार पारिभाषित किया-

‘आ है/रामलीला रै/सामान री दुकान
अठै रामरं रावणरै/मुखौटां रा/एक दाम’

जीवन और सृजन की इस यात्रा में देह से वृद्धावस्था तथा मन से मुक्ति की ओर बढ़ रहे और द्वंद से निर्द्वंद होने की ‘निष्पत्ति’ अर्थात् मीमांसा कर रहे कवि ने संपूर्ण मानव जाति को मंत्र दिया-‘उतरना होगा, हर छोटे शिखर से नीचे, चढ़ने के लिए ऊँचे शिखर पर, केवल रखना होगा दृष्टि में लक्ष्य’ और अब कवि का लक्ष्य था ‘श्रेयस’ अर्थात् अज्ञान, अहंकार, परिग्रह और आसक्ति से पूर्ण मुक्ति जो स्व तथा

पर दोनों के कल्याण का मार्ग है। अपने अनवरत मानस मंथन व शब्द साधना के फलस्वरूप अवतरित अमृत घट 'हेमाणी' में शाश्वत सत्य को कवि ने बड़ी सहजता से प्रस्तुत किया—

'जद करस्युं फेर/मायने दीठ/दीख ज्यासी परतख/मनै अदीठ'

श्रेयस्कर मुक्ति मार्ग पर चलने के लिए सम्यक् दर्शन, ज्ञान व चरित्र की 'त्रयी' को शब्दों के कलेवर में बाँध आपने अनुभूत सत्य का अनावरण किया—

'जो त्रय गुणातीत/वह निर्गुण/उसका उसका उपासक सगुण

असीम गगन निर्गुण/असीम वसुधा सगुण'

सेठिया जी को हिंदी व राजस्थानी के साथ-साथ उर्दू व संस्कृत भाषाओं का भी गहन ज्ञान था। आपकी उर्दू व संस्कृत भाषाओं में की गई रचनाओं में भी दर्शन, अध्यात्म, व ब्रह्म के प्रति समर्पण का भाव ही मूल में रहा। जहाँ आपने 'ताजमहल' को—'दुनिया के मेले में अकेला है ताज, अपने अकेले में एक मेला है ताज' बताया वही 'गुलची' में सत्य का उद्घाटन कुछ इस प्रकार किया—'खुला है हर वक्त मौत का दतर, हो जाता है दर्ज जिसमें जिंदगी का सफर'। संस्कृत में कवि की एममात्र रचना है 'श्री राधा' जो संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों में रचित व मातृशक्ति को समर्पित स्तुति है।

जीवंत मिथक की उपाधि से विभूषित महाकवि ने अपने सम्पूर्ण काव्य में जीवन मूल्यों को शब्द दर शब्द गूँथा है। आपके साहित्य में उद्यम, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, निस्पृहता, सत्यनिष्ठा, व्रतपालन, आत्मानुभूति तथा संयम जैसे अनेक आचारपरक जीवन मूल्यों के साथ समदर्शिता, व्रत पालन, आत्मानुभूति, आस्था, तप, अर्हणा, विराग व कर्म विपाक जैसे अध्यात्म व दर्शन परक जीवन मूल्यों को उकेरा गया है। अपनी काव्य मालिका में आपने गार्हस्थ्य, मातृप्रेम, बंधुत्व, स्वावलंबन, राष्ट्रप्रेम, प्रजातंत्र, सह अस्तित्व एवं युद्धक्षय जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्वपरक जीवन मूल्यों के साथ सम्यक बोध, लोक कल्याण, वन्मयता, मौलिकता, अस्तेय, अपरिग्रह, जिज्ञासा व तत्त्वज्ञान जैसे सांस्कृतिक व शिक्षापरक जीवन मूल्यों के ढेर सारे फूलों को गूँथा है। संत कवि सेठिया ने शब्द साधना कर साध्य अर्थात् मोक्ष

सुनहरे कल की कहानी लिखें नौजवान

□ स्वामी विवेकानन्द

हे वीर हृदय युवको ! यह बड़े संतोष की बात है कि अब तक हमारा कार्य बिना रोक-टोक के उन्नति ही करता चला आ रहा है। इसमें हमें सफलता मिलेगी और किसी बात की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है केवल प्रेम, अकपटता और धैर्य की। इहलोक और परलोक में यही बात सत्य है। यदि कोई कहे कि देह के विनाश के पीछे और कुछ नहीं रहा, तो भी उसे ये मानना ही पड़ेगा कि स्वार्थपरता ही यथार्थ मृत्यु है।

परोपकार ही जीवन है, परोपकार न करना ही मृत्यु है। ऐ बच्चो, सबके लिए तुम्हारे हृदय में दर्द हो, गरीब, मूर्ख, पट्टदलित मनुष्यों के दुख का तुम अनुभव करो, संवेदना से तुम्हारा हृदय भरा हो। यदि कुछ भी संशय हो, तो तुम्हें शक्ति, सहायता और अदम्य साहस का आभास होगा। गत दस वर्षों से मैं अपना मूलमंत्र घोषित करता आया हूँ— प्रयत्न करते रहो। और अब भी मैं कहता हूँ कि अकिंचन प्रयत्न करते चलो। जब चारों ओर अंधकार ही अंधकार था, तब भी मैं प्रयत्न करने को कहता था, अब तो कुछ प्रकाश नजर आ रहा है। अतः अब भी यह कहूँगा कि प्रयत्न करते रहो। वत्स, धीरज धरो, फिर तुम देखोगे कि कई घंटों में वह सबका सब तुम्हारे पैरों तले आ गया है। धीरज धरो, न धन से काम होता है, न यश काम आता है, न विद्या; प्रेम से ही सब कुछ होता है। चरित्र ही कठिनाइयों की संगीन दीवारें तोड़कर अपना रास्ता बना लेता है। अब हमारे सामने यह समस्या है स्वाधीनता के बिना किसी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है। हमारे पूर्वजों ने धार्मिक चिंता में हमें स्वाधीनता दी थी और उसी से हमें आश्चर्यजनक बल मिला है, पर उन्होंने समाज के पैर बड़ी-बड़ी जंजीरों से जकड़ दिए और उसके फलस्वरूप हमारा समाज, थोड़े शब्दों में यदि कहें, तो ये भयंकर और पैशाचिक हो गया है। दूसरों को हानि न पहुंचाते हुए, मनुष्य को विचार और उसे व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। खान-पान, पोशाक, पहनावा, विवाह-शादी हर एक बात में स्वाधीनता मिलनी चाहिए।

भारत को उठना होगा, शिक्षा का विस्तार करना होगा, स्वहित की बुराइयों को ऐसा धक्का देना होगा कि वह टकराती हुई अटलांटिक महासागर में जा गिरे। ब्राह्मण हो या सन्यासी, किसी की भी बुराई को क्षमा नहीं मिलनी चाहिए। सभी को अन्न अधिक सुलभ हो। किन्तु, ये व्यवस्था धीरे-धीरे लानी होगी। अपने धर्म से पौराहित्य की बुराइयों को हटा दो, तभी तुम्हें संसार का सबसे अच्छा धर्म मिल पाएगा। भारत का धर्म लेकर एक यूरोपीय समाज गढ़ सकते हो। मुझे विश्वास है कि यह सम्भव है और एक दिन ऐसा जरूर होगा।

(राष्ट्र एवं युवाओं के नाम एक सम्बोधन)

तो प्राप्त किया ही, माँ सरस्वती द्वारा सौंपी गई लेखनी से निःसृत अमृत बिंदुओं से भरे अमृतघट की थाती भी हमें सौंपी है, इसके लिए संपूर्ण मानवता अमर कवि की ऋणी रहेगी। कवि के काव्य को पढ़कर मैंने जो सीखा उसे इन पंक्तियों में व्यक्त करना चाहूँगी—

**'मत तोलो जीवन यात्रा को
लाभ और हानि की तुला पर
नही व्यापार, यह है प्रज्ञा के उद्घाटन
को मिला एक अवसर
आवरण मुक्त करो चेतना को,
होगा जन्मों के संचित तम का क्षरण
क्योंकि जीवन है, करने और
होने का युगपत समीकरण'**

विश्वविद्यालयों द्वारा मानद पीएच.डी, मूर्तिदेवी (ज्ञानपीठ), पद्मश्री व राजस्थान रत्न जैसी ढेरों उपाधियों व अलंकरणों द्वारा अलंकृत संतकवि सेठिया के आकाश से विराट चिंतन को मुझ अल्पज्ञ ने छूने भर का प्रयास किया है जो केवल 180 डिग्री अर्थात् सीधी दृष्टि से देखा गया है। मेरी दृष्टि में शब्द ऋषि सेठिया के काव्य को 360 डिग्री अर्थात् समग्रता से देखा व शोधा जाना अभी शेष है क्योंकि आपके रचना कर्म की विविधता व व्यापकता तथा गहनता व विराटता शोध हेतु नए आयाम खोलती है।

—'ज्ञानकुंज', 307 गाँधीनगर,
लालगढ़, बीकानेर-334001
मो. 9929181526



हमें मानवीय गरिमा को यदि जीवित रखना है, सभ्यता व संस्कृति को शिखर तक ले जाना है, तथा आर्थिक विकास करना है, तो निश्चित ही महिला शिक्षा को बढ़ावा देना होगा। महिला की बौद्धिक व शैक्षिक क्रियाकलापों को सकारात्मक दृष्टिकोण देना होगा।

देश के बहुमुखी विकास के लिये महिला शिक्षा पर ध्यान देना होगा। समाज में पुरुष प्रधान परम्परा को तज कर हमें नारी के महत्व को समझना होगा तभी समाज में नारी की गरिमा बढ़ेगी।

आज हम विकसित देश की श्रेणी में आते हैं, परन्तु महिला शिक्षा में अब भी पिछड़े हुये हैं। आज भी महिलाओं को वर्जनाओं से पूर्ण मुक्ति नहीं मिल पाई है हमारे देश में आज भी नारी को गृहणी माना जाता है। आज भी समाज में स्त्रियों पर अत्याचार किया जाता है। समाज में पर्दा-प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह, भ्रूण हत्या जैसी कई कुप्रथाएं हैं। जहां दहेज प्रथा में पुत्री जन्म को कलंक बना दिया है, वहीं भ्रूण हत्या ने तो पुत्री जन्म का अधिकार ही छीन लिया है।

पुरुष प्रधान समाज के पाशविक कृत्य के कारण वर्तमान में स्त्री-पुरुष का अनुपात लड़खड़ा रहा है। वर्तमान में महिला शिक्षा में तो वृद्धि हुई है परन्तु अब भी नारी जागृति की संचेतना दबी सी है।

नारी को वेदों में अर्द्धांगिनी माना गया है, परन्तु पुरुष प्रधान समाज नारी को अब भी व्यवहार में तुच्छ देखता है।

सृष्टि की रचना में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है। नारी के बिना मनुष्य अधूरा है, अपूर्ण है, एकांगी है। नारी पुरुष की चाहत है। जबरत है। परिपूरक व सहायक है, संसार की नियामक है। पीढ़ी दर पीढ़ी की सबाहक माध्यम है। नारी समाज व परिवार को पूर्ण करने वाला महत्वपूर्ण घटक है। नारी एक राष्ट्र की आधारशिला है। नारी सृष्टि का उत्सव, मानव की जननी, बालक की

प्रथम गुरु व पुरुष की प्रेरणा है।

जहां स्त्री शक्ति मानी नहीं वहां समाज का भविष्य अंधकारमय होता है। नारी सशक्तिकरण से ही राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित होती है।

प्राचीनकाल में देखें तो महिला सदैव पूजनीय रही है। वेदों में कहा गया है—“यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवताः”, अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवताओं का वास होता है। हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति में नारी की स्थिति अत्यन्त गरिमामय रही है। गार्गी, विदुला, मैत्रेयी आदि विदुषी नारियों ने पुरुषों को ज्ञान क्षेत्र में पीछे छोड़ दिया।

सृष्टि के रचयिता ने भी महिलाओं को वर्चस्व प्रदान किया है, ऐश्वर्य व वैभव लुटाया है, कौमार्य एवं माधुर्य संजोया है, आकर्षक सुषमा और सौन्दर्य का ताज पहनाया है, शक्ति व भक्ति का ताना बाना बुना है।

भक्ति और शक्ति के क्षेत्र में देखें तो धन की देवी लक्ष्मी जी, विद्या की देवी सरस्वती जी व शौर्य की प्रतिमा दुर्गा जी, कृष्ण भक्त मीरा, सती सावित्री, पतिव्रता अनुसुया आदि सभी की कोई बराबरी नहीं कर पाया है।

नारी तो सत्यम शिवम सुन्दरम् की प्रतिमा है। समाज में अनेक बुराईयां लिंग अनुपात को पाटती जा रही हैं। बाल-विवाह, विधवा विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, दासी, बालिका अशिक्षा, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा आदि कुप्रथाओं का साथ आज भी ग्रामीण आंचल में मंडरा रहा है।

आजादी से पहले की स्थिति में भारतीय नारी ने ऐसे कार्य कर दिखाये हैं जिन्हें हम भुला नहीं सकते जैसे रजिया सुल्तान ने देश की बागडोर सम्भाली, नूरजहां ने शासन चलाया, मुमताज ने अपने प्रेम की सौगात ताजमहल के रूप में भेंट की भक्ति में मीरा बाई ने छाप छोड़ी, माता जीजाबाई ने अपने विवेक व व्यवहार कौशल से शिवाजी का जीवन संवारा। हाड़ा रानी ने प्रेम निशानी के रूप में अपना शीश पति को

भेंट किया।

आजादी के बाद भी महिलाओं में नवचेतना आई। प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं का प्रभुत्व व वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। आजादी के समय नागालैण्ड की रानी गदनलियों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया वहीं आजाद हिन्द फौज की महिला सैनिक टुकड़ी की कमान लक्ष्मी सहगल ने संभाली।

आजाद भारत में महिलाओं के प्रभुत्व में सरोजनी नायडू, समाज सेवा में ऐनीबेसन्ट, दूसरों का जीवन संवरने वाली मदर टेरेसा संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष पद पर सुशोभित विजय लक्ष्मी पण्डित, राजनीति के क्षेत्र में इन्दिरा गांधी, सुचेता कृपलानी, अमृतकौर, शानो देवी, लीला सेठ, मीरा साहिन फातिमा बीबी, अन्ना चांडी, बिमला देवी, किरण बेदी, रीता फारिया, आरती शाह, अमृता प्रीतम, सुष्मिता सैन आदि ने विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

जीवन के हर क्षेत्र में आज महिलाओं की भागीदारी का वर्चस्व बढ़ रहा है। तेजस्विनी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के खिलाफ जंग की। अवध की हजरत बेगम ने क्रांतिकारी लड़ाई लड़ी, अनुपम सौन्दर्य की महारानी पद्मिनी ने जोहर में अपने प्राण न्यूछावर कर दिये, पन्नाधाय ने त्याग और बलिदान का पाठ पढ़ाया, चाँद बीबी के शौर्य की गाथाएं आज भी उत्साह भरती हैं।

1. साहित्य के क्षेत्र में :- अमृता प्रीतम, महादेवी वर्मा, अरुंधती रायम सुभद्रा कुमारी चौहान, आशापूर्ण देवी, कमला देवी चट्टोपाध्याय।
2. संगीत के क्षेत्र में :- लतामंगेशकर, सुब्बालक्ष्मी, एम.एस. सिद्धेश्वरी देवी, आशाभोंसले, उषा, अलका यात्रिक, अनुराधा पौडवाल
3. कला के क्षेत्र में :- स्वाति निरुनाल, देविका रानी, नरगिस दत्त, सीता देवी
4. स्वतंत्रता सेनानी महिलाएं :- लक्ष्मी बाई, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ

अली, बेगम हजरत महल, एनीबीसेण्ट, मैडम कामा, राजकुमारी अमृत कौर, मृदुलाबेन साराभाई, प्रकाशवती सिन्हा, अंजना देवी, नारायणी देवी, रतन शास्त्री, रमा देवी देशपाण्डे, सुमित्रा खेतान, मनोरमा पंडित, विद्यादेवी, मनोरमा टंडन

5. **राजनैतिक क्षेत्र में :-** रजिया सुल्तान, इन्दिरा गांधी, विजय लक्ष्मी पण्डित, सुचेता कृपलानी, प्रतिभा पाटिल, शन्नो देवी, लीला सेठ
6. **खेल :-** पी.टी.उषा, अंजू बाबी, सानिया मिर्जा, कमलजीत, संधू, कर्णम मल्लेश्वरी, ज्योत्सना चिनप्पा, सुनीता शर्मा, साइना नेहवाल, कॉनरू हैप्पी, तानिया सचदेवा, डोला बेनर्जी
7. **पर्वतारोहण :-** संतोष यादव, बछेन्द्रपाल
8. **पैरा जम्पिंग :-** शीतल महाजन
9. **तैराकी व नौकायन :-** आरती साहा, बुला चौधरी, रश्मि शर्मा, उज्ज्वल पाटिलधर
10. **समाज सेवा :-** इला भट्ट, मेघा पाटेकर, मदर टेरेसा, शान्ता सिन्हा
11. **पुलिस सेवा :-** किरण बेदी, कंचन सी, पट्टाचार्या, मीरा बोवंकर
12. **सेना सेवा :-** गुंजन सक्सेना, वाहिदा प्रिज्म, पदमा बंधोपाध्याय, कैप्टन सौदा मिनी देशमुख, पनीता अरोडा
13. **अंतरिक्ष क्षेत्र :-** कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स

प्राचीन काल से अब तक महिलाओं ने कौमार्य और शौर्य से नाता रखते हुए भी बुद्धि, बल, त्याग और बलिदान के आयाम रचे हैं। भक्ति व शक्ति के क्षेत्र में भी कीर्तिमान बनाये हैं। घर को संवारा भी है, और उसकी रक्षा भी की है। सिंहनी जैसी वीरता के साथ ज्ञान गंगा भी प्रवाहित की है। सतीत्व के साथ पतिव्रत पालन का प्रमाण भी दिया है संस्कृति व मर्यादा का पालन किया है नारी ने श्रेष्ठता का परचम प्रत्येक क्षेत्र में लहराया है।

आज नारी दासी से महारानी तक, प्रेमिका से अर्द्धांगिनी तक है, जन्मदात्री से लेकर गृहस्थ प्रबंधन तक सरोकार है संत्री से मंत्री तक, एम.एल.ए. से एम.पी. तक पी.ए. से सेक्रेट्री तक, मुख्यमंत्री से राष्ट्रपति तक सभी पदों पर शौभायमान है। बाबू से चैयरमैन तक, कर्मचारी से अधिकारी तक नारी कार्यरत हैं।

वर्तमान समय में नारी शासन में, प्रशासन में, सुरक्षा अनुसंधान में, चिकित्सा, शिक्षा, विज्ञान, कम्प्यूटर, बैंक, मॉडलिंग, व्यापार, पर्यटन, वायुयान, नैवी, दूरदर्शन, खेल, प्रेस, सौन्दर्य, परिवहन, अग्निशमन आदि सभी क्षेत्रों में अपना वर्चस्व बनाये हुए हैं।

नारी की बौद्धिक कुशलता व आदर्शिता को बरकरार रखते हुए भारत में महिला साक्षरता को बढ़ाने व लैंगिंग समानता हेतु वर्तमान समय में बालिका शिक्षा अतिआवश्यक है।

—रा.उ.प्रा.वि., बंगला नगर, डूडी पेट्रोल पम्प, बीकानेर
मो. 9414510329

जज्बे को अलाम

हाथ कटे तो तलाक मिला, 25 दिन में तैराकी सीखकर बनीं चैंपियन

महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी की हॉस्टल वॉर्डन सुनीता मल्हान के बुलंद हॉसले की कहानी

राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खेलों में ढेरों पदक जीत चुकी डॉ. सुनीता मल्हान ने कभी अपना हॉसला कमजोर नहीं होने दिया। वह झज्जर के सुबाना गांव में 12 दिसम्बर 1966 में पैदा हुई। उनकी शादी जनवरी 1987 में हुई। उस समय उन्होंने स्नातक की थी।

शादी के पांच माह के भीतर ही 8 मई 1987 को दोपहर में रेलवे फाटक पार करते समय उनकी चुन्नी साइकिल के पहिये में उलझ गई। वह ट्रेन की चपेट में आ गई और हादसे में दोनों हाथ गंवा बैठी। तब सुनीता एम.ए. (संस्कृत) प्रथम वर्ष में थी। हादसे के बाद पति ने तलाक दे दिया, लेकिन सुनीता ने खुद को कमजोर नहीं पड़ने दिया। उन्होंने आगे पढ़ाई की। पीएचडी किया। खेलों में अपने हुनर को आजमाया। डॉ. सुनीता ने जब बीते साल सितंबर पैरालिंपिक गेम्स के दौरान स्वीमिंग स्पर्धा देखा, तो उनके मन में भी तैराकी की इच्छा पैदा हुई। मात्र 25 दिन में तैराकी भी सीख ली। वे कहती हैं कि उन्होंने जिस भी काम को करना चाहा, उसे हासिल किया। अभी वह एमडीयू में हॉस्टल वॉर्डन हैं। डॉ. सुनीता जिंदगी के हर इम्तिहान में पास होती आ रही है। चाहे वह इम्तिहान में पास होती आ रही हैं। चाहे वह इम्तिहान कैरियर का हो चाहे जिंदगी का। अब तैराकी में कुछ कर गुजरने का इरादा है। कामयाबी की इबारत लिखकर डॉ. सुनीता मल्हान ने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। उनके हॉसले व जज्बे से युवतियां और महिलाएं आज प्रेरणा लेती हैं।

उपलब्धियां—स्त्री शक्ति पुरस्कार 2009, मोस्ट एफिशिएंट इंप्लाइज अवार्ड, और रानी लक्ष्मीबाई अवार्ड 2010 हासिल किया। 2011 में भीम अवॉर्ड मिला। उन्हें राष्ट्रपति भी दो बार सम्मानित कर चुके हैं। इंग्लैंड पैरा ओलिंपिक में 100 व 200 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीता। 2013 में राज्य तैराक प्रतियोगिताओं में रजत पदक जीता। 2012 में मल्हान ने 12 से 14 मार्च तक बेंगलुरु में आयोजित 14वीं वरिष्ठ पैरा ओलिंपिक राष्ट्रीय खेलों में चार गुणा सौ मीटर रेस में स्वर्ण व चार सौ मीटर रेस में रजत पदक हासिल किया।

लक्ष्य—इस साल अक्टूबर-नवम्बर में होने वाले तैराकी के पैरालिंपिक नेशनल मुकाबले में गोल्ड मेडल जीतना उनका लक्ष्य है। 24 साल से एमडीयू में तैनात डॉ. सुनीता की इच्छा अब दोबारा से शिक्षण क्षेत्र में आने की है। वे एमडीयू में ही संस्कृत पढ़ाना चाहती है।

हुनर : पैरों से लिखने में महारत, क्योंकि हाथ हैं ही नहीं। फिर भी 25 दिन में तैराकी सीखी।

इरादा : पैरालिंपिक नेशनल मुकाबले में तैराकी में गोल्ड मेडल जीतना।

(साभार : दैनिक भास्कर, 22 फरवरी 2014)

आदेश-परिपत्र : मार्च, 2014

1. निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम : कमजोर एवं अलाभप्रद समूह के बालकों के प्रवेश बाबत स्पष्टीकरण। 2. विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा एवं विद्यालय निरीक्षण के संबंध में दिशा-निर्देश। 3. शिक्षक दिवस प्रकाशन-2014 के लिये रचनाओं का आमंत्रण अंतिम तिथि 31-5-2014। 4. विद्यालयों में विशेष सफाई अभियान के लिए खर्च हेतु राशि का प्रावधान संबंधी निर्देश। 5. प्रतियोगी परीक्षाओं की अनुमति जिशिए स्तर पर नहीं देने के क्रम में। 6. गैर सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों के भवन/नाम/वर्ग परिवर्तन एवं अतिरिक्त माध्यम (हिन्दी/अंग्रेजी) के आवेदन के सम्बन्ध में। 7. गैर सरकारी मान्यता/सहायता प्राप्त विद्यालयों को सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.सी.ई. नई दिल्ली से संबद्धता हेतु अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी किये जाने बाबत। 8. शिक्षा में गुणवत्ता हेतु सघन विद्यालय निरीक्षण-निर्देश।

1. निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम : कमजोर एवं अलाभप्रद समूह के बालकों के प्रवेश बाबत स्पष्टीकरण

● राजस्थान सरकार स्कूल शिक्षा विभाग, प्रारम्भिक शिक्षा (आयोजना) अनुभाग ● क्रमांक : प. 21(19)प्राशि/आयो./2009 जयपुर, दिनांक 17-1-2014 ● समस्त जिला कलक्टर, समस्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद, समस्त जिला प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी। ● विषय : इस विभाग के समसंख्यक पत्र दिनांक 04-04-2011 द्वारा निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के क्रियान्वयन के संबंध में जारी दिशा-निर्देशों के स्पष्टीकरण के क्रम में।

उपरोक्त विषयान्तर्गत लेख है कि निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रभावी क्रियान्वयन के सम्बन्ध में इस विभाग के समसंख्यक पत्र दिनांक 04-04-2011 द्वारा यह स्पष्ट किया गया था कि उक्त अधिनियम की धारा 12 की उपधारा (1) के खण्ड (स) के प्रावधानानुसार निजी विद्यालयों को कक्षा 1 में प्रवेश देने वाले बालकों की कुल संख्या का कम से कम 25% सीट्स पर कमजोर वर्ग एवं अलाभप्रद समूह वर्ग के बालकों को प्रवेश देना बाध्यकारी होगा। यह भी स्पष्ट किया गया था कि यदि कोई निजी विद्यालय पूर्व प्राथमिक कक्षाएँ संचालित करता है तो पूर्व प्राथमिक कक्षा हेतु भी कम से कम 25% सीट्स पर कमजोर वर्ग एवं अलाभप्रद समूह वर्ग के बालकों को प्रवेश देना अनिवार्य होगा।

राज्य सरकार के ध्यान में आया है कि कुछ निजी विद्यालय पूर्व प्राथमिक कक्षा एवं कक्षा 1 में सामान्तर रूप से सीधे प्रवेश देते हैं। अतः ऐसे विद्यालयों हेतु निम्नानुसार प्रक्रिया स्पष्ट की जाती है-

“जो निजी विद्यालय पूर्व प्राथमिक कक्षा की एन्ट्री कक्षा के साथ-साथ कक्षा 1 में भी सीधे प्रवेश दे रहे हैं, ऐसे निजी विद्यालयों को पूर्व प्राथमिक एवं कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले बालकों की कुल संख्या का कम से कम 25% सीट्स पर पृथक-पृथक कमजोर वर्ग एवं अलाभप्रद समूह वर्ग

वर्ग के बालकों को प्रवेश देना अनिवार्य होगा।”

खेमराज, प्रमुख शासन सचिव

2. विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा एवं विद्यालय निरीक्षण के संबंध में दिशा-निर्देश

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● विद्यालय में गुणवत्ता शिक्षा एवं विद्यालय निरीक्षण ● दिशा-निर्देश

प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा की अध्यक्षता में दिनांक 31-01-2014 को आयोजित बैठक में विद्यालय में गुणवत्ता शिक्षा एवं विद्यालय निरीक्षण के संदर्भ में महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये जिनकी अनुपालना हेतु निम्नांकित दिशा निर्देश जारी किये जा रहे हैं उनकी अक्षरशः पालना सुनिश्चित करावें-

- निदेशालय बीकानेर के साथ-साथ जिला एवं ब्लॉक स्तर पर गुणवत्ता प्रकोष्ठ स्थापित किया जाना सुनिश्चित करावें।
- निदेशालय स्तर पर गठित गुणवत्ता प्रकोष्ठ एवं एसएसए स्थित गुणवत्ता प्रकोष्ठ से निरन्तर संपर्क एवं सामंजस्य स्थापित करते हुए गुणवत्ता शिक्षा को गति प्रदान करावें।
- गुणवत्ता शिक्षा को अधिक गति प्रदान करने हेतु छात्र-छात्रों को दिये गये गृहकार्य की निरन्तर एवं सतत जांच करें तथा वर्तनी एवं उच्चारण आदि में पायी जाने वाली गलतियों में समयबद्ध कार्यक्रम के साथ सुधार करवायें तथा उसकी निरन्तर समीक्षा करें।
- परिषद एवं निदेशालय स्तर पर नियुक्त जिला प्रभारियों से समन्वय स्थापित किया जाकर जिला भ्रमण कार्यक्रम सुनिश्चित किया जाकर कार्यक्रम को गति प्रदान की जावे।
- विद्यालय अवलोकन करने वाला अधिकारी एक पृष्ठ का प्रतिवेदन विद्यालय अवलोकन प्रपत्र के साथ वेब-पोर्टल पर अपलोड करावें।
- जिला एवं ब्लॉक स्तर पर प्रतिमाह गुणात्मक सुधार कार्य हेतु समीक्षात्मक बैठक का कार्यक्रम भी बनाया जावे जिसकी सूचना जिला प्रभारियों को भी दी जावें।
- विद्यालय अवलोकन करने वाले अधिकारी एसएसए द्वारा जारी निर्देश दिनांक 29-10-2013 की अनुपालना को आवश्यक रूप से देखें।
- जिला एवं ब्लॉक स्तर के अधिकारी विशेष रूप से ऐसे विद्यालयों का अवलोकन करें जहाँ उपलब्धि न्यून हों। निर्देशों की पालना नहीं करने वाले शिक्षकों/प्रधानाध्यापकों के विरुद्ध कार्यवाही भी सुनिश्चित की जावे।

निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

दिनांक : 05-02-2014

3. शिक्षक दिवस प्रकाशन-2014 के लिये रचनाओं का आमंत्रण अंतिम तिथि 31-5-2014

● कार्यालय, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। ● परिपत्र ● विषय : शिक्षक दिवस प्रकाशन-2014 के लिये रचनाओं का आमंत्रण।

“शिक्षक दिवस प्रकाशन” योजना शिक्षा विभाग की एक

प्रतिमानकारी योजना है जो वर्ष 1967 से निर्बाध रूप से चल रही है और जिसके तहत राज्य के सृजनशील शिक्षकों एवं विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारियों की साहित्यिक रचनाएं पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित होती हैं। इन पुस्तकों के माध्यम से विभाग के शिक्षक एवं मंत्रालयिक कर्मचारी विभिन्न विधाओं में अच्छा लेखन करते हैं, राष्ट्र स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल हुए हैं तथा साहित्य जगत के प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित भी हो चुके हैं। इस योजना की एक विशेषता यह भी है कि देश के लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकारों को विविध विधाओं की रचनाओं के सम्पादन हेतु आमंत्रित किया जाता है और गुणवत्ता के आधार पर वे रचनाओं का चयन करके अपनी भूमिका में उनका विवेचन करके रचनाधर्मिता पर संवाद शुरू करते हैं।

इस योजना के तहत वर्ष 1967 से 2013 तक 236 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। प्रकाशित कृतियां प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को आयोजित समारोह में महामहिम राज्यपाल अथवा माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा लोकार्पित की जाती हैं। इस वर्ष प्रकाशित की जाने वाली पाँचों पुस्तकों के लिए आमंत्रित रचनाओं की विषयवस्तु इस प्रकार हो सकती है:-

1. **बाल साहित्य** : कविता, गीत, कहानी, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, निबन्ध, ज्ञान-विज्ञान आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका नवम्बर-2000 के पृष्ठ 32-34)
2. **शिक्षा साहित्य** : शिक्षा नीति, शैक्षिक दर्शन, प्रबन्धन एवं प्रशासन, शिक्षक शिक्षा, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, समाज शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, शैक्षिक नवाचार, शैक्षिक चिन्तन आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका दिसम्बर-2000 के पृष्ठ संख्या 40-42)
3. **राजस्थानी विविधा** : कविता, लघुकथा, निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, व्यंग्य, नाटक, एकांकी, संस्मरण, डायरी, शब्दचित्र, ललित निबन्ध आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका जनवरी-2001 के पृष्ठ 42-44)
4. **हिन्दी कविता** : गजल, कविता, क्षणिकाएं, मुक्तक, गीत नज्म, हाइकू, आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका फरवरी-2001 के पृष्ठ 42-44)
5. **हिन्दी विविधा** : कहानी, लघुकथा, निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तान्त, व्यंग्य रिपोर्टाज, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, शब्दचित्र, ललित निबन्ध आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका मार्च-2001 के पृष्ठ 35-37)

वर्ष 2014 के लिए शिक्षकों/कर्मचारियों की विविध विधाओं की रचनाएं आमंत्रित की जाती हैं। गत वर्षों के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए लेखकों से अपेक्षा है कि नीचे उल्लेखित तथ्यों पर अवश्य ध्यान दें:-

- इन संकलनों हेतु अपनी श्रेष्ठ, प्रतिनिधि, ताजा, अप्रकाशित और मौलिक रचनाएं ही भेजें। रचना पर मौलिक व अप्रकाशित का प्रमाण भी देना आवश्यक है।
- रचनाएं स्तरीय हों तथा रचनाशीलता के गुणों से परिपूर्ण हों। रचनाएं

राष्ट्रविरोधी, साम्प्रदायिक व अश्लील न हों, बल्कि उनके माध्यम से समाज एवं विद्यालय में स्वस्थ मानवीय गुणों का विकास हो।

- रचनाएं फुलस्केप कागज पर एक ही ओर लिखित या टंकित की गई हों, अक्षर स्पष्ट हों, प्रत्येक रचना पर रचनाकार के विद्यालय/कार्यालय/निवास का पूर्ण पता, दूरभाष नम्बर एवं मोबाइल नम्बर, बैंक खाता संख्या व शाखा स्पष्ट अंकित करें।
- अस्वीकृत रचनाएं लौटाना सम्भव नहीं होगा।
- **रचनाएं शिविरा पत्रिका कार्यालय में 31-5-2014 तक अवश्य पहुँच जानी चाहिए।**
- अपने पदस्थापन स्थान के विवरण का अवश्य उल्लेख करें।
- प्रकाशित रचनाओं के लिए देय मानदेय ऑनलाईन बैंक खाते के माध्यम से किया जायेगा। अतः रचना भिजवा रहे शिक्षक साहित्यकारों को निम्न प्रारूप में सूचना रचना के साथ अवश्य भिजवाएं।

1. लेखक का नाम
2. बैंक खाता संख्या
3. बैंक का नाम
4. ब्रांच का नाम
5. बैंक का IFSC No.
6. बैंक का MICR No.

इस योजना का अपने क्षेत्र में साहित्यकार सृजक की हैसियत से अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करें। रचनाएं भेजने का पता :- **वरिष्ठ सम्पादक, प्रकाशन अनुभाग, निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।** ● (विकास एस. भाले) निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/प्रकाशन/5524/2013-14 दिनांक : 19-2-2014

4. विद्यालयों में विशेष सफाई अभियान के लिए खर्च हेतु राशि का प्रावधान संबंधी निर्देश

- कार्यालय, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
- संशोधित परिपत्र

इस कार्यालय के समसंख्यक परिपत्र दिनांक 15-01-2014 के अतिक्रमण में जारी कर निर्देशित किया जाता है कि राज्य सरकार के निर्देशानुसार वर्ष 2013-14 में विद्यालयों में विशेष सफाई अभियान के तहत राज्य के रामावि/राउमावि में विशेष सफाई अभियान, जिसमें शौचालयों की सफाई भी शामिल है, के लिए अधिकतम रुपये 5000/- (पांच हजार रुपये) प्रति विद्यालय खर्च किया जाना है। उक्त राशि स्कूल फैसिलीटी ग्रांट, विकास कोष, दानदाताओं से प्राप्त की जा सकती है।

निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
क्रमांक: शिविरा-माध्य/मा-स/विविध/2014 दिनांक: 10.2.14

5. प्रतियोगी परीक्षाओं की अनुमति जिशिअ स्तर पर नहीं देने के क्रम में निर्देश

- कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
- क्रमांक : शिविरा-मा/मा-स/परीक्षा/22496/2012-13 दिनांक

21-1-14 समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय)

● विषय : प्रतियोगी परीक्षाओं की अनुमति के क्रम में।

उपर्युक्त विषय में निदेशालय के यह ध्यान में आया है कि जिला शिक्षा अधिकारी/संस्था प्रधान अपने स्तर पर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की अनुमति दे देते हैं, तत्पश्चात् संबंधित परीक्षा लेने वाले विभाग/सेवा प्रदाता फर्म द्वारा यह कह कर अनुमति के लिये आग्रह किया जाता है, कि हमने संबंधित संस्था प्रधान/जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वारा हमें अनुमति दे दी गई है। जबकि निदेशालय राज्य में चल रही विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के तहत उक्त तिथि में परीक्षा की अनुमति नहीं दे पाता है।

अतः भविष्य में कोई भी जिला शिक्षा अधिकारी/संस्था प्रधान बिना निदेशालय की अनुमति के किसी भी विभाग एवं सेवा प्रदाता फर्म को अपने स्तर पर परीक्षा की अनुमति नहीं देंगे। इसकी अक्षरशः पालना की जाए।

निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

6. गैर सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों के भवन/नाम/वर्ग परिवर्तन एवं अतिरिक्त माध्यम (हिन्दी/अंग्रेजी) के आवेदन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

● क्रमांक : शिविरा-माध्य/माध्यमिक/अ-3/भनावमा/मूल/2014/दिनांक 14-2-2014 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक प्रथम/द्वितीय) ● विषय : गैर सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों के भवन/नाम/वर्ग परिवर्तन एवं अतिरिक्त माध्यम (हिन्दी/अंग्रेजी) के आवेदन के सम्बन्ध में।

लेख है कि गैर सरकारी मान्यता/सहायता प्राप्त विद्यालयों के भवन/नाम/वर्ग परिवर्तन एवं अतिरिक्त माध्यम (हिन्दी/अंग्रेजी) के सत्र 2014-15 के प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते हैं। संस्था द्वारा निर्धारित आवेदन पत्र प्रस्तुत करने के एक सप्ताह में निरीक्षण दल का गठन कर, निरीक्षण दल से एक सप्ताह में निरीक्षण प्रतिवेदन मय स्पष्ट टिप्पणी एवं अभिशंषा के प्राप्त करें। निरीक्षण दल निरीक्षण के दौरान विद्यालय भवन की पर्याप्तता के सम्बन्ध में अपनी स्पष्ट टिप्पणी एवं अभिशंषा करें। निरीक्षण दल की टिप्पणी की समीक्षा कर विद्यालय का आवेदन पत्र अपनी स्पष्ट अनुशंषा सहित इस कार्यालय को निम्नानुसार आवश्यक रूप से वाहक स्तर पर उपलब्ध करावें-

निर्धारित तिथियां इस प्रकार से हैं :-

क्र.सं.	विवरण	निर्धारित समयावधि
1.	संस्था द्वारा निर्धारित प्रपत्र में आवेदन पत्र सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को प्रस्तुत करना	15 मार्च, 2014
2.	सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वारा विद्यालय का निरीक्षण करवाकर नियमानुसार अपनी स्पष्ट अनुशंषा सहित इस कार्यालय को उपलब्ध करवाना	10 अप्रैल, 2014

भवन/नाम/वर्ग परिवर्तन एवं अतिरिक्त माध्यम (हिन्दी/अंग्रेजी) हेतु शासन के पत्रांक प. 8 (55) शिक्षा-5/04 जयपुर दिनांक 21/9/05 एवं समसंख्यक पत्र दिनांक 30/08/2012 के अनुसार किसी भी प्रकार के (भवन/नाम/वर्ग) परिवर्तन एवं अतिरिक्त माध्यम (हिन्दी/अंग्रेजी) के लिए आवेदन शुल्क निम्नानुसार देय है-

स्तर	भवन/नाम/वर्ग एवं अतिरिक्त माध्यम का निर्धारित शुल्क		
	निर्धारित शुल्क एवं भवन परि. 2 कि.मी. तक	उसी नगरपालिका क्षेत्र में 2 कि.मी. से अधिक	
		विभागीय शुल्क	बालिका शिक्षा फाउण्डेशन शुल्क
माध्यमिक	7,000/-	7,000/-	7,000/-
उच्च माध्यमिक	10,000/-	10,000/-	10,000/-

उक्त आवेदन शुल्क राशियों का ड्राफ्ट निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के नाम से तथा राज्य सरकार के पत्रांक पं. 8 (55) शिक्षा-5/06 जयपुर दिनांक 23/5/07 एवं समसंख्यक पत्र दिनांक 01/06/2007 एवं प. 8 (55) शिक्षा-5/2010 दिनांक 30.08.2012 के अनुसार उसी नगर निगम, नगर पालिका, नगर परिषद में भवन परिवर्तन करने पर 2 कि.मी. की दूरी की सीमा में शिथिलन प्रदान करते हुए कही भी भवन परिवर्तन किया जा सकता है। इसके लिए उपरोक्तानुसार अतिरिक्त शुल्क का ड्राफ्ट सचिव, बालिका शिक्षा फाउण्डेशन राजस्थान जयपुर के नाम से आवेदन पत्र के साथ प्रस्तुत करना होगा।

उल्लेखनीय है कि इस संबंध में आप अपने स्तर पर समाचार पत्रों से इसका सम्पूर्ण प्रचार प्रसार करें क्योंकि उपरोक्त तिथियों के पश्चात् किसी भी प्रकार का आवेदन पत्र स्वीकार्य नहीं होगा। प्रस्ताव किसी भी प्रकार की कोई कमियां हो तो पूर्ण करके भेजें, अधूरे प्रस्ताव किसी भी परिस्थिति में इस कार्यालय को प्रेषित न करें। संस्था से प्रस्तावित भवन की विडियोग्राफी की सी.डी. प्राप्त कर कार्यालय में संधारित करें तथा इस सम्बन्ध में प्रमाण पत्र प्रस्तुत करें। यह प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत करें कि 'निर्धारित तिथि तक निदेशालय को भिजवाए जा रहे प्रकरणों के अतिरिक्त कोई प्रकरण बकाया नहीं है।'

निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

7. गैर सरकारी मान्यता/सहायता प्राप्त विद्यालयों को सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.सी.ई. नई दिल्ली से संबद्धता हेतु अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी किये जाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

● क्रमांक : शिविरा-माध्य/माध्यमिक/अ-2/केमाशिबो/2014-15/दिनांक 14-02-2014 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) ● विषय : गैर सरकारी मान्यता/सहायता प्राप्त विद्यालयों को सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.सी.ई. नई दिल्ली से संबद्धता हेतु अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी किये जाने बाबत।

लेख है कि गैर सरकारी मान्यता/सहायता प्राप्त विद्यालयों को

सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.सी.ई. नई दिल्ली से संबद्धता हेतु सत्र 2014-15 में अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी किये जाने हेतु प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते हैं। आवेदन पत्र का प्रारूप व शपथ पत्र का नमूना इस पत्र के साथ संलग्न है। संस्था द्वारा निर्धारित आवेदन पत्र प्रस्तुत करने के एक सप्ताह में निरीक्षण दल का गठन कर, निरीक्षण दल से एक सप्ताह में निरीक्षण प्रतिवेदन मध्य टिप्पणी के प्राप्त करें। निरीक्षण दल निरीक्षण के दौरान विद्यालय भवन की पर्याप्तता तथा विद्यालय की वित्तीय स्थिति के सम्बन्ध में अपनी स्पष्ट टिप्पणी करें। निरीक्षण दल की टिप्पणी की समीक्षा कर विद्यालय का आवेदन पत्र अपनी स्पष्ट अनुशंसा सहित इस कार्यालय को निम्नानुसार आवश्यक रूप से उपलब्ध करवाना है :-

(1) निर्धारित तिथियां इस प्रकार से हैं :-

क्र.सं.	विवरण	निर्धारित अंतिम तिथि
1.	संस्था द्वारा निर्धारित प्रपत्र में आवेदन पत्र सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को प्रस्तुत करना।	20-03-2014
2.	सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वारा विद्यालय का निरीक्षण करवाकर नियमानुसार आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता सहित स्पष्ट अनुशंसा सहित निदेशालय को भिजवाना।	26-05-2014

(2) प्रस्ताव के साथ निम्नानुसार देय है।

- आवेदन शुल्क-5,000 रुपये
- अनापत्ति प्रमाण पत्र-15,000 रुपये
- शिथिलन शुल्क-उच्च प्राथमिक स्तर के न्यूनतम 3 सत्र के अनुभव में शिथिलन चाहने पर निम्नानुसार शुल्क देय होगा:-
 - एक सत्र के शिथिलन पर-5,000 रुपये
 - दो सत्र के शिथिलन पर-10,000 रुपये
 - तीन सत्र के शिथिलन पर-15,000 रुपये

नोट : समस्त शुल्क सचिव, बालिका शिक्षा फाउण्डेशन, राजस्थान जयपुर के नाम से बैंक ड्राफ्ट बनाकर आवेदन पत्र के साथ संलग्न करें।

(3) जिन विद्यालयों द्वारा Emblems and Names Act-1950 का उल्लंघन पाया जाता है, अर्थात् जिन विद्यालयों के नाम में इण्डियन, नेशनल या इससे मिलते जुलते शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है, उन विद्यालयों के आवेदन स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

(4) विद्यालय द्वारा आर.टी.ई. नियमों की पूर्णतः पालना की जानी अनिवार्य है।

(5) जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा स्पष्ट अनुशंसा की जानी आवश्यक है, सशर्त (conditional) अनुशंसा किये जाने पर संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी।

निदेशक

माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान

बीकानेर

सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.सी.ई. से सम्बद्धता के लिए अनापत्ति

प्रमाण पत्र जारी किये जाने हेतु आवेदन पत्र सत्र 2014-15

1. संस्था का नाम
2. विद्यालय का नाम
3. रजिस्ट्रेशन नम्बर (प्रति संलग्न करें)
4. विद्यालय का वर्तमान स्तर (उ.प्रा./मा./उ.मा.वि.).....
5. शिक्षा का माध्यम (हिन्दी/अंग्रेजी).....
6. सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.सी.ई. में से किससे संबद्धता चाहते हैं
7. निम्नलिखित अभिलेख संलग्न करें।

1. शुल्क का विवरण (बैंक ड्राफ्ट नम्बर, दिनांक एवं राशि)

आवेदन शुल्क	अनापत्ति प्रमाण पत्र शुल्क	कुल शुल्क	बैंक ड्राफ्ट का विवरण
5000	15000	20000	

2. उ.प्रा./माध्यमिक/उ.मा.स्तर पर मान्यता आदेशों की प्रमाणित प्रतियाँ
3. कक्षावार छात्र/छात्रा संख्या का चार्ट
4. समिति/ट्रस्ट के रजिस्ट्रेशन की प्रति
5. रजिस्ट्रार से प्रमाणित विधान की प्रति
6. रजिस्ट्रार से प्रमाणित प्रबन्ध समिति के नामों की प्रति (न्यूनतम 15 सदस्य)
7. प्रबन्ध समिति द्वारा पारित प्रस्ताव की समस्त सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित प्रति
8. पी.डब्ल्यू.डी. अभियन्ता द्वारा प्रमाणित भवन का ब्ल्यू प्रिन्ट
9. पी.डब्ल्यू.डी. अभियन्ता द्वारा जारी नवीन भवन सुरक्षा प्रमाण पत्र
10. गत तीन वर्षों का वित्तीय आय प्रमाण पत्र
11. संस्था के अध्यक्ष/सचिव द्वारा 10/- रुपये के नॉन ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर पर निर्धारित प्रारूप में नोटेरी द्वारा प्रमाणित शपथ पत्र जिसमें आर.टी.ई. नियमों की पूर्णतः पालना से संबंधित घोषणा भी सम्मिलित है।
12. कार्यरत कर्मचारियों का भौतिक सत्यापन कर निरीक्षण दल के संयोजक द्वारा सत्यापित संस्थापन विवरण (नाम, जन्मतिथि, नियुक्ति तिथि, वेतनमान, शैक्षिक/प्रशैक्षिक योग्यता)
13. भवन के मापदण्ड के अनुसार विद्यालय भवन में अग्नि शमन संयंत्र स्थापित होने का, मोबाईल टावर विद्यालय में नहीं होने का तथा विद्यालय परिसर से हाईटेंशन विद्युत तार नहीं गुजरने का निरीक्षण दल के संयोजक अधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र।

यह प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त वर्णित सभी सूचनाएं पूर्णतः सही हैं। इनसे संबंधित सभी मूल अभिलेख विद्यालय में सुरक्षित हैं।

नोट :-

1. आवेदन पत्र के साथ प्रस्तुत सभी छाया प्रतियाँ निरीक्षण दल के संयोजक अधिकारी द्वारा आवश्यक रूप से प्रमाणित होनी चाहिए।
2. बिन्दू सं. 12 में वर्णित कर्मचारियों का संस्थापन विवरण प्रस्तुत करना है जिसे निरीक्षण दल के द्वारा सत्यापित किया जायेगा। प्रस्ताव

के साथ कर्मचारियों के प्रमाण पत्र/अंकतालिकाओं की छाया प्रतियां संलग्न नहीं करें।

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर मय मोहर अध्यक्ष/सचिव के हस्ताक्षर मय मोहर निरीक्षण दल की टिप्पणी मय हस्ताक्षर : अनुशंसा की जाती है/नहीं की जाती है, क्योंकि

हस्ताक्षर हस्ताक्षर हस्ताक्षर
सदस्य मय पदनाम सदस्य मय पदनाम संयोजक
जिला शिक्षा अधिकारी की अनुशंसा : अनुशंसा की जाती है/नहीं की जाती है, क्योंकि

जिला शिक्षा अधिकारी
(माध्यमिक-I/II)....

शपथ पत्र का प्रारूप

10 रुपये के नोन ज्युडिशियल स्टाम्प पेपर पर नोटेरी द्वारा अभिप्रमाणित हो

- (1) विद्यालय के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली/आई.सी.एस.सी.ई., नई दिल्ली से सम्बद्धता हेतु अनापत्ति प्रमाण पत्र एवं मान्यता प्राप्त होने पर संस्था द्वारा राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था अधिनियम 1989 एवं नियम 1993 के समस्त प्रावधानों एवं विभाग द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों की पूर्णतः पालना की जाएगी तथा राज्य/राष्ट्रीय कार्यक्रमों में प्राप्त आदेश/निर्देशानुसार भागीदारी निभाई जाएगी।
- (2) विद्यालय द्वारा उक्त बिन्दु संख्या 1 की पूर्णतः पालना नहीं करने अथवा भागीदारी नहीं निभाने पर विभाग द्वारा राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था अधिनियम 1989 एवं नियम 1993 के तहत विद्यालय के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए विद्यालय को सम्बद्धता हेतु जारी अनापत्ति प्रमाण पत्र प्रत्याहरित कर मान्यता रद्द की जा सकेगी।
- (3) संस्था वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर से मान्यता प्राप्त है। सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.सी.ई. से सम्बद्धता/मान्यता प्राप्त होने पर नियत समय में उस बोर्ड से मान्यता समाप्त करा लेगी। मान्यता समाप्त होने के पश्चात् ही सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.सी.ई. से मान्यता प्राप्त करेगी। अन्यथा स्थिति में संस्था के विरुद्ध विभागीय/कानूनी कार्यवाही की जा सकेगी।
- (4) विद्यालय द्वारा भारत सरकार के आर.टी.ई. नियम 2009 व राजस्थान सरकार के आर.टी.ई. नियम 2011 की पूर्ण पालना की जा रही है तथा भविष्य में भी इन नियमों की पूर्ण पालना की जायेगी। विद्यालय द्वारा इन नियमों की पूर्णतः पालना नहीं करने अथवा भागीदारी नहीं निभाने पर विभाग द्वारा राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था अधिनियम 1989 एवं नियम 1993 के तहत विद्यालय के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए विद्यालय को सम्बद्धता हेतु जारी अनापत्ति प्रमाण पत्र प्रत्याहरित कर मान्यता रद्द की जा सकेगी।

शपथ गृहिता, अध्यक्ष/सचिव

8. शिक्षा में गुणवत्ता हेतु सघन विद्यालय निरीक्षण-निर्देश

- कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
- क्रमांक : शिविर/माध्य/निप्र/डी-2/21760/सघननिरीक्षण/2012/138/ दिनांक-23.1.14
- विषय-शिक्षा में गुणवत्ता हेतु सघन विद्यालय

निरीक्षण अभियान की निरन्तरता के संबंध में। ● प्रसंग : समसंख्यक पत्र दिनांक : 3.12.13 एवं 08.01.2014

उपरोक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्रों द्वारा राज्य की समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कठिन विषयों के निवारण एवं शिक्षा में गुणवत्ता हेतु अतिरिक्त कक्षाओं के संचालन एवं गृहकार्य/कक्षा कार्य उत्तर पुस्तिकाओं के अवलोकन एवं सुधार बाबत निर्देश प्रदान किये गये थे। पत्र क्रमांक-शिविर/माध्य/संस्था/एफ-1/12155/2011/179 दिनांक 21.01.14 द्वारा जारी निर्देशों के क्रम में समस्त निरीक्षण अधिकारियों (निदेशालय अधिकारी/उप निदेशक-मण्डल/जि.शि.अ(मा)/अजि.शि.अ/नोडल संस्था प्रदान आदि) को पाबन्द किया जाता है कि उक्तानुसार निरीक्षण कार्यक्रम दिनांक 04.3.14 तक अनवरत रूप से जारी रखा जावे तथा निरीक्षण के संबंध में समसंख्यक पत्र दिनांक 08.1.14 एवं विडियो कान्फ्रेंसिंग दिनांक 21.01.14 में प्रमुख शासन सचिव महोदय द्वारा प्रदत्त निर्देशों के अनुरूप समस्त कक्षाओं में कक्षा कार्य/गृहकार्य उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन कर त्रुटियों पर लाल स्याही से गोले कर त्रुटि सुधार भी किया जावे तथा युनिट टेस्ट के माध्यम से निदानात्मक/उपचारात्मक शिक्षण करवाया जाना सुनिश्चित करावे।

समस्त संस्था प्रधान पूर्व निर्देशानुसार प्रपत्र-1 में प्रतिदिन निरीक्षण की गई कक्षाओं का अभिलेख संधारित करेंगे तथा प्रपत्र-2 में संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में नियंत्रण कक्ष को वांछित सूचना प्रेषित करेंगे एवं संबंधित उप निदेशक प्रपत्र-3 में अधीनस्थ कार्यालयों से सूचना संकलित कर आगामी दिवस निदेशालय को प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करेंगे। उक्त निर्देशों की अक्षरशः पालना की जावे।

(विकास एस. भाले), निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

शिविर पंचांग

मार्च, 2014					
रवि	30	2	9	16	23
सोम	31	3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

● कार्य दिवस 25, रविवार 05, अवकाश 01, उत्सव 02 ● 1 मार्च-दोपारी विद्यालय प्रातः 7 से सायं 6 बजे तक (प्रत्येक पारी 5.30 घंटे)

15 मार्च-विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव), अक्टूबर से मार्च तक की छात्रवृत्ति का वितरण। 16 मार्च-होलिका दहन (अवकाश) 15 मार्च से 30 जून तक-एक पारी विद्यालय प्रातः 7.30 से दोपहर 12.30 बजे। 17 मार्च-धुलण्डी (अवकाश) 30 मार्च-राजस्थान दिवस (उत्सव) 31 मार्च-निःशक्त विद्यार्थियों हेतु केन्द्र प्रायोजित समावेशित शिक्षा योजना संबंधी व्यय, बचत एवं लाभान्वित विद्यार्थियों की सूचना जि.शि.अ (मा.) को प्रेषित करना। नोट :- 1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा। 2. शेष प्रशिक्षण आयोजित किये जायेंगे। (प्रारम्भिक शिक्षा)

ईश्वर की पाती बंदे के नाम

मुझे खुश रखोगे तो तुम खुश रहोगे

□ उज्ज्वल पाटनी

परमात्मा से प्रार्थना का दर्शन सार्वभौमिक व सर्वकालिक रहा है। हम ईश्वर की अभ्यर्थना करते हैं। उसे पाने का प्रयास करते हैं। शायद ही कोई व्यक्ति हमें मिले जो यह कह सके कि उसने प्रभु से साक्षात्कार किया है। उसे ढूँढने में हम न जाने कितने मन्दिर-मस्जिद, गुरुद्वारों, गिरजाघरों, तीर्थ स्थानों एवं सन्त महात्माओं की शरण में आते हैं। ईश्वर तो परम दयालु हैं। दीन बंधु और दया के भण्डार हैं। बंदे की इस मगजमारी को देख, उस पर रहम कर दे बता रहे हैं इन्हें खुश रखने और हासिल करने का सरल तरीका। आइये, इसे जानते हैं। यह सरल-सर्वव्यापक तरीका हम अपना सकते हैं। ईश्वर का यह पत्र दैनिक भास्कर के रविवारीय रसरंग परिशिष्ट दिनांक 19 जनवरी 2014 में प्रकाशित हुआ था, जिसे समाचार पत्र के प्रति आभार के साथ यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

-वशिष्ठ संपादक

प्रिय मनुष्य,

मैंने तुम्हें धरती पर भेजा है तो यह मेरी जिम्मेदारी है कि तुम्हें हर पल सुखी रखूं। मेरी जिम्मेदारी है कि तुम्हारा परिवार स्वस्थ हो, हंसी-खुशी के साथ रहे और आपस में बहुत सारा प्रेम हो।

मैं दो रूपों में तुम्हारे साथ हमेशा रहता हूं। मेरा पहला रूप है, तुम्हारे बिल्कुल पास रहने वाले तुम्हारे वृद्ध माता-पिता। मेरा दूसरा रूप है, दुनिया के लाखों करोड़ों नन्हें बच्चे, जिनमें तुम्हारी संताने भी शामिल है।

तुम तो जानते हो कि मेरे आशीर्वाद में बहुत ताकत है। मैं तुम्हारे माता-पिता के रूप में तुम्हें आशीर्वाद देने का मौका हर पल ताकता रहता हूं, लेकिन तुम्हारे पास मेरे लिए वक्त ही नहीं होता। मैं तुम्हें जिंदगी की तकलीफों से जीतने के लिए कुछ रास्ते सुझाना चाहता हूं, लेकिन तुम मेरे सुझावों को पुराने जमाने का मानकर मुझे सुनना ही नहीं चाहते। मैं हमेशा चाहता हूं कि अपनी सारी शक्ति तुम्हें उड़ेल दूं। पहले जब तुम माता-पिता के पैर दबाते थे या उनके पैर छूते थे तब मैं यह आशीर्वाद तुम पर उड़ेल देता था। अब तुम्हारे पास वक्त ही नहीं होता है। पैर छूने की जगह अब दूर से ही 'हाय' बोलकर निकल जाते हो।

कई बार सोचता हूं कि माता-पिता के रूप में तुम्हारे कमरे में घुसू लेकिन इंटरनेट,

फेसबुक या चैटिंग के बीच में कहीं तुम्हें डिस्टर्ब ना कर बैठूं, यह सोचकर झिझकता हूं। तुम जब बाहर नौकरी पर होते हो तो हफ्तों तुमसे बात नहीं होती। तुम्हारा मनीऑर्डर आता है तो आंख से आंसू टपक जाते हैं, क्योंकि तुम्हारी जगह तुम्हारा मनीऑर्डर कैसे ले सकता हूं। मन बस यही कहता था कि दो लाइन तुम फोन से बतिया

लो या दो-चार महीने में वक्त निकालकर आ जाओ तो जीने का आनंद आ जाए।

फिर सोचता हूं कि तुम उन संतानों से तो अच्छे हो जो अपने माता-पिता का तिरस्कार करते हैं या उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ देते हैं। आज तुम्हें बताना चाहता हूं कि मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च सब जगह मेरा निर्जीव स्वरूप है। मेरा जीवंत स्वरूप तुम्हारे घर में तुम्हारे माता-पिता हैं। उनकी जिन्दगी में खुशियां भर दो मैं तुम्हारी झोली में काशी, मक्का, मदीना सबका पुण्य लाकर डाल दूंगा।

मुझे खुश रखने का एक और तरीका है। मुझे खुश करना है तो आस-पास के हर बच्चे को खुश रखो। मुश्किल और कमी में पड़े नन्हें बच्चों की तकलीफ दूर करो और आंसू पोंछो। जब भी ऐसे बच्चे तुम्हें देखकर मुस्कराएं तो समझना कि मैं मुस्करा रहा हूं। ये कैसी विडंबना है कि अपने बच्चे की आंख में कतरा आंसू भी नहीं देख सकते और दूसरे नन्हें बच्चों से ढेर सारा काम कराते हुए लोगों की आत्मा नहीं कलपती।

भाग्य की चिंता मत करो क्योंकि मैं ही भाग्यविधाता हूं। तुम मुझे जितना खुश करोगे, मैं तुम्हारे भाग्य में उतनी ही खुशियां डालता चला जाऊंगा। यकीन न हो तो आजमा कर देख लो।

तुम्हारा दोस्त
ईश्वर

प्रार्थना

मैं दूंदता तुझे था जब कुंज औं वन में,
तू ब्रोजता मुझे था तब दीन के वतन में।
तू आह बग किन्की की मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुकाता संगीत में अजन में।
मेरे लिए बड़ा था दुविधों के द्वार पंख तू,
मैं बाट जोहता था तेरी किन्की चमन में।
बग कब किन्की के आँखू मेरे लिए बड़ा तू,
आँखू लगी थीं मेरी तब मान औं धन में।
बाजे बजा बजा कब मैं था तुझे विझाता,
तब तू लगा हुआ था पतितों के संगठन में।
बेबस ठिरे हुओं के तू बीच में बड़ा था,
मैं कतर्ग देवता था झुकता कहां चरण में।
दुन्द मैं न हार मानू सुन्द मैं तुझे न भूलू,
ऐसा प्रवाह भव दे मेरे अधीन मन में।
कठिनाई औं दुन्दों का इतिहास ही सुयश है,
मुझको समर्थ कब तू बस कष्ट के सहन में।
मैं दूंदता तुझे था जब कुंज औं वन में,
तू ब्रोजता मुझे था तब दीन के वतन में।

-रामनरेश त्रिपाठी

क हा जाता है कि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है।

आज का बालक ही आने वाले कल के लिए राष्ट्र का कर्णधार होगा। यदि राष्ट्र का कर्णधार ही शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ और मजबूत नहीं होगा तो राष्ट्र में मजबूती सम्भव नहीं होगी। बालक को स्वस्थ रखने में खेलकूद का विशेष योगदान होता है। पहले बालक की शिक्षा का प्रारम्भ पहली कक्षा से होता था जबकि आजकल एल.के.जी. तथा यू.के.जी. से शिक्षा का प्रारम्भ होता है। प्राचीन काल में बालक के अध्ययन काल में ही मल्ल विद्या तथा देशी खेलों को खिलाकर जहां बालक के शरीर को मजबूती प्रदान की जाती थी वहीं आजकल छोटी कक्षाओं से ही बालकों को खेल-खेल में ही शिक्षा प्रदान की जाने लगी है। इससे यह लाभ हुआ कि बालक का मानसिक विकास तेजी से होने लगा है।

खेल-खेल में ही कक्षा कक्ष में शिक्षा के साथ यदि बालक को खेल के मैदान से रूबरू कराकर हल्का व्यायाम और फुटबाल, बास्केटबाल, कबड्डी एवं एथेलेटिक आदि खेलने को प्रोत्साहित किया जाए तो युवावस्था आते-आते वे राष्ट्र के लिए अच्छे खिलाड़ी बन सकते हैं। दुनिया के छोटे-छोटे देश हमारे मुकाबले में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर काफी पदकों पर कब्जा जमा लेते हैं और हम केवल ओलम्पिक खेलों में दो-चार चांदी व कांस्य पदक ही जीत पाते हैं। खेलों के क्षेत्र में हमारी उपलब्धि न के बराबर रहती है। अतः बालक की शुरुआती शिक्षा के साथ उसे खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने के का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। खेल मैदान में खिलाड़ी निम्न उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करता है-

1. बालक में अनुशासन से रहने की भावना पैदा होती है।
2. पारस्परिक सहयोग की भावना पनपने लगती है।
3. अच्छे खिलाड़ियों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।
4. खिलाड़ी में राष्ट्रीय व देश भक्ति की भावना पैदा होती है।
5. खेलने वाले खिलाड़ी में हार और जीत को सहन करने की क्षमता पैदा होती है।

खेल खिलाड़ी

अहम् है शारीरिक शिक्षक होना

□ यासीन खां चौहान

6. एक टीम के खिलाड़ी दूसरी टीम के खिलाड़ियों से मिलते हैं तो पारस्परिक रूप से अच्छे विचारों का आदान प्रदान होता है।
7. खिलाड़ियों में विश्वबन्धुत्व की भावना जाग्रत होती है।
8. एक अच्छा शारीरिक शिक्षक विद्यालय विकास हेतु नागरिकों के मध्य सेवा का कार्य भी करता है। वह विद्यालय समय पूर्व व पश्चात ग्रामवासियों से जनसम्पर्क कर विद्यालय में आर्थिक सहयोग हेतु भामाशाहों को प्रेरित कर विद्यालय में हर सम्भव आर्थिक सहयोग या आवश्यक फर्नीचर, पंखे आदि के लिए उनसे सहयोग लेकर विद्यालय के विकास में अपनी भागीदारी अंकित करता है।
9. दुर्घटना के समय मानव जीवन बचाने के लिए शारीरिक शिक्षक युवाओं व हर नागरिक को आवश्यकता होने पर अग्रणी मुख्य भूमिका निभाते हुए घायलों को रक्तदान के लिए युवाओं को मानसिक रूप से प्रेरित कर दुर्घटना में घायलों की मदद कर उनकी जान बचाता है। एक अच्छा शारीरिक शिक्षक अच्छा कम्पाउंडर भी होता है।
10. वृक्षारोपण कराकर विद्यार्थियों को वृक्षों की सुरक्षा व देखभाल करने के लिए प्रेरित कर वृक्षारोपण में अपनी भूमिका निभाता है।
11. राष्ट्रीय कार्यक्रमों जैसे भ्रूण हत्या, पल्स पोलियो अभियान को सफल बनाने के लिए शारीरिक शिक्षक अग्रणी होकर रैलियों के माध्यम से बच्चों को अनुशासित रखते हुए गली, मौहल्लों में नागरिकों को प्रेरित करता है।
12. राष्ट्रीय विपदा के समय शारीरिक शिक्षक मानसिक रूप से पूर्व में देश सेवा की भावना रखते हुए उस संकट में हर समय

मदद के लिए तैयार रहता है। वह इस हेतु प्रार्थना सभा में बच्चों को अनुशासन व सेवाभाव की भावना पैदा करने की प्रेरणा देता है।

13. एक दूसरे देशों के बीच जो अनावश्यक कटुता पैदा हो जाती है तो खेलों के माध्यम से कटुता दूर करने का खेल का मैदान ही सर्वोत्तम उपाय है। इस कारण आज खेलों के माध्यम से एक दूसरे देशों के बीच दूरियां समाप्त होती जा रही है।

उपर्युक्त इन सभी उद्देश्यों को प्राप्त करवाने में विद्यालय में कार्यरत शारीरिक शिक्षक की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। वह बालकों को खेल कौशल की बारीकियों की तो शिक्षा देता ही है तथा इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वह छात्रों को उत्प्रेरित भी करता है।

शारीरिक शिक्षक अपने विद्यालयों में समय से पूर्व पहुंचकर विद्यालय की प्रार्थना सभा को प्रभावी बना सकता है। वह बालकों में स्वयं अनुशासित रहकर छात्रों को अनुशासित रखता है। विद्यालय का शारीरिक शिक्षक छात्रों को स्वच्छता के साथ विद्यालय आने हेतु प्रेरित करता है। वह विद्यालय समय के पश्चात छात्रों को खेलकूद का प्रशिक्षण प्रदान करता है। विद्यालय में आयोजित होने वाले उत्सवों की पूर्व तैयारी करवाकर शारीरिक शिक्षक राष्ट्रीय पर्वों पर रुचि के साथ भाग लेने हेतु छात्रों को प्रेरणा प्रदान करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि विद्यालय में शारीरिक शिक्षक की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है। इसके लिए शारीरिक शिक्षकों को पूर्ण निष्ठा एवं मनोयोग से अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। अनुशासन एवं व्यवस्था को सुनिश्चित करने में उनकी भूमिका ही उनको मान-सम्मान और यश-प्रतिष्ठा दिलाने की चाबी है।

-शारीरिक शिक्षक (पूलमद)

रा.मा.वि. कान्धाराण, राजगढ़ (चूरू)

मो. 9461038258



गाँ धी जी ने कहा था-“शिक्षा महिला विकास और उसके सशक्तिकरण का ऐसा माध्यम है जिससे राष्ट्र की सम्पूर्ण प्रगति जुड़ी रहती है।” वर्षों पहले कहा गया गांधी जी का यह कथन वर्तमान संदर्भों में भी खरा उतरता है। विश्व की उत्पादिका पोषिका शक्ति सम्पन्ना, गृहस्थ आश्रम की मूल संचालिका महिलाओं की कार्यकुशलता, सदाचरण, सुशिक्षा एवं बुद्धिमत्ता पर विश्व मानव समाज का स्वरूप आधृत होता है।

गौरवशाली इतिहास के किसी भी कालखण्ड के आदर्श समाज का स्वरूप उस कालखण्ड में स्त्रियों की स्थिति के सापेक्ष ज्ञात किया जाता है। जिस काल के समाज में स्त्रियों की स्थिति जितनी समतासूचक तथा अच्छी होती है, वह समाज उतना ही विकसित और समृद्ध माना जाता है।

मानव-समाज की उन्नति के मार्ग में रुकावट का एक महत्वपूर्ण कारण नर की सहचरिणी उसे जन्म देने वाली नारी जीवन के प्रति नर का उपेक्षित भाव है, उसके खान-पान, शिक्षा-दीक्षा एवं सम्मान का उचित प्रबन्धन किया जाना है। मानवतावादी बुद्धिजीवियों, दार्शनिकों, समाज सुधारकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस बात पर जोर दिया गया कि आदर्श विश्व मानव-समाज की संस्थापना एकांगी (पुरुष उन्नति मात्र) रूप में संभव नहीं है। प्रत्येक दशा में महिलाओं की उन्नति एवं उनके सम्मान को संरक्षित एवं सर्वोद्भिन्न करना होगा।

विश्व मानव अधिकार की परिधि में महिलाओं के मानव अधिकारों के व्यवस्थापन के क्षेत्र में संयुक्त संघ द्वारा प्रायोजित चतुर्थ विश्व सम्मेलन महत्वपूर्ण पहल है। बीजिंग (चीन) में 4 सितम्बर से 15 सितम्बर 1995 तक हुए महिलाओं पर “चतुर्थ विश्व सम्मेलन” ने महिलाओं के मानव अधिकारों की आधारशिला रखने का कार्य किया।

भारत में 31 जनवरी, 1992 को राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की गई। इस आयोग

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष संघर्ष से उत्कर्ष की राह पर बढ़ते नारी कदम

□ सम्पत लाल शर्मा ‘सागर’

में एक अध्यक्ष, पाँच सदस्य और एक सदस्य सचिव होता है जिसकी नियुक्ति केन्द्र सरकार करती है। अध्यक्ष एवं सदस्यों का कार्यकाल तीन वर्ष का होता है। वर्तमान में इस आयोग की अध्यक्ष श्रीमती ममता शर्मा हैं। यह आयोग महिलाओं के लिए संविधान और अन्य विधियों के अधीन उपबन्धित रक्षा उपायों से सम्बन्धित सभी विषयों का अन्वेषण करता है और इसकी रिपोर्ट प्रतिवर्ष केन्द्र सरकार को देता है। यह महिलाओं की दशाओं को सुधारने के लिए सिफारिशें भी करता है। यह महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव और अत्याचारों से सम्बन्धित समस्याओं की जाँच करता है और उन्हें दूर करने में आने वाली बाधाओं का पता लगाकर उन्हें दूर करने का प्रयास करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नारी उत्कर्ष के प्रयास:-

- (1) आर्थिक एवं सामाजिक परिषद द्वारा 1946 में महिलाओं की प्रस्थिति पर आयोग (द कमीशन ऑन द स्टेटस ऑफ वीमैन) स्थापित किया गया। यह आयोग पूरे विश्व में महिलाओं की समानता की दिशा में की गई प्रगति की जाँच व राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्रों में स्त्रियों के अधिकारों को बढ़ाने के लिए सिफारिशें कराता है।
- (2) महासभा द्वारा 1949 में व्यक्तियों के अवैध व्यापार पर रोक एवं अन्य लोगों की वेश्यावृत्ति द्वारा शोषण पर अभिसमय।
- (3) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्था द्वारा 1951 में पुरुषों एवं महिला कर्मचारों के समान मूल्य के लिए समान वेतन अभिसमय।
- (4) महासभा द्वारा 1952 में मतदान के अधिकार समेत महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों पर अभिसमय।
- (5) नियोजन एवं उपजीविका से सम्बन्धित भेदभाव पर अभिसमय (1960)
- (6) 1962 में महासभा द्वारा अंगीकार किया गया विवाह हेतु सम्पत्ति, विवाह के लिए

न्यूनतम आयु तथा विवाहों के पंजीकरण पर अभिसमय।

- (7) महिलाओं पर होने वाले भेदभाव की समाप्ति पर घोषणा (1967)
- (8) महिलाओं के विकास और उत्थान हेतु संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 1975 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया।
- (9) 1976 में महासभा द्वारा महिलाओं के संयुक्त राष्ट्र दशक के लिए स्वैच्छिक फण्ड तथा महिलाओं की उन्नति के लिए संयुक्त राष्ट्र शोध की स्थापना।
- (10) संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 18 दिसम्बर 1979 को महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार के भेदभाव की समाप्ति पर प्रसंविदा को स्वीकार किया और संविदा 3 सितम्बर 1981 से लागू हुई।
- (11) महिला कल्याण की भावना को सर्वोपरि मानते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर विश्व स्तर पर महिला अधिकार की जागृति हेतु एवं महिलाओं को न्याय दिलाने हेतु 1975-95 के वर्षों में विश्व स्तर पर चार विश्व महिला सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय स्तर पर नारी उत्कर्ष के प्रयास :-

भारत सरकार की पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा महिलाओं के लिए अनेक विकास कार्यक्रम एवं कल्याणकारी योजनाओं का संचालन किया जा रहा है उनमें से प्रमुख योजनाएं निम्नांकित हैं-

- (1) दवाकरा योजना 1982-यह ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराते हुए उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषाहार और शिशुओं की देखभाल करने जैसी मूलभूत सेवाएं प्रदान करती है।
- (2) नोराड प्रशिक्षण योजना 1989-इसका उद्देश्य महिलाओं को लघु व्यवसाय से सम्बन्धित प्रशिक्षण देना है।
- (3) किशोरी बालिका योजना 1992-यह

गरीब परिवार की बालिकाओं के उचित स्वास्थ्य और शिक्षा की व्यवस्था करता है।

- (4) मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम 1992-यह शिशुओं और माताओं को पोषाहार उपलब्ध कराकर सुरक्षित मातृत्व एवं टीकाकरण के माध्यम से शिशुओं की मृत्युदर में कमी लाने की व्यवस्था करता है।
- (5) महिला समृद्धि योजना 1993-यह ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने का कार्य करती है।
- (6) राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना 1994-यह गरीब महिलाओं को प्रसूति के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करती है।
- (7) इन्दिरा गाँधी योजना 1995-यह ग्रामीण और शहरी बस्ती की महिलाओं के लिए आर्थिक स्वावलम्बन का कार्य करती है।
- (8) ग्रामीण विकास महिला योजना 1996-यह ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि कर उन्हें जागरूक बनाती है।
- (9) बालिका समृद्धि योजना 1997-यह गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली बालिका की माँ को पोष्टिक आहार तथा बालिका शिक्षा हेतु सहायता प्रदान करती है।
- (10) महिला स्त्री शक्ति योजना 1998-यह महिलाओं को स्वयं सहायता समूह के माध्यम से आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त बनाती है।
- (11) स्त्री शक्ति पुरस्कार योजना 2000-यह महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली महिलाओं को राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित कर प्रोत्साहन देना, यह पुरस्कार विख्यात 5 महिलाओं-देवी अहिल्या बाई, रानी लक्ष्मी बाई, जीजा बाई, रानी गैदेल्हू जेलियांग और कनांगी के नाम से दिया जाता है।
- (12) भारत की 12वीं पंचवर्षीय योजना-(1 अप्रैल 12 से 31 मार्च 2017 तक) के संदर्भ में आयोजित योजना आयोग की बैठक में अध्यक्षता करते हुए प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि 10 साल में वर्ष 2013 में महिला साक्षरता दर

8.9 प्रतिशत बढ़ी है। इसलिए भारत सरकार द्वारा महिला शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाएगा। वर्ष 2017 तक महिला साक्षरता में और भी वृद्धि की जाएगी क्योंकि साक्षरता भी सरकार का प्रमुख लक्ष्य है।

- (13) सम्पूर्ण महिलाओं को पंचायत राज में एक तिहाई आरक्षण प्रदान करके उन्हें शैक्षिक जगत में पूर्ण साक्षर होने तथा अपना विकास स्वयं करने की एक सार्थक पहल की गई है जिससे महिलाओं ने जीवन के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है।

राज्य स्तर पर नारी उत्कर्ष का प्रयास-

- (1) राजस्थान जननी शिशु सुरक्षा योजना, 108 एम्बुलेंस निःशुल्क आपातकालीन सेवाएँ, 104 निःशुल्क चिकित्सा परामर्श सेवा, मुख्यमंत्री शुभलक्ष्मी योजना एवं हमारी बेटी एक्सप्रेस योजना के माध्यम से राज्य सरकार ने राइट टू हेल्थ के तहत महिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में नई इबारत लिखी है।
- (2) राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की सभी श्रेणी की बसों में सभी वर्ग की महिलाओं को 30% किराया छूट प्रदान की जा रही है।
- (3) बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु कक्षा 9 व 10 में अध्ययनरत छात्राओं को निःशुल्क साइकिल वितरण हेतु राशि प्रदान की जा रही है।
- (4) महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित सामग्री को सरकारी खरीद में प्राथमिकता प्रदान की जा रही है।
- (5) मुख्यमंत्री एकल नारी सम्मान पेंशन योजना के सरलीकरण से अब तक 2.86 लाख नई पेंशन स्वीकृत की गई है।
- (6) 100 करोड़ रुपयों के अंशदान से आंगनबाड़ी कल्याण कोष स्थापित किया गया है।
- (7) पुलिस में 30 प्रतिशत व नगर निकायों में निर्वाचित पदों पर महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत पद आरक्षित किए गए हैं।
- (8) आर.के.सी.एल. के माध्यम से महिलाओं के लिए कम्प्यूटर की बेसिक

शिक्षा निःशुल्क उपलब्ध कराई जा रही है।

- (9) महिला सशक्तिकरण के लिए पात्र परिवारों को जारी राशन कार्डों में वरिष्ठ महिला परिवार की मुखिया होगी।
- (10) गर्भावस्था और शिशु जन्म के पश्चात् माताओं को 6 माह तक स्थानीय आंगनबाड़ी के माध्यम से निःशुल्क पौष्टिक भोजन।
- (11) कन्या भ्रूण हत्या रोकने हेतु राज्य सरकार ने 1 अप्रैल 2013 को मुख्यमंत्री शुभ लक्ष्मी योजना लागू की है। योजना के तहत संस्थागत प्रसव के तहत बालिका का जन्म होने पर 2100 रुपये तथा एक वर्ष की आयु व टीकाकरण पूर्ण होने पर 2100 रुपये अतिरिक्त देय होंगे। बालिका की 5 वर्ष आयु होने व स्कूल में प्रवेश लेने पर 3100 रुपये की अतिरिक्त राशि देय होगी।

आज भारतीय महिलाओं में साक्षरता बढ़ी है। वे चुनाव जीतकर लोकसभा, राज्यसभा व विधानसभा में पहुँच रही हैं। महिलाओं के राजनीतिक विकास के व्यवहारिक पक्ष को यदि देखें तो ऐसी भारतीय महिलाएं हैं जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत का नाम रोशन किया है।

सरकार को चाहिए कि महिलाओं के राजनीतिक विकास के लिए कुछ अन्य कदम भी उठाये। सरकार सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सुरक्षा की प्रभावी व्यवस्था करें ताकि दुष्कर्म की शिकार न हो सके। शिक्षा की समुचित व्यवस्था करें, प्रौढ शिक्षा केन्द्रों की स्थापना करें, उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में सहायता प्रदान करें। सरकार ऐसा करेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

अन्त में यही कहना उचित होगा कि महिलाओं को समाज में प्रतिष्ठापूर्ण एवं बराबर का स्थान दिलाने से ही राष्ट्र का विकास होगा। विश्व इतिहास इस तथ्य का साक्षी है। महिलाओं के लिए चलाई जा रही कल्याणकारी विकास योजनाओं में पारदर्शिता रखते हुए उनका लाभ हर पात्र महिला को दिलाना सुनिश्चित करना चाहिए।

-व.अ., रा.मा.वि., कुण्डिया
पो. गिल्लुण्ड-313207 (राजसमन्द)
मो. 9828964866

शिक्षा का प्रभाव समाज को दिशा प्रदान करता है। शिक्षा से ही मानव जीवन का कल्याण संभव है। आज जरूरत है शिक्षा में गुणवत्ता का समावेश कर छात्र-छात्राओं को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ नैतिकता का ज्ञान प्रदान करना आवश्यक है। भागदौड़ की जिन्दगी में नैतिक शिक्षा का ज्ञान भी विद्यालय में ही संभव है। जिस प्रकार किसान खेत में गेहूँ के बीज बोता है तो गेहूँ ही उगेगा, बाजरा नहीं। ठीक उसी प्रकार छात्र-छात्राओं में नैतिक गुणों का रोपण विद्यालय परिसर में होगा तभी नागरिक जीवन में उसका प्रभाव दिखेगा।

नैतिक शिक्षा के तहत विद्यार्थियों को ईमानदारी, सच्चाई, कर्तव्य परायणता, समय बद्धता, बहादुरी, निर्णय से संबंधित प्रसंग कहानियाँ या कोई घटना का वर्णन प्रार्थना सभा, शून्य कालांश में किया जा सकता है। विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं का चार समूह में बाँटकर—‘गांधी हाउस, विवेकानंद हाउस, मदर टेरेसा हाउस, श्यामा प्रसाद मुखर्जी हाउस’ आदि कोई भी नाम दिये जाकर हाउसों की प्रतिस्पर्धा या कोई नाटक, लेखन प्रतियोगिता का आयोजन कर नैतिक गुणों का विकास किया जा सकता है। प्राथमिक कक्षाओं के लिये सरल कार्यक्रम आयोजित कर नन्हें छात्र-छात्राओं को विद्यालय का वातावरण रोचक बनाकर विद्यालय में अधिक समय तक आने को प्रेरित किया जा सकता है।

माध्यमिक कक्षाओं में इस प्रकार के आयोजन छात्रों की रुचि का पता कर हम आयोजित कर सकते हैं। माध्यमिक व उच्च माध्यमिक कक्षाओं में नैतिक शिक्षा हेतु हम सर्वे कार्य, अपने निवास क्षेत्र का अनुसंधान दिया जाकर विशिष्ट कार्य करवाया जा सकता है जैसे आपके मोहल्ले में 80 वर्ष से अधिक आयु वाले नागरिकों से सम्पर्क कर उनके अनुभवों को लेखबद्ध करना। इससे छात्रों में वरिष्ठ नागरिकों के प्रति सम्मान बढ़ेगा उनकी 80 वर्ष की आयु तक का अनुभव का एक लेखा-जोखा तैयार किया जा सकेगा। छात्राओं को अपने परिवार के 80 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति का साक्षात्कार करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

नैतिक शिक्षा के तहत छात्र-छात्राओं द्वारा किये गये कार्य, अनुसंधान, नाटक, लेख

नैतिक शिक्षा

नैतिक शिक्षा : आज की आवश्यकता

□ किशनलाल प्रजापत

आदि का संकलन किया जाकर वार्षिक उत्सव में प्रत्येक हाउस का मूल्यांकन कर उन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

वर्तमान परिस्थितियों में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता कुछ अधिक महसूस की जा रही है। आज के शिक्षक को बहुत ही सजग और जानकारी से पूर्ण होना होगा तभी इस पीढ़ी को कुछ दे पायेगा। इन्टरनेट संस्कृति पनप रही है ऐसी स्थिति में फेस बुक बच्चों को भ्रमित कर रही है। इस इन्टरनेट संस्कृति पर लगाम लगाना वश में नहीं रहा परन्तु हम हमारी संस्कृति को तो अच्छा रख सकते हैं। विश्व में हो रहे परिवर्तनों से बंचित नहीं रह सकते परन्तु हम हमारा घर तो संभाल सकते हैं। अतः हम नैतिक शिक्षा के माध्यम से भावी पीढ़ी में अच्छे गुणों को प्रचारित करें।

इसी क्रम में एक कहानी का उल्लेख करना प्रासंगिक है। एक समय की बात है एक सेठ के एक बेटा एक बेटी थी। सेठ का विशाल व्यापार था। वह हर समय यात्रा पर रहते थे। बेटा बुरी संगत के कारण गलत राह पर पड़ गया। समय बीतता गया। बेटी का विवाह कर ससुराल भेज दिया गया। एक दिन सेठ को बेटी की कमी घर में खली, बेटी घर में थी तब घर संभला हुआ था परन्तु अब हालात काबू से बाहर हो रहे थे। बेटा रात को देरी से शराब पीकर आता था। सेठ ने यह देख कर निर्णय किया कल से बेटे को खर्चा नहीं दिया जाय। दूसरे दिन बेटे ने सेठ से 10 रुपये मांगे सेठ ने मना कर कहा आज तुम जाओ कमा कर 10 रुपये लाओ। लड़का गया अपनी बहिन से 10 रुपया लेकर आया तथा सेठ को दिये। सेठ ने वह नोट पानी में डाल दिया। दूसरे दिन सेठ ने बेटी को फोन कर कहा तेरा भाई आज तेरे पास पैसे लेने आये तो मत देना। फिर सेठ ने लड़के को कहा जाओ आज दस रुपये कमाकर लाओ। लड़का दौड़ा-दौड़ा बहिन के पास गया और कहा मुझे 10 रुपये देना। बहिन ने मना कर दिया। फिर वह लड़का अनाज मंडी गया वहां दिन भर मजदूरी करके 10 रुपये लाकर सेठ को दिये सेठ ने 10 रुपये पानी में डाल दिये।

तब लड़का जोर से चिल्लाया पापा आपने मेरी मेहनत की कमाई नदी में डाल दी। आपने बहुत बुरा किया। सेठ ने कहा बेटा कल मजदूरी पर मत जाना ऑफिस जाकर सारा व्यापार संभालो यह सब तुम्हारा ही है। मैंने तो केवल तुम्हारी लापरवाही की आदत सुधारने के लिए मजदूरी पर भेजा तथा पैसे की कीमत का ज्ञान करवाया। बेटे ने पैसे का मूल्य जाना। स्वयं की मेहनत का पैसा कितना प्यारा होता है। यह जानकर उसने अपने 25 वर्ष की आयु तक जो पैसा व्यर्थ खर्च किया उस पर पश्चाताप किया तथा पिता की आज्ञा मानकर कारोबार संभाला। सब कुछ सुधर गया।

इस प्रकार की कहानी से बच्चों में नैतिकता व जिम्मेदारी का भाव करवाया जा सकता है तथा अन्य कहानियों पर आधारित नाटकों का मंचन कर हम नैतिक शिक्षा का अधिक प्रभावी तरीके से छात्र-छात्राओं में नैतिक गुणों का विकास करने में सफल हो सकते हैं जिसका प्रभाव समाज में दिखेगा।

—मुभीछा राज उ.मा.वि., गांधी चौक, बाडमेर
मो. 9829308486





बाल मनोविज्ञान

बच्चों में प्यार एवं सुधार का दृष्टिकोण

□ वृद्धिचन्द गोठवाल

रा मायण में एक संक्षिप्त सूत्र आता है—
“कुपथ निवारी सुपथ चलावा” यही बात बच्चों के बारे में बुद्धिमान लोग कहते हैं कि—एक आँख दुलार की, दूसरी सुधार की। यह उचित और आवश्यक भी है। बच्चों को सदैव अत्यधिक लाड़-प्यार ही मिलता रहे तो वे अभिभावकों के लिए कालान्तर में कई समस्याएँ खड़ी कर देते हैं। यों तो प्यार पौष्टिक भोजन की तरह है और जिन बच्चों को यह मिलता है वे बड़े भाग्यवान भी हैं। आमतौर पर छोटे बच्चे बड़ों से प्रेम, अनुग्रह, दुलार, वात्सल्य की चाह रखते हैं। छोटों को प्रसन्न विकसित होते देख बड़ों के मन को भी सन्तोष की अनुभूति होती है।

एक घुड़सवार घोड़े को आनन्द के लिए एड़ लगाकर दौड़ाता है, पर यदि उसकी चाल बेकाबू होने लगे तो लगाम लगाकर उसे काबू में भी करता है। इसी तरह अभिभावक अपने बालकों के साथ मधुर, प्रेम का व्यवहार करे लेकिन वह मर्यादित और आनन्दित हो। ऐसा न हो कि अत्यधिक प्यार में बालक जिदू और मर्यादा से बाहर हो जाए और दुर्गुण अपना ले। ध्यान एवं सावधानी आवश्यक है। हम देखते हैं कि एक डाक्टर दवा की मात्रा सी मितरूप में आवश्यकतानुसार ही देता है। वह ऐसा कभी नहीं करता है कि कोई से भी उसका अच्छा मिलने वाला है या स्वजन-सम्बन्धी है तो प्रेमवश दुगुनी चौगुनी मात्रा में दवा खिलाने लगे। यथा आवश्यक कड़वी दवा भी देता है। डाक्टर का उद्देश्य मनुष्य को स्वस्थ बनाये रखना है। प्यार का मारा बालक अपने लिए कई वस्तुओं की माँग की पूर्ति करता रहे और अपनी मन-मर्जी से छोटे-बड़ों के साथ अनुचित शब्दों का प्रयोग करने लगे और उन्हें प्यारवश हँसी में टालते रहे और हम अच्छाई के रास्ते पर लाने का प्रयास नहीं करें तो निश्चित ही हमारा प्यार जीवन के लिए हानिकारक हो जाता है। यदि घी, दूध, गरिष्ठ भोजन खाते ही रहें और कोई श्रम नहीं हो तो शरीर व्याधिग्रस्त हो जाता है। ठीक इसी तरह प्यार ही प्यार कुपथ का अवसर प्रदान

करता है। सद्गुण अथवा दुर्गुण छोटी आयु में ही अधिक पनपते हैं। बड़े सदस्यों को प्यार देने के साथ-साथ वस्तुस्थिति समझते रहना चाहिए कि उनके दुलार से बच्चों में चुपक-चुपके दुष्प्रवृत्तियाँ न बढ़ जाए। बड़ी आयु के बच्चों की परिस्थिति को काबू में लाना बड़ा कठिन हो जाता है।

दूरदर्शिता पूर्वक समय-समय पर बच्चों को पर रखते रहना चाहिए और क्षण भर के लिए दूसरी आँख भी बताना दिखाना चाहिए। जिन अभिभावकों का ध्यान बचपन में बालकों की तरफ नहीं रहता वे बाद में सिर धुनकर पछताते हैं। अभिभावक को इतनी विवेक बुद्धि तो रखनी ही चाहिए कि उसके बालक कहाँ आते-जाते हैं, क्या खान-पान है, कैसी मित्रता है, जब खर्च राशि का उपयोग किस प्रकार करते हैं, टी.वी. पर कैसे सीरियल देखते हैं, वह आज्ञापालक कितना है, उसे किस फैशन से लगाव है, वह पढ़ाई किस तरह कर रहा है, परिवार में किस तरह रह रहा है आदि आदि। स्नेह सौजन्य की आड़ में बच्चे कुपथ अपना लेते हैं इसलिए जितना दुलार दिया जाता है उससे दुगुना-तीगुना समय सुधारवादी होना चाहिए।

अभिभावक इकलौते पुत्र-पुत्री को मोहवश कुछ भी नहीं कहते तो उनमें कई विकृतियाँ आ जाती हैं। आज के परिवेश में पड़ोस-मोहल्ले एवं विद्यालय के मित्रों से नशा करना, आवारागर्दी बुरा आचरण, क्रोध, चोरी आदि दुर्गुण आने लगते हैं और आवारा किस्म के बालक अपने दुर्व्यसनो से आग के लिए ईंधन की तरह भोले-भाले बच्चों पर घात करते हैं। बुराई से बचाने की सावधानी अवश्य रखना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि कर्कश शब्दों का प्रयोग किया जाए अथवा डण्डे के बल पर डराया-धमकाया जाए। विनम्र भरी शब्दावली से भी उन्हें समझाया जा सकता है। इतनी कठोर नियंत्रण पद्धति भी न अपनाई जाए कि बच्चों में जटिल मानसिक ग्रन्थियाँ उत्पन्न हो जाए। अर्थात् बच्चों के साथ आत्मीयता एवं दुलार का

विस्तार तो किया जाए पर हमारे इशारे से उन्हें यह अहसास होना चाहिए कि मुझे आज्ञापालक होकर अनुशासन तथा मर्यादा में ही रहना है। अभिभावकों को भी बच्चों की परिपक्व होती मानसिक शक्तियों के विकास में सहायता करना चाहिए।

पण्डित बवाहर लाल नेहरू ने कहा था—
“भोले-भाले बच्चे हमारे प्रिय सखा हैं, अतः बच्चों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।” मेरा मानना है कि कभी-कभी बच्चों की ऐसी सुघड़ सलाह होती है और ऐसी बात बोल देते हैं कि कोई मित्र भी नहीं कह सकता है। हमारा दृष्टिकोण यह रहना चाहिए कि बच्चे खेले भी, पढ़े भी और वे अपनी रुचि के कार्य भी करें। बच्चों को सायंकाल देशभक्ति की कविता एवं साहसिक कथा-कहानियाँ सुनाकर अच्छे संस्कार एवं सद्गुण सीखाना चाहिए। बच्चों को हर तरह से आत्म-विश्वासी और सेवाभावी बनाएँ।

कई अभिभावक बच्चों को कुछ प्रलोभन देकर कि तुम मेरा अमुक काम कर दो तो तुम्हें एक अच्छी चीज दूँगा अथवा तुम बाबा का यह काम कर दो तुम्हें दो रुपये दूँगा। इस तरह का प्यार जतलाना सर्वथा अनुचित है। इससे बच्चे स्वार्थी एवं लालची प्रवृत्ति के हो जाते हैं। हमारा दृष्टिकोण और संकेत ऐसा हो कि सामाजिक प्राणी होने के नाते उनमें सेवा और सहयोग के संस्कार सहज ही आ जाए। क्या ही अच्छा हो कि अभिभावक बच्चों में प्यार एवं सुधारवादी दृष्टिकोण से विशेषताओं का विकास करने लगे। बच्चों के आचरण में उधार लाना तो प्रत्येक माता-पिता को अपना कर्तव्य समझना चाहिए। बालकों के प्रति लाड़-प्यार के भाव के साथ मंतव्य उन्हें पढ़ाने और सिखाने का ही होना चाहिए; इसमें सफलता प्राप्त करना ही शिक्षकीय कर्तव्यपालन में सफल होना है।

—पूर्व व्याख्याता (हिन्दी)

गौतम आश्रम के पास, पो. कपासन (चित्तौड़गढ़)

मो. 9414732090

आ ज शिक्षा सीखने-सिखाने की औपचारिक एवं अनौपचारिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बन गयी है। शिक्षा के दार्शनिक पक्ष के अवलोकन से पता चलता है कि यह मानव जाति की सबसे ज्यादा महत्वाकांक्षी परियोजना है। यदि इस सन्दर्भ में भारत के शिक्षा विचारकों के विचारों पर ध्यान केन्द्रित किया जाये तो यह और अधिक स्पष्ट हो जाता है। इस आलेख में इसी पर प्रकाश डाला जा रहा है।

स्वामी विवेकानन्द भी मानते थे कि ज्ञान प्रत्येक मानव में अंतर्निहित है तथा शिक्षा इस ज्ञान को प्राप्त करने का मार्ग है। उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के लिए एकाग्रता की शक्ति को महत्वपूर्ण कारक के रूप में प्रतिपादित किया है। विवेकानन्दजी जन शिक्षा के प्रबल समर्थक थे, साथ ही मातृ भाषा शिक्षण को आवश्यक मानते थे। वे त्याग पूर्ण जीवन और आध्यात्मिक जीवन की ओर ले जाने वाली शिक्षा के पक्षधर थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने शिष्य को वैदिक आदर्शों के आधार पर विकसित करने पर बल दिया, साथ ही वे स्त्री शिक्षा के हिमायती थे लेकिन सह शिक्षा के पक्ष में भी नहीं थे। वे भारत की प्राचीन गुरुकुल परम्पराओं को पुनर्जीवित और पुनर्स्थापित करने के पक्ष में थे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह शिक्षा है जो जीवन के अस्तित्व के साथ समरस बनाती है। वे मानते थे कि शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य शिक्षार्थी के जीवनको विश्व के साथ समस्तर बनाना है। वे अध्यात्म को जीवन का उत्कर्ष मानते हुए शिक्षा को इस उत्कर्ष की ओर ले जाने के माध्यम के रूप में अनुभव करते थे। वे प्रत्येक मानव में परमात्मा देखने के आदर्श के समर्थक थे तथा इसी कारण से शिक्षा प्रक्रिया में बल प्रयोग या हिंसा को सही नहीं मानते थे। वे राष्ट्रों की संकुचित सीमाओं से ऊपर उठकर अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय और सद्भाव की ओर ले जाने वाली शिक्षा को आवश्यक मानते थे, साथ ही वे मानव मस्तिष्क की स्वतन्त्रता को शिक्षा का उद्देश्य मानते थे। महात्मा गांधी शिक्षा को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के साथ-साथ सामाजिक प्रगति की आवश्यकता के रूप में चित्रित करते थे। वे सामाजिक माध्यम के व्यक्ति विकास की बातें करते थे। वे चरित्र निर्माण को शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य मानते थे। गांधीजी निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा, स्वावलंबन की शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षण, अहिंसा की शिक्षा, नागरिक जीवन में आदर्शों की शिक्षा, सहकारिता की शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा और शिक्षा

शिक्षा दर्शन

जीवन को समरस बनाए वह शिक्षा

□ गायत्री शर्मा

में प्रकृतिवाद जैसे अनेक विषयों पर बल देते हुए शिक्षा की सर्वांगीणता के अग्रणी रहे हैं।

शिक्षा के दार्शनिक पहलुओं का यह विवेचन हमें शिक्षा के महती लक्ष्यों की याद दिलाता है, वह साथ-साथ इन महती लक्ष्यों की वर्तमान शिक्षा के साथ दूरी भी यहां साथ-साथ दिखाई देती है। भारत की शिक्षा के भेदों को खत्म करने की आवश्यकता है। विद्यालय शिक्षा में गरीब और अमीर की मानसिकता को बढ़ावा देने वाले शिक्षा प्रबन्धन के बजाय सभी विद्यार्थियों को एक देश के निवासियों की तरह अनुभव हो सकने वाला सहज, सुविधाजनक, स्वाभाविक वातावरण दिये जाने के लिए राष्ट्रव्यापी कुशल शिक्षा प्रबन्धन की आवश्यकता है। एक विशाल जनसंख्या वाले विविधतापूर्ण संघीय गणराज्य में शिक्षा की व्यवस्था “सबके लिए शिक्षा” के लक्ष्य को क्रियान्वित करने का सबसे अहम पहलू है।

वर्तमान भारतीय शिक्षा का परीक्षा केन्द्रित होना इसकी सर्वव्यापकता और सर्व सुलभता में एक पंथी बाधा है। सबके लिए शिक्षा का वचन अर्द्धवार्षिक, वार्षिक परीक्षाओं के नियमित आयोजन के माध्यम से होने वाली छंटनी की आयोजित और आरोपित प्रक्रिया के साथ मिथ्या होती जाती है। शिक्षा को सभी तक पहुंचाना और फिर कठिन बाधाओं के रूप में परीक्षाओं का आयोजन कर छंटनी करते हुए अपनी सामाजिक व्यक्ति के एक बढ़ते हुए हिस्से को असफलता के दंश की व्यथा भोगने के लिए छोड़ देना परस्पर अंतर्विरोधी लक्ष्य है। परीक्षाओं का दबाव एवं तनाव विद्यालयी जीवन की सभी गतिविधियों पर भारी पड़ता है। आज सब तक शिक्षा को पहुंचाने हेतु कक्षाओं को ज्ञानान्वेषी, संवादपरक और

जीवंत बनाये जाने की आवश्यकता है। शिक्षक ज्ञानी है और विद्यार्थी अज्ञानी है के युग बाहर निकलकर खुले और ईमानदार संवाद से कक्षाओं को ऐसा विमर्श स्थल बनाना होगा यहां शिक्षक और विद्यार्थी साथ मिलकर ज्ञान की तलाश करते हैं।

कौशल विहीन शिक्षा किताबी कवायद बन कर रह जाती है। प्रतिदिन के व्यवहार में शिक्षा का कोई तंतु जुड़ ही नहीं पाता है। जीवन और शिक्षा के बीच की दूरी विद्यार्थियों को अपूर्णता और अक्षमता का एहसास कराती है। अतः श्रम कौशल और रचनाशीलता का पथ अवश्यभावी रूप में विद्यार्थी की संतुल्य, विनीत और शान्त होने की दिशा की ओर अग्रसर करेगा।

भारत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना सम्पन्न महान व्यक्तियों की जन्म भूमि और कर्म भूमि है, साथ ही सारी दुनिया के शिक्षा तन्तु को रोशनी देने का उत्तरदायित्व निभा सकने की क्षमता इस देश में मौजूद है। शिक्षा सेवा ही नहीं बल्कि एक महती साधना है जो जीवन को अत्यधिक रूप से जी सकने की सामर्थ्य को उत्पन्न कर विद्यार्थियों, शिक्षक या अन्य शिक्षा सहयोगी को उत्कृष्टता की ओर ले जाती है। हमें इस सत्य में विश्वास रखकर तदनुसार कार्य एवं व्यवहार करना चाहिए। शिक्षा के विस्तृत फलक पर हम किंचित दृष्टि डालें तो हमें विदित होगा कि संस्कार एवं आचरण की गहरी उपस्थिति उसके केन्द्र में रही है। शिक्षा के इस केन्द्रीय भाव को समझना आवश्यक है जो शिक्षा का मूलाधार है।

(लेखिका राष्ट्रपति से राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हैं)

-5/279, एसएफएस अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
मो. 9414796071

जीवन दर्शन

शुभ और अशुभ जीवन का ताना-बाना है। प्रकृति ने ऐसा ही जीवन हमको प्रदान किया है और इस ताने-बाने के द्वारा इतिहास-कार्य सम्पन्न होता है। शुभ और अशुभ के बीच संघर्ष चलता रहता है। इस संघर्ष में शुभ की विजय संस्कृति और शालीनता की विजय है। ज्यों-ज्यों शुभ की वृद्धि और अशुभ की हानि होती है त्यों-त्यों सभ्यता की उन्नति होती है। मानव के आत्म-विकास में भी यह संघर्ष सहायक होता है।
-आचार्य नरेन्द्र देव

ए क समय था, जब बच्चे अपने माता पिता, दादा-दादी या नाना-नानी आदि परिवारजनों के पास संध्या के समय घेरा डालकर बैठ जाते। उनकी इच्छा होती कि उन्हें अच्छी और रोचक कहानियों के साथ पारंपरिक गीत भी सुनने को मिले। उनकी इस हसरत को बड़े पूरा भी करते, लेकिन उससे पहले वे बच्चों की क्लास भी लगाते, जिसमें उनको पहाड़े, गिनती, कहावतें, मुहावरे तथा सामान्य ज्ञान सिखाया जाता। बच्चों को लोभ रहता कि उनको कहानियां आदि सुनने को मिलेगी लेकिन इस बहाने उनकी शिक्षा घर बैठे ही पूरी होती थी। कहा भी जाता है कि बच्चों की प्रथम पाठशाला उनका घर होता है तथा माँ होती है उनकी आदर्श शिक्षिका। माँ या यूँ कहें, घर के बुजुर्ग, जो बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के साथ उच्च संस्कार भी देते थे। इससे बच्चों में बड़ों के प्रति आदर बढ़ता था। सभी बच्चे हिलमिल कर रहते थे तथा उनमें सहयोग की भावना भी बढ़ती थी।

समय के साथ शिक्षा का स्तर भी बदला तो मनोरंजन के साधन भी बदले। पहले तो बच्चों को रेडियो भी सुनने को बहुत कम नसीब होता था, लेकिन आज टीवी, कम्प्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट आदि न जाने कितने ही साधन हो गए हैं जो बच्चों को हर समय अपने साथ चिपकने को मजबूर करते हैं। पहले बच्चे गली-मौहल्लों तथा खेल के मैदानों में खूब खेलते थे लेकिन अब वे कम्प्यूटर या मोबाईल से गेम खेलकर ही अपना समय बिताते हैं।

आज हम किसी भी घर में जाकर देखें या यूँ कहें तो अपने ही घर में नजर डालें तो देखेंगे कि बच्चे अधिकतर समय क्या करते हैं ? जवाब स्वतः ही हमें मिल जाएगा। छोटे बच्चों को हम मोबाइल पकड़ा देते हैं। वह अबोध शायद समझ जाता है कि यह वही वस्तु है जिसे माँ के गर्भ में रहकर अनुभव किया था, लेकिन अब उससे खेलने का मौका भी मिल गया है। कितनी विडंबना है कि जिस भारत के बच्चे शावकों के साथ खेला करते थे अब वे इस प्रकार की वस्तुओं से खेलने को मजबूर हैं।

लगभग बारह वर्ष तक के बच्चों को देखें तो हम पाएंगे कि वे हर समय टीवी पर कार्टून चैनल को देखते रहते हैं। उनको इन चैनलों से इतना लगाव हो गया है कि वे टीवी के रिमोट पर अपना कब्जा तक कर लेते हैं। प्रत्येक कार्टून कार्यक्रम के गीत तक उनको कंठस्थ हो गए हैं। वे अपने आपको कई कार्टून पात्र जैसे छोटा भीम, नोबिता, चूटकी, राजू, पोकेमोन, सिजूका, जीयान, डोरीमोन, स्पाइडरमैन, बैनटैन, बूटाखोडिला आदि मानने लगे हैं।

बच्चे इन कार्टून कार्यक्रमों को इतनी तन्मयता के साथ देखते हैं कि वे अपने इर्द-गिर्द होने

बाल मन

कहीं खो न जाएं बचपन

□ डॉ. नमामी शंकर आचार्य

वाले सभी क्रियाकलापों से अंजान रहते हैं। उन्हें यह तक पता नहीं रहता कि वे टीवी के रिमोट को कुतर रहे हैं। वे कमरे में टीवी के आगे बैठकर अपने आप को कार्टून पात्र मानकर उछल-कूद करते रहते हैं। दिन भर कमरे में अपने आपको टीवी के आगे बैठकर परिवार से अलग रखते हैं। घर में यदि कोई आ भी जाए तो इसकी परवाह उन्हें नहीं रहती। घर आए मेहमान को प्रणाम करना तो दूर, वे उनकी तरफ ध्यान न देकर टीवी देखने में लीन रहते हैं। ऐसे में यदि उन्हें जबरदस्ती पानी लाने को भेजा भी जाता है तो वे इसे अनदेखा कर देते हैं। और यदि पानी का गिलास लाते भी हैं तो नजर टीवी पर, इस दौरान चाहे पानी मेहमान के ऊपर ही क्यों न गिर जाए। खाना-पीना, पढ़ना-लिखना सबकुछ टीवी के आगे।

एक सर्वे के अनुसार जो बच्चे कार्टून चैनल देखते समय भोजन करते हैं वे या तो अत्यधिक भोजन करते हैं या उनके सामने भोजन पड़ा रहता है, लेकिन वे उसे छूते ही नहीं। इसके कारण बच्चों के स्वास्थ्य पर अत्यधिक कुप्रभाव पड़ रहा है। आज राम, कृष्ण, हनुमान, शिव, विष्णु आदि देव पात्रों की जगह कार्टून पात्रों ने बच्चों के दिलों-दिमाग को जकड़ लिया है। आज विद्यालयों में भी इन कार्टून पात्रों के माध्यम से ही बच्चों को शिक्षा देनी इसलिए प्रारम्भ की गई है, जिसके पीछे सोच यह है कि बच्चे इससे जल्दी ही शिक्षित हो सकें।

संचार क्रांति ने जितना हमें लाभ पहुंचाया है, उसके गलत उपयोग के कारण हमें उतनी ही अधिक हानि पहुंचाई है। आज तरूणावस्था में बच्चों के हाथ में मोबाईल, टैबलेट और लेपटॉप जैसे 'चलचित्र एलबम' आ गए हैं। वे इनका उपयोग तो कम दुरुपयोग ज्यादा करने लगे हैं। इन 'चलचित्र एलबम' में परोसे जाने वाले सेक्स को छुपछुप कर देखते रहते हैं। इसका दुष्परिणाम यह रहा है कि आप दिन नाबालिग गलत कार्यों में फंसते जा रहे हैं।

इस सब के लिए कहीं हम तो जिम्मेदार नहीं हैं और क्या हम अपने बच्चों को पूरा वक्त दे पाते हैं, शायद नहीं। फिर उन्हें जिम्मेदार ठहराना कहाँ तक उचित है। व्यावसायिकता के चलते गली-मौहल्लों ने मार्केट का रूप ले लिया है, मैदानों पर अनाधिकृत कब्जे हो गए हैं तो बताइए बच्चे आखिर खेले भी तो खेले कहाँ ? थक हारकर उन्हें टीवी या कम्प्यूटर गेम का सहारा लेना पड़ता है। बच्चों की शारीरिक क्षमता

से अधिक बस्तों का बोझ उन्हें कुली बनने पर मजबूर किए जा रहा है जिसके कारण वे शारीरिक व मानसिक रूप से थक जाते हैं। उनकी इस थकावट को दूर करने के लिए हम उनके पास पल भी नहीं बैठते। कई बार तो यह भी देखने को मिलता है कि यदि माता-पिता को घर का काम करना होता है तो वे बच्चों को टीवी के आगे बैठा देते हैं। हमें इतना भी समय नहीं कि हम बच्चों को टीवी के आगे बैठा देते हैं, साथ में लेकर भोजन करें, उनसे पल भर के लिए भी बात करें, तो सोचिए कि उनमें सहकार की भावना कैसे आएगी ? हमें यह भी फुर्सत नहीं कि बच्चों पर नजर रखें कि कहीं वे गलत मार्ग तो नहीं पकड़ रहे। सोसायटी में अपनी नाक को ऊँचा रखने के लिए हम उन पर पढ़ाई का अत्यधिक बोझ लाद रहे हैं। पढ़ाई के नाम पर स्कूल और स्कूल के बाद ट्यूशन.....बस, हम अपने आपको कर्तव्य-मुक्त कर लेते हैं।

बच्चे टीवी के आगे बैठकर देर रात तक फिल्में और विविध कार्यक्रम देखते हैं, कम्प्यूटर पर सोशल नेटवर्क खोलकर अनर्गल चीजें देखते हैं। माता-पिता को इतना भी पता नहीं रहता कि कहीं वे हमारी आँखों में धूल झोंककर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी तो नहीं मार रहे हैं। मात्र चौदह-पन्द्रह साल के बच्चे दुष्कर्म के दोषी पाए जाते हैं। पारिवारिक संबंधों को ताक में रखकर बच्चे नादानी में गलत कार्य कर देते हैं। समय से पहले बच्चे मानसिक रूप से व्यस्क होने पर मजबूर हो गए हैं। इसी डर से बच्चों को हम परिवार में अकेला नहीं छोड़ते। यह अविश्वास की भावना निरंतर बढ़ती जा रही है। सबको डर है कि कहीं कुछ हो ना जाए। आखिर, इसका कसूरवार है कौन ? हमें इस सवाल का जवाब ढूँढ़ना होगा।

बदलते वक्त के साथ हमें अपनी शिक्षा और व्यवस्था को बदलना भी जरूरी है, परन्तु इस बदलाव के साथ हमें ध्यान भी रखना पड़ेगा कि बचपन कहीं खो तो नहीं रहा ?

-जोशीवाड़ा, कोटगेट के अन्दर,
बीकानेर-334001
मो. 9829321692

जब लगन और प्रतिभा एक साथ
मिलकर काम करें तो एक अति उत्तम
कला की अपेक्षा करो।
-रस्किन

वे दिक् काल से लेकर वर्तमान तक देखा जाए तो शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नए-नए प्रयोग होते रहे हैं। नई-नई विचार धाराएँ जन्म लेती रहीं। नए-नए परिवर्तन आते रहे। परिवर्तन या बदलाव समय के साथ-साथ लगा रहता है। समय परिवर्तनशील है। परिवर्तनशीलता एक नए पन का आह्वान करती है। इस आधार पर सहज ही कहा जा सकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में जो नए-नए प्रयोग हुए, उनके पीछे शिक्षा के विभिन्न सरोकार ही प्रमुख रहे हैं। शिक्षा के सरोकार नवीन चेतना उत्पन्न करते हैं। इस तरह नवीन चेतना के स्रोत : शिक्षा के सरोकार, जीवन से जुड़कर जीवन में आमूलचूल नवीन स्फूर्ति, नवीन ताजगी और नवीन सोच की स्थापना करने में कभी पीछे नहीं रहे। यही कारण है कि शिक्षा के सरोकार संपूर्ण शिक्षा-जगत में नूतन क्रांति का सूत्रपात करते हैं। समाज को नया मार्गदर्शन देते हैं और चिंतन के वेग को सकारात्मक क्षेत्र की ओर ले जाते हैं।

सबके लिए शिक्षा : सबके लिए शिक्षा का विचार समाज के हित में अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। अर्थ यह है कि सब व्यक्ति पढ़े लिखे हों। निरक्षर कोई न रहे किन्तु इस समय इस दृष्टि से समाज की स्थिति विषमता से ग्रस्त है। यद्यपि पढ़ने-लिखने का रुझान जोर पकड़ने लगा है। फिर भी लाखों-करोड़ों लोग अभी निपट निरक्षर हैं। इतने विशाल स्तर पर अशिक्षा के चलते समाज के सही उत्थान की अपेक्षा नहीं की जा सकती। आज हम इस स्थिति में जो दिखाई दे रहे हैं उसका श्रेय केवल जिसे जाता है वह है शिक्षा। शिक्षा ही व्यक्ति को सभ्य बनाती है और नए-नए उपयोगी कार्य करने हेतु प्रेरित-प्रोत्साहित करती है। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति पिछड़ा रह जाता है। पिछड़ापन रोग, गंदगी, बीमारी, गरीबी, दुर्बलता, अज्ञान, शोषण, दमन और उत्पीड़न आदि का जनक है। ऐसी स्थिति में दूसरी ओर जहाँ स्वच्छता, अच्छा स्वास्थ्य, सम्पन्नता, शक्तिमत्ता, ज्ञान, समानता, स्वाभिमान और सुख-सुविधाओं की अनवरत अभिवृद्धि होना एक ही समाज में एक ही समय में कितना और वैषम्य पाले हुए है। इस उतार-चढ़ाव, ऊँच-नीच, भेद-भाव, छुआछूत आदि को दूर करने में शिक्षा के सरोकार ही सक्षम हैं। तभी समाज में जीवन जीने के तरीकों में साम्य का उद्भव और विकास हो सकेगा।

स्वतंत्रता का वातावरण : शिक्षा के सरोकार सबके लिए स्वतंत्रता के समर्थक हैं। बंधन या पराधीनता को दूर कर स्वतंत्रता का ऐसा सुरम्य

शिक्षा चिन्तन

नवीन चेतना के स्रोत : शिक्षा के सरोकार

□ जगदीश चन्द्र शर्मा

वातावरण समाज में बने कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मर्यादा की पालना करते हुए स्वतंत्रतापूर्वक जीवन-यापन करे। शिक्षा से दूरी बनने पर फिर वही अज्ञान से उपजी संकटपूर्ण स्थितियाँ बनने लगती हैं जो सबके विकास में घातक और बाधक अटकाव खड़े करने में लगी रहती है। स्वतंत्रता और स्वच्छंदता में अंतर यही है कि स्वच्छंदता निरंकुश होती है, स्वतंत्रता मर्यादित। अपनी समझ के आधार पर कोई व्यक्ति स्वच्छंदता का पक्षधर नहीं होता, सभी स्वाधीनता या स्वतंत्रता ही चाहते हैं जो उन्हें शिक्षा के सरोकार उपलब्ध करवाते हैं।

श्रम-रोजगार से जुड़ाव : इन दिनों लोगों के जीवन में श्रम का घोर अभाव पनप रहा है। यही श्रम की उपेक्षा रोजगार से विमुख करती है। शिक्षा ने सदैव श्रम को प्रोत्साहित किया है। श्रम से दूर भागने पर व्यक्ति का अपेक्षित विकास होना संभव नहीं है। शिक्षा भी श्रम से ही सुदृढ़ होती है। श्रम का अभाव शिक्षा पर भी विपरीत प्रभाव डालता है। जब तक व्यक्ति किसी रोजगार से नहीं जुड़ता, वह निष्क्रिय रहता है। निष्क्रियता बुराइयों की जड़ है। इस क्रम में निष्क्रियता से निजात पाकर सक्रिय कैसे रहा जाए, आत्मविकास के द्वार कैसे खोलें, विभिन्न अवसरों का कैसे उपयोग करें, इन सबके बारे में शिक्षा के सरोकार ही सही मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं।

व्यावहारिक शिक्षा : व्यावहारिक शिक्षा अत्यंत कारगर है व्यक्ति और समाज के उन्नयन एवं कल्याण के लिए। व्यावहारिक शिक्षा का ही प्रतिफल है कि वेदों में वसुधैव कुटुम्ब की उद्घोषणा हुई थी। यद्यपि आज भी ग्लोबल शब्द से बनने वाले कई वाक्य प्रचलित हो उठे हैं किन्तु इन सबके पीछे वैसा सोच, वैसी उदारता, वैसी अस्मिता और वैसी पकड़ नहीं है। उस चिंतन में सर्वजनहिताय की कामना रहती थी। इस चिंतन में स्वार्थ की सर्वोपरिता छड़ी हुई है। ऐसा क्यों हुआ व्यक्तियों ने अपने स्वार्थ और जीने के तौर-तरीकों पर अपने आपको सीमित कर लिया। जहाँ संयुक्त परिवार थे वहाँ अब एकल परिवारों की धूम मच रही है। बूढ़े माँ-बाप अनाथालयों के आँगन में धकेले जाने लगे हैं। पितृ देवों भवः और मातृदेवो

भवः की भावना के विपरीत विचार प्रबल हो उठे हैं। फिर शिक्षा के सरोकार घर परिवार में स्नेह-सौहार्द का विकास करने में पीछे नहीं हैं। व्यावहारिक शिक्षा का विकास युग की मांग बनता जा रहा है।

सकारात्मक चिंतन और दृष्टिकोण : जीवन में सच्चे विकास को चरम सीमा तक पहुँचाने के लिए व्यक्तियों के सकारात्मक चिंतन और व्यवहार की सर्वाधिक उपादेयता मानी जा रही है। सकारात्मक सोच ही सार्थक परिणाम देता है। इन दिनों विद्यालयों से लेकर अन्य प्रतिष्ठानों तक सर्वत्र आए दिन ऐसे उफान-उबाल आते हैं कि विद्यार्थी या कर्मचारी अपनी-अपनी संस्थाओं की संपत्ति की तोड़-फोड़ में लग जाते हैं। आलोचना-प्रत्यालोचना, अवैध गतिविधियाँ जिनमें आन और मर्यादा की कमी होती है, पनप रहे हैं। यदि उन्हें रोकना है तो नवीन चेतना उत्पन्न करनी होगी। इसके लिए शिक्षा के सरोकार ही सब कुछ करने में सक्षम हैं। शिक्षा के ये सरोकार सकारात्मक चिंतन और दृष्टिकोण उत्पन्न करने वाले हैं।

स्नेहपूर्ण वातावरण : वर्तमान में शैक्षिक संस्थाओं में स्नेहिल वातावरण का सृजन करने के लिए शिक्षा के सरोकारों की शरण लेनी पड़ेगी। जब तक स्नेहपूर्ण वातावरण नहीं बनता है, शैक्षिक गुणवत्ता की उपलब्धि दूर ही रहती है। स्नेहपूर्ण वातावरण में ही सीखने की प्रवृत्तियाँ तेजी से आगे बढ़ती हैं। बच्चों का सर्वांगीण विकास किल्लोल करता है।

आपसी तालमेल से सृजन को प्रोत्साहन : विद्यार्थी और अध्यापक के पारस्परिक सहज तालमेल सहयोग परक और अभिव्यक्तिवर्धक प्रोत्साहन से शैक्षिक गुणवत्ता स्वाभाविक रूप से पनपती है। जब तक यह क्रम बना रहेगा अनेक नई प्रतिभाएँ, उदयमान हौसले अपने अगले प्रगतिशील उल्लेखनीय सोपान तक पहुँचते रहेंगे। जैसे विभिन्न खेलों में अच्छे खिलाड़ी तैयार होंगे। साहित्य में कवि, कहानीकार, निबंधकार, नाटककार, समीक्षक आदि बनेंगे। विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर उत्पन्न होंगे। इसी तरह समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों

के भिन्न-भिन्न विभागों के लिए अच्छे अधिकारी भी इसी तरीके से उपलब्ध होंगे। शिक्षा के सरोकारों की सही तरीके से पालना करने पर ही ऐसा संभव होता है।

लड़कियों की पढ़ाई पर विशेष प्रयत्न : सम्प्रति लड़कियों के लिए भी पढ़ाई के अनेक क्षेत्र खुले हुए हैं। हम आए दिन देख रहे हैं कि लड़कियाँ अकादमिक परीक्षाओं से लेकर प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर की कठोर प्रतियोगिताओं में भी पहला स्थान पा रही हैं और प्रथम दस मुख्य स्थानों पर उत्तीर्ण होने वालों में भी प्रायः बहुमत में होती हैं। राजकीय, सिविल, सेना, जलयान, वायुयान से जुड़ी सेवाओं आदि में भी महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान मिल रहा है। महिला-शिक्षा के प्रति भी नवीन चेतना के लिए शिक्षा के सरोकारों का उपयोग अतीव फलप्रद है। इन्हीं सरोकारों के संदर्भ में अपेक्षा है कि लड़कियों और महिलाओं की सुरक्षा-संरक्षा अक्षुण्ण रहे। इन दिनों महिलाओं-लड़कियों पर हो रहे अत्याचारों उत्पीड़नों के भयावह हादसे अविलम्ब थमें और आगे महिलाएँ-लड़कियाँ स्वतंत्रतापूर्वक अपने अधिकारों का उपयोग करती हुई प्रगति की दौड़ में अवल निकलें।

सूचना का अधिकार : सूचना के सन् 2005 के कानून के अनुसार सूचना का कानून भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। उससे भी शिक्षा के सरोकारों की उचित रूप में क्रियान्वित की बाधाएँ कठिनाइयाँ आसानी से दूर करने में सहायता मिल रही है। फलतः शैक्षिक गतिविधियाँ ईमानदारी से फूलती-फलती रहें। बच्चों का समुचित विकास हो। उनका व्यक्तित्व निखरे, प्रखर बने और समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

बच्चों के अधिकार : जब से बच्चों के अधिकारों को विधि-सम्मत मान्यता मिली, बच्चों के जीवन में नवीन आशा और नव उल्लास फूट पड़े। बच्चों को उन पर किए जाने वाले दमन से मुक्ति दिलाने का सम्बल प्राप्त हो गया। लड़कें-लड़क्री में भेदभाव बाल विकास में बाधा पैदा नहीं कर सकता। दोनों को समान रूप से सुविधाएँ पाने का अधिकार है। बच्चा चाहे तो शासन-प्रशासन से अपनी मांगें मनवा सकता है जो उसे बच्चों के अधिकार के रूप में कानून से प्राप्त हुई हैं। जैसे, जीने का अधिकार, चौदह वर्ष की उम्र तक बच्चे को बच्चा माना गया है। उस पर बाल मजदूरी, बंधुवापन और दमनात्मक गतिविधियों से मुक्ति दी जाने की व्यवस्था है।

विकास के अधिकार : बालक के व्यक्तित्व का अधिक से अधिक विकास हो इसके लिए उसे यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपनी इच्छा के अनुसार विकास कर सके। पिछले दिनों कई लड़कियों ने मांग की है कि वे अभी विवाह नहीं करना चाहती क्योंकि उन्हें पढ़ाई करनी है। अपने व्यक्तित्व का विकास करना है। इसे मान लिया गया है। ज्यादाती उन पर थोपी नहीं जा सकती।

स्वास्थ्य के अधिकार : बच्चे की हर हालत में स्वस्थ रहने और रखा जाने के ये अधिकार सचमुच बहुत ही कारगर अधिकार है जैसे विषम परिस्थितियों से जूझते हुए किसी बालक के गरीब परिवार से होने के कारण समुचित उपचार-चिकित्सा न हो पाने की स्थिति में सरकार की ओर से यथेष्ट सहयोग सुविधाएँ जुटाई जाती हैं। यह तो मात्र एक क्षेत्र विशेष का एक उदाहरण है।

शिक्षा के अधिकार : इस अधिकार ने तो बच्चे को सर्वोन्मुखी उन्नयन के अवसर प्रदान कर दिए हैं। वह जितनी शिक्षा पाना चाहे पा सकता है। जिस प्रकार की, जिस रूप की शिक्षा उसे वांछित हो, उपलब्ध करवाई जा सकती है।

मनोरंजन के अधिकार : जीवन में मनोविनोद की महत्ता सभी ने स्वीकार की है मनोरंजन से व्यक्ति खिला हुआ रहता है, प्रसन्न रहता है और नए उत्साह से ओतप्रोत हो जाता है। यह अत्यंत आवश्यक अधिकार है बच्चों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास होना ही चाहिए। इसके लिए इस अधिकार की उपादेयता स्वयं सिद्ध है।

उचित विकास की बुलंदियों तक ले जाने के अधिकार : बच्चे के उचित विकास की बुलंदियों तक उसे ले जाने हेतु जो अधिकार मिले हैं उनसे स्पष्ट है कि बच्चा अपने जीवन के चरम उत्थान तक निरापद होकर पहुँचे और समाज की सेवाएँ करे। इस प्रकार बच्चों के समस्त अधिकार बाल जीवन में नवीन चेतना और नया आनंद जगाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

अभिव्यक्ति और पहल करने को प्रोत्साहन : शिक्षा के सरोकारों की प्रमुख उपलब्धि है कि उनके फलस्वरूप बालक रुचि लेकर अभिव्यक्ति का विकास करता रहे। उसमें पहल करने, नेतृत्व करने और अपनी बात दृढ़तापूर्वक रखने की क्षमता का स्वतः विकास हो। उनके इर्द-गिर्द ऐसा ही वातावरण बनाना चाहिए।

चरित्र-निर्माण, मानवीय मूल्य और नैतिकता : चरित्र-निर्माण मानवीय मूल्य और

नैतिकता इस सबकी पारस्परिक सहसम्बद्धता बनी हुई है। इन दिनों व्यक्ति के चरित्र में जो गिरावट दिखाई दे रही है उसमें मानवीय मूल्यों की उपेक्षा और नैतिकता की भी अवहेलना स्पष्ट झलक रही है। जबकि नैतिक आधार पर मानवीय मूल्यों की पालना करते हुए चरित्र-निर्माण में लगे व्यक्तियों की भी कमी नहीं है। इस परिस्थिति में सकारात्मक दिशा की ओर ले जाने वाली इन विशेषताओं को शिक्षा के सरोकार हर स्थिति में अपना रचनात्मक अवदान देने में तत्पर हैं।

पर्यावरण-संतुलन की ओर : पर्यावरण-प्रदूषण की वृद्धि और पर्यावरण असंतुलन के परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग का प्रकोप बढ़ रहा है। ओजोन-परत में छेद मोटा होता जा रहा है। मौसम चक्र गड़बड़ाने लगा है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष आदि से जन-जीवन अस्त-व्यस्त होता जा रहा है जिसका दुष्परिणाम भी व्यक्ति को भोगना पड़ रहा है। इससे भी शिक्षा पाने में क्षति उठानी पड़ रही है इसलिए यदि पर्यावरण-संतुलन के लिए सभी सचेष्ट हो जाएँ तो एक नवीन संतोष का सूत्रपात होगा।

अच्छाई और बुराई का समुचित ज्ञान : बालक अच्छाई और बुराई के सुप्रभाव और दुष्प्रभाव की यथेष्ट जानकारी रखे। भारतीय संस्कृति पर इन दिनों पाश्चात्य अपसंस्कृति का दुष्प्रभाव जो पड़ रहा है वह चिंताजनक है। हाँ, विदेशों से भी अच्छे गुण प्राप्त किए जाने चाहिए। जब कि खान-पान, रहन-सहन, सोच-समझ और दैनिक जीवन की विभिन्न हलचलों में जो अनहोने घटनाक्रम चल रहे हैं उनके विभिन्न रूप जन-जीवन में कई-कई तरह के उपद्रवों का केंद्र हो रहे हैं। यथा नशा, यौन शोषण, बाल विक्रय, आपराधीकरण आदि। इन बुराइयों को दूर करने के लिए नवीन चेतना आवश्यक है, वह शिक्षा के सरोकार ही प्रदान कर सकते हैं।

नवीन चेतना की शुरुआत सूर्योदय से पूर्व, पूर्व दिशा में तेज होती लालिमा से तुलनीय है। वही तो नए सूर्य को उदय होने के लिए संकेत करती है। मानो शिक्षा के सरोकारों का सूर्य, अरुणिमा जैसी नवीन चेतना के माध्यम से धरती और नभ-मंडल में धूप का स्वर्णिम बिखराव या आच्छादन कर पाने में समर्थ है।

-पोस्ट-गिल्ड-313207 (राजसमंद)

विपत्ति ही ऐसा पैमाना है, जिस पर हम मित्रों को तौल सकते हैं।

-प्लेटार्क



पश्चिमी भारत में राज्य राजस्थान के उत्तर में थार रेगिस्तान के धोरों के बीच 28.18° उत्तरी अक्षांश तथा 74.58° पूर्वी देशान्तर में स्थित और 'गेट वे ऑफ थार' के नाम से प्रसिद्ध 'चूरू' जो जिला मुख्यालय है तथा इस जिले के उत्तर में हनुमानगढ़, दक्षिण में सीकर, दक्षिण-पूर्व में नागौर, पश्चिम में बीकानेर जिले तथा पूर्व में हरियाणा राज्य है। इसका क्षेत्रफल 16830 वर्ग किमी, जनसंख्या 2041172, जनसंख्या घनत्व 148 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी, लिंगानुपात 1000/938 है। मान्यता है कि हजारों वर्ष पूर्व इस भूभाग पर समुद्र था जो कालान्तर में भूगर्भीक परिवर्तनों के कारण विशाल मरुस्थल में बदल गया। एक अन्य पौराणिक मत के अनुसार प्राचीन काल में सरस्वती नदी इसी क्षेत्र से निकलती थी।

चूरू जिला कलात्मक निर्माण, बेजोड़ स्थापत्य कला, वैविध्यपूर्ण संस्कृति, साहस, वीरता, देशभक्ति के लिए विश्वविख्यात है। भारत-पाक युद्ध एवं चीनी आक्रमण के दौरान यहाँ के लोगों ने रण कौशल में अद्भुत वीरता का प्रदर्शन कर विरोधियों को आश्चर्यचकित कर दिया था।

पूर्व जांगल प्रदेश 'बीकानेर' की सीमा से जुड़े इस क्षेत्र पर चूरू के ठाकुरों का आधिपत्य था। बाद में यह बीकानेर राज्य के अधिकार क्षेत्र में आ गया। चूरू के सामन्त ठाकुर शिवसिंह द्वारा बीकानेर के तत्कालीन महाराजा सूरतसिंह की गलत नीतियों के विरोध करने पर महाराजा ने चूरू पर सैनिक आक्रमण कर दिया तथा इस क्षेत्र को जीतने में सफलता नहीं मिलने पर वि.सं. 1871 में महाराजा ने पुनः आक्रमण किया। इस दौरान लम्बी अवधि तक चूरू के घेराबंदी में रहने के कारण अनाज और गोला-बारूद नहीं आ सका। जनता भूखो मरने लगी फिर भी जनता ने ठाकुर का साथ दिया और अपने पास रखे चांदी के जेबरात उन्हें को दे दिए। ठाकुर ने इस चांदी से गोले बनवाए तथा उन्हें तोपों में भरकर शत्रु के खिलाफ बरसा दिया। ठाकुर रणक्षेत्र में कूदकर

वीर गति को प्राप्त हो गए। इस प्रकार स्वाभिमानी एवं निर्भीक ठाकुर शिवसिंह ने स्वतंत्रता के लिए युद्ध में चांदी के गोले बरसा कर विश्व इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया।

बीकानेर के अधिकार में आने के बाद चूरू जिला बीकानेर रियासत का हिस्सा बन गया। वि.सं. 1884-85 में इस रियासत में चार नई निजामतें बनीं जिनमें सुजानगढ़ तथा रेणी चूरू जिले में थीं। सरदारशहर, रतनगढ़, एवं श्रीङ्गारगढ़ सुजानगढ़ तथा चूरू, राजगढ़, भादरा एवं नोहर रेणी के अंग बने। 1941 में रेणी (वर्तमान नाम तारानगर) तहसील तथा राजगढ़ निजामत का मुख्यालय बना दिया।

महाराजा सादुलसिंह ने अपने शासनकाल (1943-48) में चूरू मण्डल का गठन कर चूरू, सरदारशहर, तारानगर, राजगढ़, रतनगढ़, सुजानगढ़, श्रीङ्गारगढ़ तहसीलों को शामिल किया। सरदार बल्लभ भाई पटेल के प्रयासों से 1949 में बीकानेर रियासत का राजस्थान में विलय होने पर चूरू जिले की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। राज्य सरकार के



राज्य वतनीय शिक्षक पुस्तकालय के सम्पादित डॉ. बाधाकिशन कोठी हिन्दी, राजस्थानी, अंग्रेजी, शिक्षा, लेखन एवं साहित्यिकी में कलात्मकता तथा वाणिज्य में पीएच.डी. हैं। राजस्थान के लोक देवता, शोध वक्तव्य एवं प्रतिष्ठित, प्राक्खिक शिक्षा के जुड़ी पुस्तकों के लेखक डॉ. कोठी शैक्षिक गवांचाओं तथा शोध में कवि बद्धते हैं। आप साक्षरता, वतत शिक्षा, सर्व शिक्षा, अल्पविकारिक शिक्षा तथा डाइट के विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों में समय-समय पर दक्ष प्रशिक्षक के रूप में सेवाएँ देते रहे हैं।
-दक्खि सम्पादक

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

कला एवं वीरता का प्रतीक चूरू जिला

□ डॉ. राधाकिशन सोनी

आदेशानुसार सन् 2001 में श्रीङ्गारगढ़ बीकानेर जिले का अंग बन गया।

वर्तमान में चूरू जिले में छः उपखण्ड हैं। इनमें चूरू को चुहलू नामक कालेर जाट ने बसाया था। जिस स्थान पर कालेर जाट आकर सबसे पहले बसे वह स्थान आज भी कालेरा बास के नाम से जाना जाता है। सुजानगढ़ की स्थापना बीकानेर के 12 वें शासक सुजानसिंह के नाम पर महाराजा सूरतसिंह (1797-1828) ने की थी। इस तहसील के ग्राम छाप में खारे पानी की झील में नमक बनता था, जिसे अंग्रेजों ने बंद कर दिया। तहसील का ही एक अन्य ग्राम बिदासर संगमरमर के लिए प्रसिद्ध है। सरदारशहर की स्थापना बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह (1857-1872) ने की थी। यह राज्य का एक प्रमुख नगर है। इसकी श्रीसम्पन्नता एवं शैक्षणिक अग्रगण्यता की कीर्तिगाथा देश-विदेश में मुखरित है। सरदारशहर में शिक्षा के प्रमुख केन्द्र गांधी विद्या मंदिर की नींव भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने रखी थी। वर्तमान में इसका एक संघटक उच्च शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के रूप संचालित है। यह शहर जैन श्वेताम्बर धर्म के 11 वें आचार्य महाश्रमणजी की पावन जन्म स्थली है। यहाँ आचार्य महाप्रज्ञजी का पवित्र समाधि स्थल भी है। राजगढ़ की स्थापना महाराजा गजसिंह ने सन् 1766 में अपने पुत्र राजसिंह के नाम पर राजगढ़ की स्थापना की। इस तहसील का ग्राम ददेवा लोक देवता गोगाजी महाराज की जन्मस्थली है। रतनगढ़ (पूर्व नाम कोलासर) को महाराजा सूरतसिंह ने अपने उत्तराधिकारी रतनसिंह (1828-1851) के नाम पर बसाया था। लोक मान्यता है कि तारानगर की स्थापना डाललिया राजा रिणीपाल द्वारा किया। यहाँ जिप्सम की खान है। सभी उपखण्ड सड़क मार्ग से तथा तारानगर को छोड़कर शेष मुख्यालय रेल मार्ग से जुड़े हैं। सभी तहसीलों में उच्च शिक्षा के लिए महाविद्यालय हैं। जिले का साक्षरता प्रतिशत 67.46 है।

जिले में बालू रेत के 20 से 100 फीट ऊँचाई वाले सोनल टीले हवा की दिशा के साथ-साथ अपनी जगह बदलते रहते हैं। यहाँ सदी में हाड कंपाने वाली भंयकर शीतलहर तथा गर्मी में प्रचण्ड धूप, भीषण काली-पीली आंधी और रेत की भयावह वर्षा इस जिले की प्राकृतिक विशेषता है। ये विषम परिस्थितियाँ यहाँ के जीवत लोगों के उत्साह को कम करने में असमर्थ हैं।

शिक्षा, साहित्य, कला एवं भामाशाहों की उर्वरा भूमि वाले चूरू जिले में 'ए मालिक तेरे बंदे हम' जैसे भावपूर्ण गीत के रचयिता गीतकार पं. भरत व्यास, संगीतकार खेमचंद प्रकाश, जमाल सेन, बसंत प्रकाश, बाबू शोभाचन्द जम्मड़ (सरदारशहर), शंभुसेन, राज्य गीत 'धरती धोरां री' के रचनाकार 'राजस्थान रत्न' से अलंकृत कन्हैयालाल सेठिया (सुजानगढ़), साहित्यकार मेघराज मुकुल (राजगढ़), डॉ. दशरथ शर्मा (चूरू), सूजा बीठू (खिलेरिया), मुडियालिपि विशेषज्ञ, भाषाविद् एवं कलम के धनी गोविन्दजी अग्रवाल, स्त्री शिक्षा के पक्षधर समाजसेवी गोपालदासजी (चूरू), स्टील व्यवसायी लक्ष्मीपत मिश्र (सादुलपुर), प्रथम महावीर चक्र प्राप्त किशनसिंह राठौड़ (सरदारशहर), विश्व प्रसिद्ध पर्वतारोही एवं ऐक्वेस्ट चोटी पर सफलतापूर्वक चढ़ाई करने वाले गौरव शर्मा (चूरू), अर्जुन अवार्ड कृष्णा पूनिया, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर बिमल जालान, प्राचीन साहित्य के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई के संस्थापक खेमराज बजाज (चूरू), गीता प्रेस गोरखपुर के संस्थापक सेठ जयदयाल गोयनका (चूरू), तथा अध्यात्म एवं चरित्र निर्माण की संवाहक पत्रिका कल्याण के प्रणेता हनुमान प्रसाद पोद्दार (रतनगढ़), उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश बनवारीलाल हंसारिया जैसे अद्भुत प्रतिभावाले लोगों ने जन्म लेकर चूरू जिले का नाम रोशन किया। सरदारशहर में स्थित आयुर्वेद महाविद्यालय भी चूरू जिले को पहचान दिलाता है।

सामान्य स्थिति में 'लोटा-डोर' लेकर रोजगार की खोज में निकले यहाँ के लोगों ने विपुल धन अर्जित किया तथा सार्वजनिक हित में अपनी तिजोरियाँ जिले की समृद्धि एवं वैभव के लिए खोल दीं। वर्तमान में कोलकत्ता, मुम्बई, अहमदाबाद, बैंगलोर में व्यापार, भवन-निर्माण

तथा अन्य व्यवसायों में संलग्न हैं। मरदा गुप, सुराना गुप, बागला गुप, सुरजमल जालान, नागरमल बाजोरिया, रामेश्वरलाल टांटिय बिरदीचंद कर्वा आदि प्रमुख हैं। इतना ही नहीं सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले जिले के वरेण्य पुरुषों की उपलब्धियाँ किसी से छुपी नहीं हैं।

जिले की परम्परा एवं लोक संस्कृति

शुष्क जलवायु वाले चूरू जिले में सभी धर्म सम्प्रदायों के लोग भाईचारे एवं सौहार्द के साथ रहते हैं। सभी भारतीय त्योहार एवं उत्सव मनाए जाते हैं। भारतीय हिन्दु संस्कृति के प्रायः सभी रीति-रिवाजों का प्रचलन है। धोती, पगड़ी, कमीज, पेंट-शर्ट, ओढ़नी, पोंमचा, चुनरी, घाघरा, धोती, कुर्ती, कांचली यहाँ के लोगों का मुख्य पहनावा है। कृषि एवं पशुपालन यहाँ के लोगों का प्रमुख धंधा है। यहाँ के लोग खेतीबाड़ी के लिए इन्द्र भगवान की कृपा पर निर्भर रहते हैं। वर्तमान में इस क्षेत्र में कुओं से सिंचाई होती है। गैहू, दाल, बाजरा, ग्वार, मोठ, चना आदि प्रमुख फसलें होने के कारण बाजरा तथा मोठ लोगों का खास खाद्य और बाजरे की रोटी एवं मोठ-बाजरे की खिचड़ी आज भी यहाँ का दैनिक भोजन है। यहाँ के लोग आज भी गाय-भैंस का धीणा रखते हैं तथा दूध, दही, छाछ, रायता, राबड़ी, कढ़ी आदि का सेवन करते हैं। यहाँ के लोगों की मुख्य भाषा मारवाड़ी है।

गौदड़ नृत्य, घूमर, गोरबंद, कांगसियो, गणगौर, घोड़ी, मायरा, हींडो, रतजगा, फाग, हरजस आदि इस क्षेत्र के लोकगीत तथा माण्डणा, सातिया, देवरा, पथवारी, थापा, गोदना आदि लोक चित्रकला है। लोक साहित्य की दृष्टि से भी यह क्षेत्र काफी समृद्ध है। यहाँ के जीवन की झांकी यहाँ के लोक साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है। क्षेत्र में प्रचलित लोक साहित्य की विविध विधाओं- लोक काव्यों, लोक कथाओं, लोकगीतों, कहावतों एवं पहेलियों आदि में सामाजिक मान्यता, रीति-रिवाज, जीवन की विविधता सघन रूप से भरी पड़ी है। कहावतें जीवन में अमोघ अस्त्र का काम करती हैं तथा इनमें ठेठ राजस्थानी जीवन और समाज का स्वरूप सामने आता है। फोग, खैर झाड़ी, खेजड़ा, बबूल पेड़, नीम, पिपल इस क्षेत्र के प्रमुख वृक्ष हैं।

जिले के मुख्य आकर्षण

चूरू जिले की भव्य हवेलियाँ, मन्दिर, पुरानी धर्मशालाएँ, कुएं, तालाब, बावड़ियाँ, छत्तरियाँ तथा अन्य दर्शनीय इमारतों की अपनी विशेषताएँ हैं। आलीशान हवेलियों की स्थापत्य कला, उनकी दीवारों पर कलात्मक चित्र, बेहद खूबसूरत छोटे-छोटे हजारों झरोखे, सुन्दर कलात्मक दरवाजे एवं खिड़कियाँ यहाँ के लोगों के तकनीकी दृष्टि से प्रतिभा सुसम्पन्न होने के उदाहरण हैं। हवेलियों में लाल, पीले, हरे व चटखारे रंगों से उकेरे गए भित्ति चित्र, आस्था केन्द्रों एवं छत्तरियों के अलंकरण राजस्थान की समृद्ध पारम्परिक लोक कला एवं संस्कृति के अनूठे संवाहक हैं। जिले की प्राचीनों में कैद कलाकारों की कलाएं शोध का विषय है। हवेलियाँ एवं अन्य निर्माणों पर जिले के विषम प्राकृतिक प्रभाव बेअसर रहे हैं। हजारों वर्षों के बाद भी आज ये इमारतें यथावत अप्रभावित एवं स्थिर हैं।

बागला हवेली

यह चूरू के मुख्य बाजार के दक्षिण में बनी है। इसका निर्माण कन्हैयालाल बागला ने वि.सं. 1880 में करवाया था।

सुराना हवेली

यह छः मंजिला इमारत है। इसे सुराना डबल हवेली के नाम से जाना जाता है। इस हवेली में 1111 खिड़कियाँ और दरवाजे हैं इसका निर्माण 1870 में हुआ था। इसके कुछ कमरों में स्वर्णकित चित्रकारी है।

कोठारी हवेली

इस हवेली का निर्माण मालजी कोठारी द्वारा वि.स. 1925 में करवाया गया। इस हवेली के निर्माण में 17 वर्ष लगे। इस हवेली में मालजी का कमरा बहुत ही अद्भुत है। यह हवेली सर्वाधिक लोकप्रिय है।

ऐतिहासिक दुर्ग

चूरू के इस ऐतिहासिक दुर्ग का निर्माण चूरू नाम जाट ने सन् 1620 में करवाया था।

रत्नागढ़

यह ऐतिहासिक किला है। काफी संख्या में पर्यटक यहाँ घूमने के लिए आते हैं। बीकानेर के राजा रतनसिंह ने इसका निर्माण 1820 में करवाया था।

धर्म स्तूप

चूरू में लोहिया कॉलेज मार्ग पर धर्म

स्तूप बना है। यह धार्मिक समानता का प्रतीक है।
छत्तरियाँ

जिले में अनेकों स्मृति गुम्बद हैं। चूरू की सर्वाधिक प्रसिद्ध 'आठ खम्ब छत्तरी' का निर्माण 1776 में हुआ था। यहाँ की टकनेत छत्तरी भी लोकप्रिय है। सरदारशहर के उदासर चारणान गाँव के बाहर रामसिंह की छत्तरी है। यह ऊँचे चबूतरे पर स्थित है। इसमें राम सिंह की देवलियां खड़ी हैं। जिले की प्रायः सभी तहसील मुख्यालयों में यादगार के रूप में छत्तरियों का निर्मित हैं।

सालासर बालाजी धाम

सुजानगढ तहसील के ग्राम सालासर स्थित बालाजी महाराज का मंदिर जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। यह जिला मुख्यालय से 65 किमी दूर है। वर्ष में चैत्र एवं अश्विनी माह की पूर्णिमा को यहाँ आयोजित भव्य मेलों में देश-विदेश से लाखों की संख्या में भक्तगण बालाजी के दर्शनार्थ आते हैं। बालाजी महाराज के इस विश्व प्रसिद्ध मन्दिर का मेलों के समय अद्भुत नजारा बन जाता है जिसे शब्दों में व्यक्त किया जाना मुश्किल है।

नाथ साधुओं का अखाड़ा

चूरू में नाथ साधुओं का अखाड़ा है। इसमें देवताओं एवं भगवान की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ हैं।

कृष्ण मृग अभयारण्य

जिला मुख्यालय से 85 किमी दूर सुजानगढ तहसील के ताल छपर में यह अभयारण्य दुर्लभ काले हिरनों के लिए विख्यात है। इसका क्षेत्रफल 719 वर्ग हैक्टेयर है। हिरनों के अलावा इस अभयारण्य में जंगली बिल्ली, चिंकारा और अन्य प्रवासी पक्षियों की विभिन्न जातियाँ पाई जाती हैं।

सेठानी का जोहड़ा

वि.सं. 1956 में पड़े भयंकर अकाल(छप्पनीया काल) में लोगों को राहत पहुँचाने के लिए भगवानदास बागला की पत्नी ने इस जोहड़ को बनवाया था।

दूधवा खारा

जिला मुख्यालय से 136 किमी दूर ऐतिहासिक एवं ग्रामीण परिवेश वाल ग्राम 'दूधवा खारा' प्राकृतिक सुन्दरता और खूबसूरत हवेलियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह

प्रसंग : राजस्थान दिवस

जय-जय राजस्थान

मरुधर देश महान, हम इसकी संतान।

जन गण मन अरमान, जय-जय राजस्थान॥

शोणित सिंचित राज धरा की माटी है,

खेत-खेत रणखेत हल्दीघाटी है।

आन नाक अरावली बान बसंत शान,

गुरु शिखर स्वाभिमान, जय-जय राजस्थान॥

मरुधर देश महान..... (1)

अगड़ी पगड़ी पण प्रतापी महाराणा,

पूँजा दुर्गादास केसरिया बाना।

दानी बलिदानी भामा पन्ना महान,

सूरज हठ चौहान, जय-जय राजस्थान॥

मरुधर देश महान..... (2)

शील रक्षा पद्मा जली अंगारों से,

तरु रक्षा अमृता कटी तलवारों से।

गुरुदेव रक्षा काली बाई कुर्बान,

हाडी शीश निशान, जय-जय राजस्थान॥

मरुधर देश महान..... (3)

चम्बल सम्बल धोरों नहर सोनधारा,

मोहन सभ्यता आहड़ बंगा हमारा।

गढ़ लोह चित्तौड़ा विजय स्तम्भ पहचान॥

पोकरण प्रतिष्ठान, जय-जय राजस्थान॥

मरुधर देश महान..... (4)

सोन पाँवड़ बिछात स्वागत सोन प्रभात,

तारां छाई रात चकवा-चकवी बात।

चंद अमृत बरसात रज कण रजत भान,

अलगोजों की तान, जय-जय राजस्थान॥

मरुधर देश महान..... (5)

भोर मोर नाचै आबू गिरवर घाटी,

ताल उछाल हिरण गोडावण मरु माटी।

टेर बटेर चलते जहाज रेगिस्तान,

कुरजाँ डाक विमान, जय-जय राजस्थान॥

मरुधर देश महान..... (6)

नीम-हकीम खड़ी जड़ी खेजड़ी प्यारी,

फोगां झाड़ी बैर कैर सदा बहारी।

रोहिड़ा मन मोहिड़ा तरु मरु सागवान,

बट पीपल मरु प्राण, जय-जय राजस्थान॥

मरुधर देश महान..... (7)

गाते ढोला-मारु तीज त्यौहारों में,

गीदड़ घूमर मेला मस्त मलारों में।

मूमल मलजी पणिहारी पंछीड़ा गान,

निहालदे-सुलतान, जय-जय राजस्थान॥

मरुधर देश महान..... (8)

तेजा खवाजा जाम्भा पंचपीर तारी,

इस धरा पर मीरां को मिले बनवारी॥

देव देई जीण कैला करणी कल्याण।

वैणे पुष्कर स्नान, जय-जय राजस्थान॥

मरुधर देश महान..... (9)

-दयाराम महरिया, सचिव

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर

मो. 9950999735

ग्राम ऊँटों की सवारी के लिए भी विख्यात है।

ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्त्व के अन्य दर्शनीय स्थल

चूरू में चाँदमल बांठिया की हवेली, रामविलास गोयनका का महल, मंत्रियों की मोटी हवेली, बागला धर्मशाला, सत्य नारायण मंदिर, गंगामाता का मंदिर, सुराना पुस्तकालय, तारानगर में हजारों वर्षों पुराना शीतलनाथ जैन मंदिर, सुजानगढ में सोहनलाल जाजोदिया द्वारा निर्मित 'वैकटेश्वर मंदिर', तिरुपति बालाजी मंदिर, साहवा में गुरुद्वारा, सरदारशहर में इच्छापूर्ण बालाजी मंदिर, नाहटा संग्रहालय, विश्व प्रसिद्ध चार खम्बों पर खड़ा घंटा घर, सार्वजनिक पुस्तकालय, ऊँटों के लोक देवता पाबूजी महाराज की कहानी कहती जम्मड़

हवेली, अमरचंद जम्मड़ की हवेली, समपतमल गधैया की हवेली, वास्तविक सोने की चित्रकारी से युक्त मंगतमल रिद्धकरण दुगड़ की 190 वर्ष पुरानी हवेली, वैजनाथ चौधरी की 125 वर्ष पूर्व निर्मित हवेली, नाथ सम्प्रदाय का श्रीनाथजी मंदिर, रतनगढ-सुजानगढ मार्ग में अवस्थित बच्चों के देवता मालासी का मंदिर, गोगाजी की जन्म स्थली ददेवा (राजगढ़), जीणमाता एवं हर्षनाथ भैरव की जन्म स्थली घांघू, रतनगढ़ में पंचमुखी बालाजी मंदिर आदि प्रमुख है। इस प्रकार चूरू जिला न केवल राजस्थान में ही अपितु पूरे देश में विशिष्ट पहचान रखता है।

-शिव शक्ति, हाईवे लिंक रोड,

श्री डूंगरगढ़ (बीकानेर)

मो. 07742331431

जल हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। जल के बिना जीवन की कल्पना करना मुश्किल है। जल ही जीवन है, जल के बिना जीवन निर्वाह असम्भव है। हमारे शरीर में नब्बे प्रतिशत जल है जो आयु के साथ-साथ कम होता जाता है। जल एक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। इस जल संसाधन से सम्बन्धित मुद्दों पर पर्याप्त बल देना चाहिए। भूजल पुनर्भरण, वर्षाजल के संग्रहण पर विशेष बल देना चाहिए। पृथ्वी पर लगभग 75 से 80 प्रतिशत भू-भाग में जल पाया जाता है। यों देखने पर तो पृथ्वी पर जल का अपार भण्डार दिखलाई देता है, लेकिन वास्तव में जल अत्यन्त सीमित है। इसमें से लगभग 97 प्रतिशत जल समुद्र और महासागर में पाया जाता है जो मानव के लिए उपयोगी नहीं है। मानव के लिए जल तीन प्रतिशत मात्रा में ही उपलब्ध है जिसका अधिकतर भाग बर्फीले ग्लेशियर ध्रुवीय बर्फ के रूप में जमा है। 22 प्रतिशत जल भूमिगत भूमि जल के रूप में पाया जाता है। जो बोरिंग करवाकर जल प्राप्त किया जाता है। 0.3 से 0.4 प्रतिशत जल अलवणीय जल झील, तालाब, नदियों तथा नहरों के रूप में पाया जाता है। यह जल हमारे लिए भी अधिकतर उपयोगी है।

पृथ्वी पर जितना जल वह तीन गुणा जनसंख्या के लिए उपयोगी है बशर्ते सावधानी के साथ इसका उपयोग किया जावे। हम हाथ-मुँह धोने, ब्रश करने, दाढ़ी बनाने तथा फ्लश के साथ एक से बीस लीटर जल बहा देते हैं वहीं पाँच मिनट में नहाकर हम एक हजार लीटर पानी बचा सकते हैं। नहाते समय बाल्टी का उपयोग करना चाहिए। हमें रोजाना ऐसा कार्य करना चाहिए जिससे जल बचाया जा सके। समूह में जल मित्र बनाए। पड़ोसियों को जल बचाओ अभियान से जोड़े। अपनी कार या मोटर साइकिल को पाइप से न धोकर बाल्टी में पानी भर कपड़े से साफ करें। घर की सफाई व सब्जी का बचा पानी गमलों में डालें। वर्षाजल को एक कुण्ड में एकत्र करें। हमें पानी की एक-एक बूँद संग्रह करने की कोशिश करनी चाहिए।

पर्यावरण असंतुलन तथा ग्लोबल वार्मिंग के कारण बाढ़ और सूखे की स्थिति के कारण जल की कमी की स्थाई समस्या दिखलाई देने लगी है। दूसरी ओर जनसंख्या वृद्धि के कारण जल की खपत बढ़ रही है। ऐसे में जल की समस्या का विकराल रूप देखने को मिलता है।

विश्व जल दिवस

जल अनमोल है-जल ही जीवन है

□ शिवनाम सिंह

एक तो देश में जल की कमी है ऊपर से नदियाँ तथा जल के अन्य स्रोतों में प्रदूषण की समस्या से भूमिगत जल प्रदूषित हो रहा है। प्रदूषित जल पीने से बीमारियों में वृद्धि हो रही है। जल, जंगल और जमीन दोनों के लिए परम आवश्यक है हम विकास के नाम पर इस प्राकृतिक संसाधन को बर्बाद करने में लगे हुए हैं। ये हमारे सामने ही अस्तित्व का प्रश्न खड़ा कर रहे हैं। पृथ्वी का जल स्तर प्रत्येक वर्ष गिर रहा है।

पश्चिमी राजस्थान में जहाँ वर्षा जल कम होता है, जल का स्तर बहुत नीचे चला गया है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि वर्षा के जल को संग्रह कर पृथ्वी के जल स्तर में वृद्धि की जा सकती है। जल बचत पद्धति से वर्षा जल को बचाना आवश्यक है। जल है तो कल है, जल से जीवन का संरक्षण सम्भव है। गाँवों में प्रारम्भिक जोहड़, टॉका, तालाब, कुण्ड, कुँए, बावड़ी में वर्षा जल संग्रहण कर एकत्र करना चाहिए। आम नागरिकों का ध्यान जल के गहराते संकट की ओर आकृषित करना चाहिए। जल जीवन और सभ्यता का आधार है। जल हमारे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। जल हमारी रासायनिक क्रियाओं के लिए माध्यम बनता है। जल शरीर को बनाने में परम आवश्यक है, यह पाचन क्रिया में जहाँ लाभदायक है, वही शरीर के तापमान को भी नियंत्रित करता है, जोड़ों को चिकना बनाता है, शरीर से कचरा बाहर निकालने में सहायता करता है। वही शरीर की वृद्धि में सहायता करता है। जल पीने से वजन घटता है। स्वस्थ व्यक्ति को नौ गिलास तथा महिलाओं को सात गिलास जल ग्रहण करना चाहिए।

मनुष्य अपने क्रियाकलापों से शुद्ध जल को लगातार प्रदूषित कर रहा है। गाँवों में जहाँ जल सीमित है वहाँ जोहड़ो या तालाब के किनारे भैसे बैठी रहती हैं। वे अपना मल तथा मूत्र वहीं त्यागती हैं। मनुष्य भी अपने कपड़े तथा नहाने-धोने का कार्य उसी तालाब में करता है, महिलाएं भी घर के बर्तन वही साफ करती हैं। इन क्रियाओं से तालाब का जल निरन्तर प्रदूषित होता जाता है जो बीमारियों का कारक बनता है।

जल संकट का कारण शहरी क्षेत्र में अधिक जल की खपत तथा दोषपूर्ण व्यवस्था है। हमें वर्षा जल का समुचित संग्रहण कर भूमिगत जल का उपयोग करना चाहिए। जल जागरण द्वारा जल संरक्षित रखने का अभियान चलाना चाहिए। पानी की बूँद-बूँद बचा कर कृषि करनी चाहिए। इस प्रकार हम जल को व्यर्थ बहने से बचा जा सकते हैं। विद्यालयों में विश्व जल दिवस आयोजित कर निबन्ध, भाषण, चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन कर बालकों में जल बचाने के प्रति जागरूकता पैदा की जा सकती है तथा व्यर्थ बह रहे पानी की रोकथाम का प्रयास करने में सहायता मिल सकती है।

हमें सोचना पड़ेगा, कहाँ गया हमारा पानी। देश में पानी की समस्या बढ़ती जा रही है। अधिकतर नदियों में पानी नहीं है और यदि है तो वह भी प्रदूषित। एक ओर जहाँ बड़े-बड़े बाँध बनाए जा रहे हैं वहीं कई शहरों और गाँवों में पीने का पानी तक नहीं है। गंदे पानी को साफ करने की व्यवस्था भी नहीं है। हमारे देश में पानी की समस्या अन्य देशों से ज्यादा खराब है। दुनिया में हर तीन प्यासे व्यक्तियों में एक प्यासा व्यक्ति भारतीय होता है। यह मजे की बात है कि यह देश ज्यादा वर्षा वाला देश है। भारतीय जल संपदा का दो तिहाई भाग प्रदूषित हो चुका है।

ग्रामीण क्षेत्रों में तालाब या जोहड़ के किनारे पाल बाँध कर वर्षा जल संचय की विधि को अपनाकर वर्षा जल संचयन से भूजल संरक्षण किया जा सकता है। इस विधि से जोहड़ में लम्बे समय तक जल संग्रह कर सही उपयोग किया जा सकता है। हमें सभी स्थानों पर जल के सदुपयोग की आवश्यकता पर बल देना चाहिए घर-घर, गाँव-गाँव, पंचायत-पंचायत, शहर-शहर में जल की एक-एक बूँद सहेज कर रखना चाहिए तब ही हम पानी की कीमत जान पाएंगे और रहीम जी के दोहे-“रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सूँ” को चरितार्थ कर पाएंगे।

(लेखक राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त शिक्षक है)

-सेवानिवृत्त रीडर, 114, अमरसिंहपुरा, बीकानेर
मो. 9414021234

प्राथमिक विद्यालय बालक की वह धुरी है जिसके इर्द-गिर्द बालक का भविष्य घूमता है। यही वह स्थान है जिससे बालक वर्तमान से भविष्य की ओर उड़ान भरता है। बालक पर घर, परिवार व विद्यालय के वातावरण का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। बालक जब विद्यालय में प्रवेश लेता है तो उसे घर, परिवार के अलावा विद्यालय के वातावरण से वह अपना समायोजन स्थापित करता है। वह घर के व्यावहारिक ज्ञान को विद्यालय में संयोजित करता है तथा विद्यालय से व्यवहार में परिवर्तन या नवीनता प्राप्त कर उसे घर, परिवार में लागू करने का प्रयास करता है।

विद्यालय में प्रवेश के बाद बालक यही पूछता है कि उसे कहाँ बैठना है? कक्षा-कक्ष में आने के बाद बालक अपने आपको उस वातावरण के ढालने का प्रयास करता है। बालक को किस प्रकार व्यवहार करना है? गुरुजी को प्रणाम करना है। दोस्तों से मिलना है। ये सब बातें बालक के व्यवहार में शामिल हो जाती हैं। इन बातों को व्यवहार में लाने पर बालक का मन व आन्तरिक भावनाएँ शान्त हो जाती हैं।

यदि विद्यालय आने पर बालक शिक्षक को प्रणाम नहीं करता है तो उसका मन व आन्तरिक भावनाएँ अपने आप को अपूर्ण व बालक को सहज नहीं रहने देती हैं। बालक के मन में बार-बार यही बात उछल कर आती है कि पहले गुरुजी को प्रणाम किया जाय। जब वह गुरुजी को प्रणाम कर लेता है तो अपने आपको हल्का व मन को बार-बार झकझोर देने वाले उस बोझ से मुक्त हो जाता है।

बालक के मनोवैज्ञानिक गुण चिन्तन, भाव, स्मृति, कल्पना आदि पर बालक के वातावरण, शारीरिक गठन, वंशानुक्रम आदि का विशेष प्रभाव पड़ता है। प्राथमिक स्तर पर बालक के लिए पाठ्यक्रम को इस प्रकार तैयार किया जाना चाहिए कि बालक उसमें रुचि उत्पन्न करे।

पाठ्यक्रम तैयार करने का यह कार्य तलवार की धार पर चलने के समान है। यदि पाठ्यक्रम बालक में कुछ सीखने के लिए रुचि उत्पन्न नहीं कर पा रहा है और बालक में कोई जिज्ञासा उत्पन्न नहीं हो रही है तो हमारा पाठ्यक्रम सिखाने के उद्देश्य में विफल है। इसलिए सबसे पहले पाठ्यक्रम रुचि उत्पन्न करने वाला होना चाहिए ताकि बालक में कुछ नया सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न हो।

बालक में रुचि बढ़ाने के लिए हमें निम्न

पाठ्यक्रम

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम से अपेक्षाएँ

□ ओमप्रकाश सिंगाठिया

बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए:-

1. बालक के स्तरानुसार पाठ्यक्रम तैयार होना चाहिए।
2. खेल विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।
3. भयमुक्त वातावरण तैयार किया जाना चाहिए।
4. चित्र चार्ट एवं मॉडल का प्रयोग किया जाना चाहिए।
5. पाठ्यक्रम दैनिक जीवन से सम्बन्धित होना चाहिए।
6. प्रस्तावना को कहानी या हास्य कथा से शुरू करना चाहिए।
7. रचनात्मक कार्य होना चाहिए।
8. नवाचार के लिए पाठ्यक्रम में भ्रमण की व्यवस्था होनी चाहिए।
9. पाठ्यक्रम बालक के पूर्व ज्ञान पर आधारित होना चाहिए।
10. अधिगम के लिए बालक की आवश्यकता समाहित की जानी चाहिए।
11. कक्षा-कक्ष में बालक के व्यवहार पर निरीक्षण किया जाना चाहिए।
12. भौतिक संसाधनों की प्रयाप्त व्यवस्था होनी चाहिए।
13. पाठ्यक्रम करने सीखने पर आधारित हो।
14. अध्यापक खुद रॉल मॉडल होना चाहिए।

इस प्रकार बालक किस विषय-वस्तु में किस प्रकार रुचि उत्पन्न करता है, यही सबसे महत्वपूर्ण बात है, जिस पर अध्यापक को गौर करना आवश्यक है। बालक को जिस विषय-वस्तु में रुचि उत्पन्न होगी वहीं पर उसे कुछ पूछने या सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। बालक अपने मनोवैज्ञानिक गुण चिन्तन का प्रयोग करता है तथा पूर्ण ज्ञान पर आधारित कुछ नये प्रश्न पूछता है कि यह क्या है? यह कैसे कार्य करता है? यह ऐसा क्यों है? आदि तार्किक व पूरक प्रश्न बालक के मस्तिष्क में उभरकर आते हैं।

बालक की इस जिज्ञासा के अनुसार अध्यापक उस विषय-वस्तु से सम्बन्धित अधिगम करवा सकता है जिससे बालक को नया ज्ञान सीखने को मिलता है तथा अध्यापक का अपना लक्ष्य पूर्ण होता है। यदि हम बालक को उसकी

जिज्ञासा शान्त करने के लिए कुछ नया नहीं सीखा पाये तो हमारे खुद या हमारे पाठ्यक्रम में कहीं कमी अवश्य रह गई है जिसे दूर करना अति आवश्यक है। अध्यापक को इसके लिए विभिन्न विधियों द्वारा अधिगम करवाना आवश्यक है तभी वह एक सफल अध्यापक है अन्यथा सिखाने के उद्देश्य में वह विफल हो जाएगा।

बालकों की अभिक्षमता अलग-अलग होती है। कौनसा बालक किस प्रकार की अभिक्षमता प्रदर्शित करता है, यह बात अध्यापक के लिए महत्वपूर्ण होती है ताकि बालक को उसकी रुचि के अनुसार अभिक्षमता प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया जा सके। कुछ बालक विषय-विशेष में अभिक्षमता प्रदर्शित करते हैं। अतः बालक को अपनी अभिक्षमता प्रदर्शित करने का पूर्ण अवसर मिलना चाहिए। यह बालक की रुचि पर आधारित है कि बालक किस क्षेत्र में अधिक रुचि उत्पन्न करता है, उसी क्षेत्र में बालक की अभिक्षमता अधिक प्रदर्शित होगी।

कुछ बालक सामाजिक कार्यों में अधिक रुचि लेते हैं तो कुछ बालक तार्किक सवालों में अधिक रुचि रखते हैं तो कुछ अन्य भाषायी विषयों में अधिक रुचि लेकर अभिक्षमता प्रदर्शित करते हैं, यह बालक की रुचि पर निर्भर करता है।

अभिक्षमता बालक की अन्तर्निहित शक्ति है जो जन्मजात पैदा होती है। बालक अभिक्षमता उसके कार्यों व व्यवहार व प्रश्नोत्तर के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है जिससे अध्यापक उस बालक के बारे में पूर्वानुमान कर सकता है। इसलिए अभिक्षमता के अनुसार अध्यापक द्वारा बालक को अधिगम करवाना ही उद्देश्य है, यह कार्य करने में जो अध्यापक सफल हो जाता है, वही वास्तव में एक सफल अध्यापक है। यही शिक्षण में पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

आज समाज में नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, जीवन मूल्यों में निरन्तर गिरावट आ रही है। इसका मूल कारण इन मूल्यों का उचित रूप से पाठ्यक्रम में स्थान नहीं होना है। यदि इन मूल्यों को प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में मूल रूप से लागू किया जाए तो इन मानवीय मूल्यों को भावी

पीढ़ी में कुछ हद तक प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान पाठ्यक्रम विधा व किताबी ज्ञान पर अधिक जोर देता है जिसमें बालक का मात्रात्मक विकास तो होता है परन्तु गुणात्मक विकास नहीं हो पाता है। बालक के लिए नैतिक, सामाजिक मूल्यों का पाठ्यक्रम में उचित स्थान नहीं मिल पा रहा है जिससे इन मूल्यों में निरन्तर गिरावट आ रही है।

आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में अंकों का महत्त्व व्यावहारिक कुशलता से अधिक है इसलिए इस प्रकार का पाठ्यक्रम निरन्तर तैयार किया जा रहा है। आज बालक मानसिक रूप से बहुत अच्छा विकास करता है, उसे हर भौतिक संसाधन उपलब्ध है परन्तु व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए, जीवन मूल्यों को सीखाने के लिए न तो संयुक्त परिवार है और न ही पूंजीगत व्यवस्था के अन्तर्गत उसको सिखाने के लिए माँ-बाप उपलब्ध होते हैं क्योंकि वे दोनों या तो नौकरी की भाग-दौड़ में लगे रहते हैं या फिर उनके पास सिखाने के लिए समय ही नहीं है, इसलिए इन मूल्यों को सिखाने के लिए पाठ्यक्रम में विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है।

भारत सदियों से विश्व गुरु रहा है। भारत ने विश्व को जीना सिखाया है जबकि आज हम खुद जीवन मूल्यों को सीखने के लिए लालायित हैं। यह नई शिक्षा नीति द्वारा परम्परागत मूल्य आधारित ज्ञान की उपेक्षा करने से हुआ है। अब इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली चल रही है जिससे बालक किताबी कीड़ा बनकर रह गया है इससे बालक को व्यवसायिक व व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त नहीं होता है जबकि हम बालक के सर्वांगीण विकास की बात करते हैं।

आज की इस पूंजीगत व्यवस्था ने समाज के आदर्शों व मूल्यों का हनन किया है और अभी भी हो रहा है। इसलिए यह ज़रूरी है कि विषय-विशेषज्ञों द्वारा मूल्य आधारित पाठ्यक्रम तैयार करवा कर सम्पूर्ण भारत वर्ष में समान रूप से लागू किया जाए ताकि मानवीय मूल्यों को प्राप्त किया जा सके। प्राथमिक शिक्षा स्तर के पाठ्यक्रम में इन मूल्यों को जोड़कर हम प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम द्वारा अपना उद्देश्य प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। अतः यह अति आवश्यक है कि प्राथमिक शिक्षा स्तर के पाठ्यक्रम में आदर्श जीवन मूल्यों को शामिल किया जाकर महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाय तथा विद्यालय के अध्यापकों में प्रशिक्षण द्वारा गुणात्मक सुधार लाया जावे, तभी हम अपने उद्देश्यों में सफल होंगे।

-रामगढ़ गोमामेडी, नोहर, हनुमानगढ़-335504



शाला प्रागण से

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आयोजित

जयपुर। पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान की ओर से शिक्षाविद् स्व. श्री तेजकरण जी डंडिया की 104 वीं जयन्ति, 20 जनवरी 2014 को जयपुर के रा.बा.उ.मा.वि., मालवीय नगर में श्री डंडिया जी की स्मृति में आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण जी सराफ थे। इस अवसर पर शिक्षकों के लिए आयोजित तत्स्थलीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता 'गुणात्मक शिक्षा में शिक्षक व सरकार की भूमिका' में प्रथम श्री शिवशंकर बोहरा, द्वितीय श्रीमती कविता दाधीच, तृतीय श्री सीताराम उपाध्याय और चतुर्थ श्री विजेन्द्र सुरोलिया को पुरस्कृत शिक्षक फोरम की ओर से श्री सराफ ने पुरस्कृत किया। साथ में पुरस्कृत शिक्षक फॉर्म की ओर से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए प्रकाशित सीनियर सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा तैयारी टिप्स फॉर टॉप मार्क्स पुस्तिका का शिक्षा मंत्री जी ने विमोचन भी किया और फॉर्म की ओर से निःशुल्क वितरण का शुभारंभ किया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री श्री सराफ ने राज्य सरकार की ओर से शिक्षाविद् श्री डंडिया जी की स्मृति में शिक्षक पुरस्कार प्रारम्भ करने की घोषणा की। पुरस्कृत शिक्षक फोरम की ओर से सह संरक्षक श्री एल.आर. गुप्ता तथा महा सचिव रामेश्वर प्रसाद शर्मा ने शिक्षामंत्री का आभार व्यक्त किया। -रामेश्वर प्रसाद शर्मा

महासचिव पुरस्कृत शिक्षक फॉर्म राजस्थान

मो. 9413801999

कॅरिअर-डे 2014 का आयोजन

हाईकलॉ (टॉक)। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, हाईकलॉ, जिला-टोंक में कॅरिअर डे 2014 का आयोजन शिक्षा विभाग एवं राजस्थान राज्य शैक्षिक एवं अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान के निर्देशानुसार किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के अभिभावकों, ग्रामवासियों, वार्ताकारों, अतिथियों एवं विद्यालय के शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती पूजन एवं वन्दना से की गई। शाला में कॅरिअर डे के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा निर्मित चार्ट पोस्टर एवं निर्देशन साहित्य संकलन की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका विद्यार्थियों,

अतिथियों एवं अभिभावकों ने अवलोकन किया। शाला के संस्था प्रधान श्री रामजीलाल मीणा ने सभी अतिथियों का स्वागत कर विद्यार्थियों को विभिन्न कॅरिअर अवसरों की जानकारी दी।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ज्योतिषाचार्य श्री राजेन्द्र शर्मा ने ज्योतिष में कॅरिअर के विभिन्न अवसरों की जानकारी प्रदान करते हुए कॅरिअर डे आयोजन हेतु 5000/ रु. शाला को प्रदान किये। विशिष्ट अतिथि राजस्थान पत्रिका के संवाददाता श्री रामबाबू विजय ने पत्रकारिता एवं लेखन में कॅरिअर के अवसरों की विस्तार से जानकारी देकर विद्यार्थियों को लाभान्वित किया।

वार्ताकार श्री भंवरलाल कुम्हार जिला निर्देशन संदर्भ व्यक्ति एवं व्याख्याता डाइट टॉक ने विद्यार्थियों हेतु निर्देशन की आवश्यकता एवं कक्षा 10 उत्तीर्ण पश्चात विषय चयन, अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन टॉक के संदर्भ व्यक्ति श्री समीर एवं श्री देवेन्द्र जोशी ने स्वरोजगार के अवसरों विभिन्न सफल उद्यमियों के उदाहरणों द्वारा दी। कॅरिअर डे के अवसर पर आयोजित पत्रवाचन "वर्तमान परिपेक्ष्य में कॅरिअर डे का महत्त्व" प्रतियोगिता में कु. करीना जांगिड., कु. फोरन्ता चौधरी, कु. विष्णु कंवर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। "विद्यार्थी एवं कॅरिअर के विभिन्न क्षेत्र" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें प्रथम कु. अगन्ता चौधरी, द्वितीय कु. हंसा गूर्जर एवं तृतीय स्थान पर कु. ममता बैरवा रही। कॅरिअर साहित्य संकलन प्रतियोगिता में कु. मनीषा जांगिड., कु. हंसा गूर्जर एवं कु. ममता बैरवा क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। कॅरिअर चार्ट एवं पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें प्रथम कु. निर्मला चौधरी, द्वितीय कु. सुशीला बैरवा एवं तृतीय स्थान पर प्रेमचन्द पहाड़िया रहे।

कार्यक्रम का प्रतिवेदन कॅरिअर डे प्रभारी श्री बुद्धिप्रकाश शर्मा ने प्रस्तुत किया। इस अवसर ग्राम के सरपंच श्री बाबूलाल शर्मा ने 2100/ रु. प्रदान करते हुए प्रतिवर्ष कॅरिअर डे आयोजन को गोद लेकर समस्त खर्च की जिम्मेदारी लेकर अनुकरणीय भामाशाह का कार्य किया। कार्यक्रम के अन्त में विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया एवं शाला प्रधान द्वारा सभी वार्ताकार एवं अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका आभार प्रकट किया गया। कार्यक्रम में अतिथियों एवं अभिभावकों की संख्या अत्यधिक रहने से कार्यक्रम अधिक रोचक बना।



भूत/भरत ओला/ एकता प्रकाशन, चूरू/
संस्करण 2013/पृष्ठ संख्या 104/
मूल्य ₹ 125.00

ऐसा कम ही हुआ है, सृजनात्मक विधा कहानी के, एक कथाकार के एक संग्रह की सभी कहानियों का केन्द्रीय विषय एक ही हो। पर राजस्थानी भाषा के कुछ कथाकारों ने यह जोखिम उठाया है। हाल ही में राजस्थानी युवा कलाकार भरत ओला की 'भूत' अवधारणा पर इसी शीर्षक से प्रकाशित दस छोटी-बड़ी कहानियों वाला यह संकलन उम्मीद भरा और साहसिक है। उनके पूर्व दो कथा-संकलन विभिन्न विषयों की कहानियों के हैं। लघु उपन्यास 'धुलगाँठ' से भरत की लेखनी अधिक धारदार, पैनी तथा समृद्ध हुई है, वह समृद्धि भूत संग्रह की कहानियों में भी बखूबी दिखाई देती है। अधिकांशतया एक ही विषय की सभी रचनाएं उम्दा नहीं बन पाती, कहीं न कहीं भरती का आग्रह बरबस झलकने लगता है, पर शुक्र है भरत भरतीपने से सावधानीपूर्वक बच गए। दस कहानियों के आखिर में अपने मित्र के नाम लिखे वक्तव्य में वे इन कहानियों की रचनात्मक पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में बहुत कुछ कह जाते हैं। इस वैज्ञानिक युग में राजस्थानी के वयोवृद्ध कथाकार हरमन चौहान के कथा संग्रह 'बेमाता रा लिख्या लेख' की कहानियों ने उन्हें 'भूत' संज्ञा को ठीक से समझने तथा समझाने के लिए खासा उद्बलित कर इसी विषय पर कलम उठाने को मजबूर कर दिया। अब उनके समक्ष दोहरी चुनौती थी-भूत को लेकर हर कथा का नवीन कथानक रचा जाए और कथा विश्वसनीय हो अपनी हर 'भूतिया' कहानी के अंत में वे एक प्रश्न छोड़ते हैं जिसका ताल्लुक 'भूत' जैसी अमानवीय मान्यता से जुड़ा होता है।

कह नहीं सकते भूत की मान्यता भारत समाज में कब से व्याप्त है पर विश्व के लगभग सभी देशों के सभी समाजों में यह असरवार ढंग से मौजूद संज्ञा कही जा सकती है। भूतों को लेकर बहुत कुछ रचा जा चुका है। भूत भले ही अंधविश्वास और मनोरोग की परिणति भर है तो

भी रुचिपूर्ण 'गल्प' को रचने में इसके योगदान को कब कोई नकार पाया है ? राजस्थानी के सिद्ध कथाकार विजयदान देथा की अनेक लालित्यपूर्ण कथाओं में भूत कद्दावर वजूद के साथ मौजूद है। किशोर कल्पनाकांत ने भी अनेक भूतिया कहानियां लिखी।

बात करते हैं-इस संग्रह की। यह संग्रह बांचने पर पता चलता है कि भूतों से ग्रस्त रोगियों के मनोविश्लेषण कोई सरल नहीं होते। व्यक्ति के मन गह्वर में कितने गहरे तक अवसादों की काई पसरी होती है कि फिसलन का अंदाज लगाना खासा मुश्किल कार्य कहा जा सकता है। प्रथम कहानी की अनुराधा अपने 'भूत' को जानकर भी अनजान बनी हुई है। कोई दूसरा इस बात को उसे समझा पाया, तभी उसकी समझ में अपनी व्यथा आई।

इस कथा संकलन में दो-तीन कहानियां ऐसी हैं जिनमें अचानक प्रकट हुए संकट के निदान हेतु आपदाग्रस्त व्यक्ति को भूत अवधारणा का सहारा लेना पड़ा है। सुन्दर पत्नी को मनचलों की कुदृष्टि से बचाने के लिए 'जयपाल' अपनी ढाणी को भूतग्रस्त बनाता है तो सातवीं कहानी का महाराज भी अपने ढाबे को भलीभांति चलाने के लिए भूत युक्ति को काम में लेता है-दोनों ही कहानियों के पात्र इसमें भरपूर सफलता प्राप्त करते हैं। तीसरी कहानी 'चींथीजता सुपता' की किस्तूरी और लम्बी कहानी 'गुने रो भूत' की गुलाब अपने दिल के हाथों मजबूर औरतों की करुण कथाएं हैं-वहां इनकी दशा देख बेचारे भूत का भी दिल पसीजता होगा।

पाखंडी तांत्रिकों, ओझाओं ने कामादि लिप्साओं की सम्पूर्ति के लिए 'भूत' नामक अंधविश्वास को फैलाने का जघन्य कृत्य किया है, करते ही जा रहे हैं। 'भूत री कारस्थानी' इसी तथ्य को बयान करती है। प्रेत बाधा निवारण का यह रुजगार हमारे भारतवर्ष में बड़े पैमाने पर चल रहा है। मनोवैज्ञानिक सुधीर कक्कड़ ने इस विषय पर 'साचू, ओझा, संत' नामक पुस्तक में बड़े खुलासे किए हैं। दरअसल 'मनोरोगी' और उसके परिवार को 'भूत' जैसी गप्पलन में डाल कर ठाने का व्यवसाय भिन्न-भिन्न स्थानों (जैसे मेंहदीपुरबालाजी, दिल्ली की कतिपय मस्जिद, तांत्रिकों के ठिकाने) पर बेखौफ फल-फूल रहा है। भरत की कहानियां भूत नाम पाखंड और मनोरोग को अनेक पहलुओं से समझने में

मदद करती है। भूत, प्रेत, शैतान, जिन्न, चुड़ैल, ऊपरी बला जैसे अनेक नामों वाला यह भयावह वहम अगर भरत की इन कहानियों को पढ़कर जरा भी कम होता है तो इस संग्रह की खासा बड़ी उपलब्धि कही जाएगी।

-चेतन स्वामी

कालू बास, श्री डूंगरागढ़ (बीकानेर)

सैणां हंदी सीख/संग्राम सिंह सोढा/सोढाण लोक साहित्य सदन, चक सचियापुरा, 68 आर. डी. बज्जू, बीकानेर/संस्करण 2013/पृष्ठ सं. 80/मूल्य ₹ 100.00

संग्राम सिंह सोढा पुरुषार्थी परिवार में से अकेले लेखक हैं जो राजस्थानी और हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखते हैं। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त की। इस अंचल में अध्यापक की सेवा के साथ-साथ अनवरत रूप से लेखन उनकी रुचि है। संग्राम जी के शोधपूर्ण व जानकारी परख आलेख सदैव रुचिपूर्वक देखे जाते हैं। इनके पूर्वज पाकिस्तान से आते वक्त धन तो नहीं ला पाये परन्तु 'घाट की संस्कृति' संजोकर रखी जो उन्हें जन्म घूंट के साथ मिली। यह पुस्तक राजस्थान की प्रसिद्ध विधा 'सोरठा छंद' में रची गई है।

'सैणां हंदी सीख' पुस्तक राजीया रा सोरठा तरज पर रची गई है। अलग-अलग लोगों को संबोधित करके सोरठा छंद में सीख दी गई है। जैसे 'श्यामसी रा सोरठा', 'खेतसी रा सोरठा', 'देवसी रा सोरठा', 'मधनसी रा सोरठा', 'भोमसी रा सोरठा', 'पेमला रा सोरठा', 'लेखिया रा सोरठा', शीर्षक से पुस्तक में कुल 256 सोरठें रचे गये हैं।

'सैणां हंदी सीख' पुस्तक में गणेश वंदना के बाद सीधी नीति की बातों का ईजहार है। शुरुआत में सत्व वचन की बात का बखान है। साप काम और साप वचन आदमी को संसार में ऊंचाईयों तक ले जाता है-

कीजै सत रा काम, साच बिना सुधरै कठै।
तोखे जगत तमाम, साधो सुमिरण श्यामसी॥
मत ना बोलो कूड़, काम बिगाड़े कूड़ सब।
पड़ै माजने धूड़, रखता खवाड़े खेतसी॥

पुस्तक को इस पोथी को पढ़ 'र बहुश्रुत पाठक नै जून कवियां री मोकली सूक्तियां अर उक्तियां रो स्मरण हो आवणो अेक सहज प्रक्रिया है। मेघराज मुधुल की 'सैनाणी',

कन्हैयालाल सेठिया की 'पातळ पीथळ', नारायणसिंह भाटी की 'वीर दुर्गादास', मुकनसिंह का 'शीषदान', रघुराजसिंह हाडा का 'हरदोळ', सत्य प्रकाशजी जोशी की 'राधा', रैवतजी की 'चेतमानरवा' है। सोढ़ाजी सामाजिक कुरीतियां अर अंधविश्वास पर करारी चोट की है। आपके काव्य में मध्यकालीन साहित्य का गजब का प्रभाव है। आपका मत सोरठा संग्रह आदर्शवादी सामाजिक संरचना का ताना बाना बुनता है।

आज परिश्रम की जरूरत है। 'उधमेन ही सिद्धयंती, कार्याणी न कारणी मनोरथे' की बात आपने 'भोमसी के सोरठा में कहीं जिसकी आज सख्त जरूरत है:-

**उधम कीजै आज, भर मत घर में भूखड़ी।
पोपो केरा राज, भरमीजै मत भोमसी॥**

जननी जन्म भूमि स्वर्ग से भी प्यारी लगती है। कवि को भी अपनी 'धाट' की याद आ रही है:-

**भली ई जलम भोम, बीसरे नहीं जीवता।
कागां नै निज कौम प्यारी लागै पेमला॥**

मास्टरजी को अपनी भाषा से प्रेम है। लोग बोलना भूल रहे हैं उनको दुःख है। यह है उनका मातृ भाषा प्रेम-

**राड़ी भूला रीत, भणतां भूला बोलणो।
गावण भूला गीत, लोटी हंदा लेखिया॥**

मां और बाप संसार में दुर्लभ है। वो पुत्र भाग्यशाली जो इनका आशीर्वाद प्राप्त कर रहा है। संसार की ये चीज अमोलक है। कवि भी अपना आदर भाव यूँ प्रकट कर रहा है-

**जग में मायड़ बाप, मिलै नहीं कीमत दियां।
धन सारै धणियाप, सब मिल जावै श्यामसी॥**

कहावत है 'अकल सरी ऊपजै, दीधा लगै डांम' की तपा पर लेखक लिखता है-

**मिलसी चीजा मोल, सब कोहू संसार में।
मिलै अकल नंह मोल, माया साटै मधनसी॥**

इस प्रकार संग्राम सिंह सोढ़ा ने अपनी परंपरा को समझते हुए सहज और सरल भाषा में सोरठा रचिया। शास्त्र ज्ञान का अहंकार नहीं है। सोरठा कुतरत के एकदम नजदीक है। चहुं ओर बिखरा हुआ सत्य संजोया है। सचमुच में 'सैणां हंदी सीख' पुस्तक जगचावी होगी ऐसी मेरी मान्यता है। मैं डॉ. शक्तिदान कविता के भाव के साथ अपना भाव मिला रहा हूँ-

**सचियापुर बज्जू सही, सोढ़ो कुळ सादूळ।
शिक्षक कवि संग्राम सिंह, अदब धाट अनूकूल॥**

-पृथ्वी राज रतनू

एफ.सी.आर्ट. गोदाम रोड, इंदिरा कॉलोनी, बीकानेर
नूवो परभात/असद अली असद/कलासन
प्रकाशन, माल गोदाम रोड, अलख सागर,
बीकानेर/संस्करण 2012/पृष्ठ सं. 80/
मूल्य ₹ 100.00

'नूवो परभात' उर्दू की चर्चित महिला कथाकारों की कथाओं का राजस्थानी भाषा में अनुवाद है। मूलतः सृजन से भी अधिक कठिन कार्य अनुवाद है और अनुवाद भी उर्दू से राजस्थानी में तो ओर भी अधिक श्रम साध्य कार्य है। उर्दू लिपि और भाषा का राजस्थानी से कहीं भी तालमेल न होने के कारण उसका राजस्थानी में अनुवाद का कार्य असद अली असद ने कर एक स्तुत्य कार्य किया है। जिन्होंने इन चर्चित कहानियों को उर्दू में पढ़ा है वे राजस्थानी अनुवाद पढ़कर निश्चय ही निर्णय कर पाएंगे कि अनुवादक ने अनुवाद के क्षेत्र में पर्याप्त न्याय किया है।

कहानी दो गज जमीन, मानवीय मूल्यों पर आधारित है जबकि उधड़योड़ो फ्राक प्रीत एवं सुन्दरता पर आधारित है। चोरी कहानी में सड़क का जीवन जीने वाली भिखारिन चाहकर भी सराफत का जीवन नहीं जी सकती।

दिनूंगे री उडीक एवं पीड़ रो बंधण कहानियां प्रेम एवं प्रेम की असफलता पर आधारित है वहीं काली धरती प्रतीक स्वरूप कहानी है।

इस अनुवाद पुस्तक में उर्दू की कथाकार डॉ. सखत खान, डॉ. जीनत कैफी, डॉ. फरखन्दा जमीर, आरिफ सुल्तान, नजमा बरकाती, शहनाज फातमा, सुल्लताना बानौ, फिरदौस, डॉ. उमर जहां, फरजाना खान, रौशन अख्तर, इन्दिरा शबनम इन्दु, डॉ. सादेमा नवाब सहर, शान्ताबाली, मुजिबुनिशा, डॉ. हुस्नआरा, शमशाद जलील शाद और जेबा जीनत जैसी प्रसिद्धि प्राप्त रचनाकारों को सम्मिलित करने का निर्णय अपने आप में स्तुत्य है।

इन कथाकारों की रचनाओं में अलग-अलग विषयों का चयन कर उनका अनुवाद करना अपने आप में जोखिम भरा कार्य है। पूरी पुस्तक में राजस्थानी मानक भाषा में कहानियों

को सरसता पूर्वक परोसा गया है।

आकर्षक आवरण। बढ़िया कागज। शुद्ध छपाई से पुस्तक और भी अधिक सुन्दर बन पड़ी है। अनुवादक को बधाई।

-देवकिशन राजपुरोहित

सूर्य सदन, चम्पाखेड़ी, वाया-रेण (नागौर) 341514
नौलि एवं उडिडयान/श्री सूरज करण
जिन्दल/वाङ्मय प्रकाशन, जयपुर/संस्करण
2013/पृष्ठ सं. 72/मूल्य ₹ 200.00

योग भारतीय ऋषि परम्परा की अदभुत देन है। पुस्तक नौलि एवं उडिडयान में लेखक ने इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए तन, मन, आत्मा को शुद्ध कर आत्मा का परमात्मा से मिलाने के लिए योग की दो गूढ़ विधियों नौलि एवं उडिडयान क्रिया करने की विधि, आवृत्ति, लाभ, सावधानियों आदि को ऋषि परम्परा को विज्ञान की कसौटी पर जांच कर औचित्य सहित विस्तृत विवरण पुस्तक में दिया गया है। पुस्तक में लिखी गई विषय सामग्री के प्रमाणीकरण के लिए लेखक ने महर्षि पतंजलि कृत अष्टांग योग, योगी स्वात्माराम कृत हठयोग प्रदीपिका, महर्षि घेरण्ड कृत घेरण्ड संहिता आदि प्राचीन कालीन योग ऋषियों एवं आधुनिक कालीन आचार्य धीरेन्द्र ब्रह्मचारी कृत योगिक सूक्ष्म व्यायाम आदि ग्रन्थों का सन्दर्भ सहित संस्कृत श्लोकों का उद्धरण देते हुए श्लोकों का हिन्दी शब्दार्थ एवं भावार्थ सहित उद्धरण दिया गया है। पुस्तक में लेखक ने अपने एवं अपने शिष्यों पर नौलि एवं उडिडयान क्रिया के अनुभवों की विज्ञान की कसौटी पर विवेचना कर पाण्डुलिपि तैयार कर प्रकाशित करायी गई है। पुस्तक की लेखनी से स्पष्ट होता है कि लेखन मौलिक एवं प्रभावी है। वर्तमान में योग के उपलब्ध साहित्य में नौलि एवं उडिडयान क्रिया में इतनी प्रभावी लेखनी में पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। इस कमी को पुस्तक नौलि एवं उडिडयान ने पूर्ण किया है। योग की जटिल एवं गूढ़ नौलि एवं उडिडयान क्रिया को सामान्य जन की भाषा में लेखन से पुस्तक पढ़ने में सुरुचीपूर्ण बनी है। लेखक का प्रयास सराहनीय है। पुस्तक का सम्पादन, प्रकाशन एवं मुद्रण भी अच्छा है। पुस्तक माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के लिए उपयोगी है।

-विनोद जोशी, योग साधक

6 डी-97 जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविर में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।
-वरिष्ठ सम्पादक

प्लास्टिक वेस्ट से बनाया ईंधन

‘उड़ीसा के एक तकनीकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की उपलब्धि, लो-टेम्परेचर प्रक्रिया से प्लास्टिक वेस्ट को लिक्विड-फ्यूल में बदला।’ वैश्विक स्तर पर ईंधन की लगातार बढ़ती मांग और कमी की भरपाई करना काफी मुश्किल हो गया है। ऐसे में भारतीय वैज्ञानिकों ने एक अभूतपूर्व खोज की है।

उड़ीसा की सेंट्रियम यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट के रसायनज्ञ अच्युत कुमार पांडा और नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, उड़ीसा के केमिकल इंजीनियर रघुवंश कुमार सिंह ने मिलकर साधारण पॉलिमर व लो-डेंसिटी पॉलिथीन (एलडीपीई) को लिक्विड फ्यूल में बदला है, जिसे कारों आदि के ईंधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। कैओलीन-कैटेलिस्ट (एलुमीनियम और सिलिका से बना एक क्ले मिनरल) पर प्लास्टिक वेस्ट को 400 से 500 डिग्री तापमान पर गर्म कर पॉलिमर चैन को तोड़ा जाता है। इस प्रक्रिया से कार्बन रिज लिक्विड रिलीज होता है, जो काफी हद तक पेट्रोकेमिकल ईंधनों जैसा होता है।

कमर्शियल प्लांट भी लगाया जा सकता है। लो-डेंसिटी पॉलिथीन एलडीपीई का उपयोग प्लास्टिक कंटेनर, लेब के उपकरण, कंप्यूटर के भाग और प्लास्टिक बैग आदि बनाने में किया जाता है। वर्तमान में पॉलिथीन के ये उत्पाद बड़े पैमाने पर उपयोग में लाए जाते हैं और बेकार होने पर फैंक दिए जाते हैं। इस पॉलिथीन का विघटन नहीं होता, इसलिए ये पर्यावरण प्रदूषक बन जाते हैं। प्लास्टिक वेस्ट को री-साइकिल कर दुबारा उपयोग भी किया जा रहा है लेकिन वह काफी नहीं है। ऐसी स्थिति में इन दो भारतीय वैज्ञानिकों की यह खोज अत्यन्त उपयोगी साबित हो सकती है। इस तकनीक का इस्तेमाल कर प्लास्टिक वेस्ट से ईंधन बनाने का कमर्शियल प्लांट भी बनाया जा सकता है।

भारतीय वैज्ञानिकों की यह उपलब्धि हाल ही में ‘इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एन्वायरनमेंट एंड वेस्ट मैनेजमेंट’ नाम की एक नामी अंतरराष्ट्रीय जर्नल में छपी गई है। अब देखना यह है कि ईंधन की बढ़ती मांग की आपूर्ति करने में यह तकनीक कितनी सफल रहती है? (नवज्योति 30.1.14 पृ. 1, 7)

स्मार्टफोन से चलाएं टीवी, फ्रिज और ऐसी

स्मार्टफोन का बढ़ता संसार तकनीक को हमारी जिंदगी के और करीब ला रहा है। इसी का नतीजा है कि कंपनियां अब ऐसा एप्लिकेशन बनाने में लगी हैं जो पूरे घर पर नजर रख सकेगा।

क्लाउड कंप्यूटिंग के जरिये इस स्मार्टफोन एप से टीवी, फ्रिज, ऐसी और स्मार्ट एलईडी को नियंत्रित किया जा सकेगा। इसकी घोषणा लास वेगास में सात जनवरी से शुरू हो रहे कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स शो (सीईएस) 2014 से ठीक पहले की गई है।

इस कड़ी में सबसे पहले दक्षिण कोरियाई टेक्नोलॉजी कंपनी सैमसंग ने कदम उठाया है। सैमसंग ने इसके लिए स्मार्ट होम सॉफ्टवेयर प्रोटोकाल

लास वेगास में रविवार को मीडिया के सामने इंटरनेट से जुड़ने वाले दूधब्रश को पेश किया गया।

सहूलियत : • क्लाउड कंप्यूटिंग के जरिये टीवी, फ्रिज, ऐसी और स्मार्ट एलईडी होंगे नियंत्रित • पूरा तंत्र आपकी आवाज से भी संचालित हो सकेगा • होम व्यू से उपकरणों में लगे कैमरा से कहीं से भी अपने घर की निगरानी होगी मुमकिन

सीईएस 2013 के अनूठे प्रयोग : इससे पहले साल 2013 के सीईएस में सिस्को, एलजी, बॉश और एबीबी घरेलू उपकरणों की ऐसी शृंखला पेश की थी जिन्हें इंटरनेट के लिए नियंत्रित किया जा सकता था। इसमें एलजी और बॉश ने टीवी, वैक्यूम क्लीनर और वॉशिंग मशीन की रेंज उतारी थी। सिस्को इस समूह में इंटरनेट सेवा प्रदान कंपनी थी।

(एसएचपी) विकसित किया है। इस सुविधा के तहत घर के उपकरणों को नियंत्रित करने के लिए स्मार्टफोन या टीवी में एक एप्लिकेशन डालना होगा। यह पूरा तंत्र आवाज से भी संचालित किया जा सकेगा। तो रात को सोने से पहले अगर यूजर स्मार्ट टीवी के रिमोट कंट्रोल से ‘गुड नाइट’ कहेगा तो टीवी बंद हो जाएगा और बल्ब की रोशनी मद्धम हो जाएगी। इस सिस्टम का एक और हिस्सा ‘होम व्यू’ है। इसके जरिये यूजर उपकरणों में लगे कैमरे से कहीं से भी अपने घर की निगरानी कर सकता है। सैमसंग ने दावा किया है कि इस सिस्टम को वह इस साल पेश कर देगी।

(हिन्दुस्तान 7.1.14 पृ. 16)

मृत आंखों की कोशिकाओं से अंधेपन का इलाज संभव

मृत आंखों की कोशिकाओं से अंधेपन का इलाज किया जा सकता है। यह प्रयोग चूहों पर सफल हो चुका है। इनसान पर इसे आने वाले तीन साल में आजमाने की योजना है।

स्टेम सेल्स ट्रांसलेशनल मेडिसिन में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक मृत व्यक्ति की ओर से दान की गई कॉर्निया से दृष्टिहीनों को नई रोशनी आज भी दी जाती है। लेकिन इस बार प्रयोग अलग था। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन के नेत्र विज्ञान संस्थान की टीम ने आंखों के पीछे से विशेष तरह की मुलर ग्लिअल कोशिकाओं को निकाला। ये कोशिकाएं वयस्क स्टेम सेल होती हैं, जो आंखों के पीछे की कोशिकाओं में बदलती रहती हैं।

लैब में इन कोशिकाओं को रसायन के जरिए रॉड सेल्स में बदला गया। रॉड सेल्स रेटिना पर पड़ने वाले प्रकाश की पहचान करती हैं। इन कोशिकाओं को पूरी तरह से अंधे चूहों की आंखों के पीछे डाला गया। बाद में चूहों की आंखों की रोशनी कुछ हद तक लौट आई।

प्रयोग के बाद शोधकर्ताओं ने ब्रेन स्कैन के जरिए चूहों के मस्तिष्क की जांच की। उन्होंने पाया कि आंख और मस्तिष्क के बीच के 50 फीसदी सिग्नल ठीक हो गए। शोधकर्ता प्रोफेसर एस्ट्रिड लिंब के मुताबिक इस तकनीक से मिली रोशनी के जरिए व्यक्ति किताबें नहीं पढ़ सकेगा, लेकिन यह देख सकेगा कि कमरे में मेज कहां रखी है। (हिन्दुस्तान 3.2.14 पृ. 16)

हमारे भामाशाह



विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। प्रति वर्ष 28 जून, भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें।

-वरिष्ठ संपादक

जयपुर

रा.मा.वि., डूंगरी खुर्द सांभरलेक को विद्यालय विकास समिति अध्यक्ष श्री मंगल चन्द जाट द्वारा नव प्रवेश लेने वाले (20 छात्र-छात्राओं) को प्रोत्साहन राशि के रूप में 10,000 रुपये।

जालोर

रा.उ.मा.वि., डूंगरी (सी) तह. चितलवाना में श्रीमती चूनी देवी द्वारा 1,51,000 रुपये लागत से एक प्याऊ का निर्माण करवाया गया। **रा.प्रा.वि., आजोदर प.स. रानीवाड़ा** को श्री पहाड़ सिंह झाला से H.P. गैस कनेक्शन, भट्टी और अग्नि चमन यंत्र लागत 11,001 रुपये, श्री रंगा राम से दो अलमारी लागत 7,301 रुपये, श्री कालू राम घांसी से स्टील प्लेट (38 नग) लागत 1,501 रुपये, श्री चौपाराम से 26 प्लेट स्टील लागत 1,821 रुपये, श्री कान्तिलाल सोलंकी से बर्तन सप्रेम भेंट लागत 2,100 रुपये, श्री बाबुलाल और लखमाराम चौधरी से 551 रुपये के बर्तन भेंट, श्री मन्हा राम माली से लोहे का पिंजरा रसद सामग्री रखने हेतु लागत 1,151 रुपये, श्री जयंतिलाल खण्डेलवाल से एक झंडा पोल 20 फुट लम्बा लागत 775 रुपये, श्री धर्मदान चारण से दो दिवार घड़ी लागत 251 रुपये, श्री जयंतिलाल आचार्य से तीन ताला चाबी लागत 151 रुपये।

जोधपुर

रा.उ.मा.वि., लोहावट को श्री गुलाबराम मेघवाल से 15 छत पंखे (उषा कम्पनी) लागत 19,125 रुपये, श्री प्रेमराम मेघवाल से 10 छत पंखे (उषा कम्पनी) लागत 12,750 रुपये। **रा.मा.वि., सरेचाँ** को श्रीमती माया जोशी से 10 टेबल और दस बेन्चे लागत 25,000 रुपये। **रा.मा.वि., मालकोसनी तह. बिलाड़ा** को श्री खीचाराम ताडी से ठण्डे

पानी की मशीन लागत 20,000 रुपये, श्री हापूराम जी हायल से 13 टेबल-स्टूल सैट लागत 18,200 रुपये, श्री रामलाल जी तांडी से 13 खेल-स्टूल सैट लागत 18,200 रुपये, श्री जितेन्द्र गौड से टेबल स्टूल 11 सैट लागत 11,000 रुपये, शंकर राम जी राड़ द्वारा पुरस्कार 2,000 रुपये। **रा.मा.वि., जैतीवास** में भंवर सिंह पुरोहित द्वारा 4,00,000 रुपये की लागत से एक कमरा 22×22 मय बरामदा का निर्माण करवाया गया। सरस्वती मंदिर के निर्माण में निम्न लिखित भामाशाह का सहयोग रहा। श्री भीजा राम सुथार से 7,100 रुपये, श्री बुधमल रेवासी से 5,100 रुपये, श्री अन्नाराम सीखी (सरपंच) से 5100 रुपये, श्री फैनाराम वर्मा से 2,100 रुपये, श्री अमरा राम मेघवाल से 1,100 रुपये, श्री मदन सिंह शेखावत से 1,100 रुपये प्राप्त हुए। श्री जोगाराम प्रजापत से मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु (संगमरमर की मूर्ति) 11,000 रुपये, श्री जीवन मल मालवीय लोहार से मन्दिर हेतु 3,100 रुपये, ग्रामोदय शिक्षण संस्थान बिलाड़ा द्वारा 10 छत पंखा लागत 12,000 रुपये, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर शाखा बिलाड़ा से 10 छत पंखे लागत 15,000 रुपये, श्री शान्तिलाल जैन से स्टील सोफा, कुर्सी लागत 6,000 रुपये, श्री धन सिंह भाटी से एक कुर्सी लागत 250 रुपये, श्री गजानन्द वैष्णव से दीवार घड़ी लागत 1000 रुपये। **रा.उ.प्रा.वि., बांजड़ा प.स. बिलाड़ा** में श्री सोहनराम मेघवाल द्वारा 2,20,305 रुपये की लागत से एक कम्प्यूटर हॉल मय बरामदा का निर्माण करवाया गया।

झुन्डू

रा.मा.वि., डूमरा में श्री फूलचन्द जांगिड़ द्वारा 5,36,393 रुपये की लागत से दो कक्षा-कक्षों का निर्माण करवाया गया। श्री गिरधारी लाल सुरोलिया द्वारा 1,51,000 रुपये की लागत से सरस्वती मंदिर का निर्माण करवाया

गया। श्री श्रीराम सुरोलिया ट्यूबवेल मय टंकी का निर्माण लागत 1,11,000 रुपये, श्री प्रहलाद राय अग्रवाल से वाटर कूलर एक लागत 27,500 रुपये, श्री गिरधारी लाल सुरोलिया द्वारा निर्धन छात्र-छात्राओं को विद्यालय गणवेश 120 ड्रेस लागत 50,000 रुपये, श्री मोहन लाल महला द्वारा मुख्य द्वार का गेट लागत 24,500 रुपये, श्री प्रकाश गढ़वाल से दो अलमारी लागत 15,000 रुपये, श्री गिरधारी लाल सुरोलिया से एक हारमोनियम व डोलक लागत 5,000 रुपये, श्री प्रहलाद राय अग्रवाल से एक कम्प्यूटर लागत 23,500 रुपये, श्री कालूराम जांगिड़ से 50 स्टील गिलास लागत 500 रुपये, श्री धन्नाराम से एक टेबल लकड़ी की पुस्तकालय के लिए (8×4) लागत 10,000 रुपये, श्रीमती कान्ता भार्गव से एक टेबल लकड़ी की पुस्तकालय के लिए (8×4) लागत 10,000 रुपये सर्वश्री प्रदीप कुमार शर्मा, मुकेश कुमार शर्मा व नरोत्तम शर्मा द्वारा प्रधानाध्यापक कक्ष की सजावट मय फर्नीचर लागत 1,00,000 रुपये। **रा.मा.वि., अरड़वता** को श्री रतीराम (च.श्र.क.) से एक हारमोनियम विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि., हेतमसर** को श्री रामदेव सिंह द्वारा अतिथि सम्मान के लिए शॉल लागत 2,795 रुपये, श्री शिशुपाल सिंह द्वारा अतिथि सम्मान के लिए शॉल लागत 5,100 रुपये, विनोद शर्मा द्वारा अतिथियों का नाश्ता 1,100 रुपये, श्री गिरधारी लाल स्वामी द्वारा अतिथियों का स्मृति चिह्न 2000 रुपये, सत्य प्रकाश कस्वाँ द्वारा मिठाई व्यवस्था 1,100 रुपये, श्री संतोष मितल द्वारा विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न 4000 रुपये, गुडलक क्लिनिक झुन्डू द्वारा जिला स्तरीय व राज्य स्तरीय साफ्ट बाल खिलाड़ियों के दल पर व्यय वहन 11,000 रुपये, मुरलीधर शर्मा द्वारा विद्यालयों के छात्रों के वार्षिक उत्सव पर पारितोषिक व मिठाई व्यय 2,100 रुपये। □

इस माह 30 मार्च 2014 को हम राजस्थान दिवस मनाएंगे। राजस्थान का इतिहास शौर्य एवं वीरता का अनुपम उदाहरण रहा है। यहाँ का कण-कण कोई न कोई गाथा लिए है। शक्ति और भक्ति का प्रदेश है राजस्थान। एक हाथ में माला और एक हाथ में भाला लिए भक्ति एवं शक्ति के बहुत से उदाहरण राजस्थान में देखने को मिलते हैं। मीरा, पन्नाधाय, वीर दुर्गादास, महाराणा प्रताप जैसे पात्र राजस्थान को गौरव प्रदान करते हैं। इन पर हर किसी को गर्व होना स्वाभाविक है। राजस्थान में पेयजल, खेती और आवागमन की समस्याएं कभी रही होगी, लेकिन आज का राजस्थान प्रगतिशील राजस्थान है। कृषि, पशुपालन, औद्योगिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों में राजस्थान सतत आगे बढ़ रहा है। जयपुर में मेट्रो ट्रेन का आगमन बहुत बड़ी उपलब्धि है। रिफाइनरी की स्थापना से राज्य के औद्योगिक विकास में एक तरह से क्रांति आ जायेगी। आवागमन के साधनों और सड़कों की उपलब्धता ने राज्य को एक कौने को दूसरे कौने तक जोड़ने में कोई कमी नहीं रखी है। औद्योगिक एवं व्यावसायिक विकास के चलते अब राजस्थान के लोगों को राज्य में ही अच्छे व प्रतिष्ठापूर्ण रोजगार मिलने लगे हैं। देश के अन्य राज्यों से ही नहीं अपितु विश्व के भिन्न-भिन्न देशों के उद्यमी राजस्थान में आकर कारोबार करने के लिए आगे आ रहे हैं। राजस्थान के प्रति लोगों का यह आकर्षण हमें हर्ष व गौरव प्रदान करता है।

राजस्थान की कला, संस्कृति, शिल्प एवं शानदार परम्पराओं को याद करें तो मन रौमांचित हो उठता है। थार के मरूस्थल रेत के टीलों में हरित क्रान्ति ने जमीन को हरीतिमा से निहाल कर दिया है। इन्दिरा गाँधी नहर एवं दूधबेलों द्वारा सिंचाई ने यह करिश्मा किया है। हमारे पूर्वजों ने धोरों के बीच जीवन जीते हुए कदाचित शायद ही कभी यह सोचा होगा कि रेत के समन्दर के बीच कभी ऐसा अकल्पनीय कार्य भी होगा। थार मरूस्थल में स्थित श्री गंगानगर जिला राज्य के अन्न प्रदेश के रूप में जाना जाता है इसे अन्न का कटोरा भी कहते हैं।

राजस्थान की पावन धरा पर कला और संस्कृति की अद्भुत जुगलबंदी देखने को मिलती है। संगीत की कर्ण प्रिय साज व स्वर लहरियों में यहाँ का जनमानस झूमता, नाचता, गाता गुनगुनाता है। बड़े जीवट के धनी होते हैं राजस्थान के निवासी। अभाव में भाव शक्ति के

सहारे वे विजय प्राप्त करते हैं। राजस्थान की भाषा एवं साहित्य बहुत सम्पन्न है। राजस्थानी भाषा बड़ी मधुर है। भाषा, पहनावे एवं पूर्वजों द्वारा स्थापित परम्पराओं का अनुगामी राजस्थान का निवासी बनता है। यहाँ का चित्ताकर्षक शिल्प एवं स्थापत्य बेजोड़ है जो पर्यटकों को मरूधरा की ओर आकृष्ट करता है। अरावली की ऊँची पर्वत मालाएं, आबू की नक्की झील, भरतपुर का पक्षी अभ्यारण्य, सवाई माधोपुर का टाइगर अभ्यारण, सरिस्का के घने जंगल सब पर्यटकों को आमंत्रण देते नजर आते हैं।

राजस्थान में स्थित किले तथा मन्दिर-मस्जिद वास्तु एवं स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं। जैसलमेर में 13 लाख वर्ष पुराने बुड फॉसिल्स मिलते हैं। पशु-पक्षियों की बात करें तो 400 किस्म के देशी-विदेशी जानवर राजस्थान में देखने को मिलते हैं। ऐसी विचित्र व हैरत अंगेज चीजों के कारण राजस्थान सदैव दर्शनीय रहा है।

प्रतिध्वनि

जय-जय राजस्थान

भले ही राजस्थान में पानी के समन्दर नहीं हो लेकिन रेत के समन्दर अपनी छटा बिखरते नजर आते हैं। पूर्णिमा की रात में रेत के धोरों पर बैठकर आसमान को निहारना तथा टीले पर लेटने से जो सुख व सुकून मिलता है, उसे शब्दों में व्यक्त ही नहीं किया जा सकता। ये बहुरंगी छटा बिखरते रेत के धोरे रेगिस्तान में निखलिस्तान का अहसास कराते हैं।

राजस्थान के बीकानेर एवं शेखावटी क्षेत्र में स्थित हवेलियाँ और उनमें हुआ सोने की चित्रकारी का काम नक्काशी, जालियाँ, झरोखे समृद्ध वास्तुकला एवं शिल्प का विवेचन करते हैं। यहाँ के शहरों की बसावट बहुत सुन्दर है।

राजस्थान तीज त्यौहारों का प्रदेश है। यहाँ हर दिन कोई न कोई उत्सव-पर्व लिए हैं। 'पूजन दो गणगौर' गीत के शब्द सहज ही में कानों में गूँजने लगते हैं। घूमर एवं पणिहारी जैसे गीत कानों में मिश्री घोलने में समर्थ है। मायड़ भौम के सपूत-मायड़ भाषा के महान हिमायती-रमण ने आवे की संगीतमय प्रस्तुति मुद्दों में जान फूँक देने

वाली है। जरा गाकर और यदि गा न सके तो सुनकर ही देखिए। आपको लगेगा कि आपका राज्य क्या है। इसके अलग-अलग भागों की क्या विशेषताएँ हैं और आपके राज्य के प्रति आपका क्या कर्तव्य है।

राजस्थान का इतिहास वीरों और सूरों का इतिहास है। यह भारत की गौरव भूमि है। सचमुच देश की शान है राजस्थान राज्य में ऐसा व्यक्ति शायद ही कोई हो जो यह नहीं जानता की अतुलित बल धारी वीरों ने संकट के समय देश की रक्षा के लिए खून की नदियाँ बहा दी। राजस्थान की धरती का कण-कण वीरों के वरदानी रक्त से सिंचित है जो इसके प्राचीन गौरव व शानदार विरासत को याद दिलाता है। प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टाड ने कहा है- "राजस्थान में कोई छोटा सा भी राज्य ऐसा नहीं है जिसमें यूरोप की थर्मोपोली जैसी रण भूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले जहाँ लियोनिडास जैसा वीर पुरुष पैदा नहीं हुआ हो।" इससे राजस्थान की वीरता स्पष्ट है।

राजस्थान साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी बड़ा सम्पन्न है। पृथ्वीराज रासो, खुमाण रासो, बीसलदेव रासो जैसी वीर रस प्रधान रचनाएँ इसी मरु प्रदेश में हुई हैं। महाकवि बिहारी ने सतसई और पद्माकर ने जगत विनोद सरीखी कालजयी रचनाएँ प्रदान की। आज भी राजस्थान में सराहनीय साहित्य सृजन हो रहा है। शिविरा पत्रिका को ही लें, पूरे देश में राजस्थान एक मात्र ऐसा राज्य है जहाँ से यह पत्रिका एवं अन्य प्रकाशन स्कूलों एवं शिक्षकों के लिए हो रहे हैं।

राजस्थान दिवस 30 मार्च, 2014 के अवसर पर हमें अपने इतिहास एवं योग्यता को स्मरण कर प्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए काम करने का संकल्प लेना चाहिए। शिक्षा विभाग एवं शिक्षकों की भूमिका मातृ विभाग एवं माँ जैसी है। शिक्षकों को पूरी क्षमता एवं योग्यता के साथ काम करके विभाग को सशक्त एवं कारगर बनाना चाहिए जिससे शिक्षा की अविरल धारा प्रवाहित होकर राष्ट्र व समाज का हित कर सके। राजस्थान दिवस के अवसर पर हमें जय-जय राजस्थान संकल्प लेना चाहिए।

'जय राजस्थान, जय जय राजस्थान'

—ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

शिविरा, मार्च-2014 चित्र समाचार

बीकानेर



राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में बसन्त पंचमी के दिन गागी पुरस्कार वितरण हुआ। चित्र में (बाएं) मुख्य अतिथि सुश्री सिद्धि कुमारी, माननीया विधायक, बीकानेर (पूर्व) के साथ अतिरिक्त निदेशक (मा.) श्री पी.सी. मावर, जिशिश (मा.) श्री अख्तर अली, शाला प्राचार्या श्रीमती रक्षासिंह एवं पुरस्कृत बालिकाएं। (दाएं) विद्यालय में निर्मित कक्ष का उद्घाटन करती माननीया विधायक महोदया।

पाली



श्री सुल्तान रा.उ.मा. विद्यालय, पुलिस लाइन में संचालित स्टुडेन्ट पुलिस कैडेट योजना के अन्तर्गत सड़क सुरक्षा सप्ताह के दौरान रैली निकाली गई।

सीकर



युवा जनकल्याण समिति, खाचरियावास के तत्वावधान में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान करते स्काउट शिक्षक श्री प्रभुदयाल कुमावत।

चूरु



राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बालरासर आधुणा में रासेयो+2 स्तर विशेष शिविर का शुभारम्भ करते माननीय अतिथि एवं शिक्षक (दाएं) विद्यालय परिसर में श्रमदान करते रासेयो स्वयंसेवक छात्र।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर



चूरु की हवेलियां

राजस्थान में चूरु अंचल की भव्य हवेलियां न केवल बेजोड़ नवापारक कला के अद्भुत समूह हैं अपितु इनमें बसे सरलाभिराम भित्ति चित्रों से अपने में राजस्थान की परम्परागत एवं सांस्कृतिक विशेषताओं की कैद कर रखा है। इस हवेलियों की निर्माण शैली एक तबक कलाकारों की तकलीकी परिपूर्णता की दर्शाती है वहीं इनके भाविकों की राजस्थानी सांस्कृति के प्रति कभाव तथा ककारभक अभिकारियों की सुसम्पन्नता से केबक कबती है। ये हवेलियां हमारे प्यारे राजस्थान की दीर भीरवा वंशुधरा की अलभोल धनीह्व हैं।